अथ अर्कप्रकाश की अनुक्रमणिका.



विषय	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ
टीकाकार मङ्गलाचरण	१	लघुगुण	११
ग्रन्थकारका ,,	,	ऊष्ण और शीतवीर्य	,,
मन्दोदरी का बचन	२	जङ्गल और अनूप के गुण	,,
रावण का उत्तर	३	दक्षिण उत्तरके उत्पन्न द्रव्य	१२
पार्वती का उत्तर	,,	अन्तर्वेदी औषधि	,,
रावण का वाक्य	४	रस के विपाक	,,
दिव्यौषधीनांप्रकल्पः	५	अम्ल रसके गुण	१३
औषधियों के भेद	,,	कटुपाकी रस	,,
लतादि के लक्षण	,,	द्रव्यों के प्रभाव	,,
औषधियो के पञ्चाङ्ग	६	द्रव्य के कल्प	१४
द्रव्य की निरुक्ति	७	प्रयोग करने की बिधि	,
रसों के नाम	,,	कल्कादि गुणोंमें न्यूनाधिक	,,
मधुर रस के गुण	,,	अर्क प्रयोग	१५
अम्लरस के ,,	८	मृतिका बनाने की विधि	,,
लवणरस के ,,	,	यन्त्र बनाने की विधि	१६
तिक्तरस के ,,	,,	जीर्णास्थिमृत्तिकाकी बिधि	१८
कटुरस के ,,	६	उत्तम अर्क के लक्षण	२१
कषायरस के ,,	,,	सुगंधितअर्क सेवनकीआज्ञा	,,
गुणोंका वर्णन	१०	दुर्गंधित अर्क निषेध	२२
गुरुगुण	,,	छः अग्नियों के नाम	,,
स्निग्धगुण	,,	धूमाग्नि के लक्षण	२३
रूक्षगुण	,,	दीपाग्नि के लक्षण	,,

विषय.		पृष्ठ.
तुम्बरु के अर्क के गुण		५८
वंशलोचनके	,,	,,
समुद्रफेन	,,	,,
जीवक के	,,	,,
ऋषभक के	,,	,,
मेदाके	,,	५८
महामेदाके	,,	५९
काकोलीके	,,	,,
क्षीरकाकोलीके	,,	,,
ऋद्धि के	,,	,,
वृद्धि के	,,	,,
मुलहठीके	,,	६०
जलयष्टीके	,,	,,
कम्पिल्लकके	,,	,,
अमलतास के	,,	,,
चिरायते के	,,	,,
गम्भारी के	,,	६१
मैनफल के	,,	,,
रास्ना के	,,	,,
नागदौन के	,,	,,
माचिका के	,,	,,
तजबले के	,,	६२
मालकांगनी के	,,	,,
कूठ के	,,	,,
पोहकर मूलके	,,	,,

विषय-		पृष्ठ
स्पर्शाक्षीरीके अर्क के गुण		६२
शृङ्गी के	,,	६३
कायफल के	,,	,,
भारङ्गीके	,,	,,
पाषाणभेद के	,,	,,
कुसुम के	,,	,,
धायके फूलों के	,,	६४
मजीठ के	,,	,,
लाख के	,,	,,
हल्दी के	,,	,,
वनहल्दी के	,,	,,
कपूर हल्दी के	,,	६५
दारुहल्दी के	,,	,,
रसौत के	,,	,,
बावची के	,,	,,
पँवाड के	,,	,,
अतीस के	,,	,,
लोधके	,,	६६
बृहत्पत्रा के	,,	,,
भिलाय के	,,	,,
गिलोयके	,,	,,
बेल के	,,	,,
गंभारी के	,,	६७
पान के	,,	,,
पाटल के	,,	,,

विषय.		पृष्ठ.
अरणी के अर्क के गुण		६७
स्योनाक के	,,	६७
शालिपर्णी के	,,	६७
पृष्ठपर्णी के	,,	६८
कटेरी के	,,	६८
गोखरू के	,,	६८
जीवन्ती के	,,	६८
मुद्गपर्णी के	,,	६९
माषपर्णी के	,,	६९
अरण्ड के	,,	६९
हाऊवेर के	,,	६९
मन्दार के	,,	६९
आक के	,,	६९
वज्री के	,,	७०
सातला के	,,	७०
कलिहारी के	,,	७०
कनेर के	,,	७०
चाण्डाल के	,,	७१
धतूरे के	,,	७१
अडूसे के	,,	७१
पित्तपापडे के	,,	७१
नीम के	,,	७१
बकायने के	,,	७२
पारिभद्र के	,,	७२
कचनार के	,,	७२

विषय.		पृष्ठ.
सफेद कचनार के अर्क के गुण		७२
सहजने के	,,	७२
मधुसहजने के	,,	७३
सहजने के	,,	७३
कोयल के	,,	७३
सिन्दुवार के	,,	७३
निर्गुण्डी के	,,	७३
कुटज के	,,	७४
करञ्जा के	,,	७४
घृतकरञ्ज के	,,	७४
करञ्जी के	,,	७४
उचटा के	,,	७५
गुञ्जा के	,,	७५
कौंच के	,,	७५
मांसरोहिणी के	,,	७५
चिल्ह के	,,	७५
कटेरी के	,,	७५
वेत के	,,	७५
जलवेतस के	,,	७६
समुद्रफल के	,,	७६
अंकोल के	,,	७६
बला के	,,	७६
महाबला के	,,	७७
नागबला के	,,	,,
लक्ष्मणा के	,,	,,

विषय.		पृष्ट.
स्वर्णवल्ली के अर्क के गुण		७१
कपास के	,,	७७
बांस के	,,	७७
नल के	,,	७८
मुलहटी के	,,	७८
सफेद निसोथ के	,,	,,
शरपुङ्खा के	,,	,,
जवास के	,,	,,
गोरखमुण्डी के	,,	७६
ओंगा के	,,	,,
लाल ओंगा के	,,	,,
तालमखाने के	,,	,,
अस्थिसंहार के	,,	,,
लाल सोंठ के	,,	८०
प्रसारिणी के	,,	८०
ग्वारपाठे के	,,	८०
सफेदसांठ के	,,	८०
सारिवा के	,,	,,
भांगरे के	,,	,,
शणपुष्पी के	,,	८१
त्रायमाणा के	,,	८१
मूर्वा के	,,	,,
मकोय के	,,	,,
काकनासा के	,,	,,
काकजङ्घा के	,,	८२

विषय.		पृष्ट.
नागपुष्पी के अर्क के गुण		८२
मेढासिंगी के	,,	,,
हंसदीप के	,,	,,
सोमवल्ली के	,,	,,
आकाशवेल के	,,	८२
पातालगरुडके	,,	८२
तुलसी के	,,	,,
वटपत्री के	,,	८३
हिङ्गपत्री के	,,	,,
वंशपत्री के	,,	८४
मत्स्याक्षी के	,,	,,
सर्पाक्षी के	,,	८४
शङ्खपुष्पी के	,,	,,
अर्कपुष्पी के	,,	,,
लज्जालू के	,,	८४
अलम्बुषा के	,,	८५
दुद्धी के	,,	,,
भूंआवला के	,,	,,
ब्राह्मी के	,,	,,
ब्रह्ममण्डू के	,,	,,
द्रोणपुष्पी के	,,	८६
सूर्य्यमुखी के	,,	८६
वन्ध्याकर्कोटकी के अर्क के गुण		८६
मार्कण्डिका के अर्क के गुण		८६

विषय.	पृष्ठ.
देवदालीके अर्क के गुण	८६
धतुरेके ,,	८७
गोभीके ,,	८७
नागकेशरके ,,	८७
वेल्लन्तरके ,,	८७
नकछिकनीके ,,	८७
कुकुन्दरके ,,	८७
सुदर्शनके ,,	८८
शतपत्रके ,	८८
बड़ी इलायचीके ,,	८८
छोटी इलायचीके ,,	८८
केंवडेके ,,	८६
षड्सके ,	८९
उन्मत्तपंचक	९०
उन्मत्तपंचकके गुण	९०
त्रिसुगन्ध	९०
त्रिसुगन्धके अर्कके गुण	,
चातुर्जातक और उसके-अर्कके गुण	९१
त्रिफला	९१
त्रिफलाके अर्कके गुण	९१
त्रिकुटा	,,
त्रिकुटाके अर्कके गुण	.

विषय.	पृष्ठ
चतुरूषणके अर्क के गुण	९२
पंचकोलके अर्क के गुण	९२
षडूषणके ,,	९२
चतुर्बीजके ,,	९२
अष्टवर्गके ,,	९३
बृहत्पंचमूलके ,,	९३
लघुपंचमूलके ,,	९३
दसमूलके ,,	९४
जीवनीय गण	९४
जीवनीय गणका अर्क	९४
सुगन्ध गण	९४
सुगन्ध गणके अर्कका गुण	९५
वीरण	९५
वीरणद्रव्योके अर्कका गुण	९६
दुग्धकन्द गण	९६
दुग्धकन्द गणके अर्कके गुण	९६
दन्ती आदिके ,,	९७
बडके फलोके ,,	९७
पीपलके फलोके ,,	९७
आमकी गुठलीके अर्कके गुण	,,
प्रसवमेंसुखदायक ,,	९८
क्षीरवृक्षोंके ,,	९८
पुष्पोके ,,	९९
विषोके ,,	९९

विषय.	पृष्ट.
शालिधान्योंके अर्कके गुण	१००
शिम्बीधान्योंके ,,	१०१
तैलधान्यो के ,,	१०२
मधुजाति नाम	१०२
ईख की जाति	१०२
ईख के विकार	१०३
अम्लवर्ग के अर्क के गुण	१०४
तुषधान्यो का अर्क	१०६
तुषधान्यो के अर्क के गुण	८७
जांगलपशुओ का अर्क	,,
बिलेशयो के मांसका अर्क	१०८
गुहाशयो के ,,	,,
पर्णमृगोके ,,	,,
विष्किर जीवो के ,,	१०६
प्रतुद जीवों के ,,	१०६
प्रसरोजीवो के मांस का अर्क	१०६
ग्राम्यपशुओं का अर्क	११०
कलेचर जीवो का ,,	११०
सब जीवो का ,,	११०
कोशस्थितो ६ अर्क के गुण	१११
पादि जीवोंके ,,	१११
नमत्स्योके मांसार्कका गुण	११२
मनुष्यके मांसर्क के गुण	११२
अण्डों के अर्क ,,	११२
प्रत्येक ऋतु के योग्य अर्क	११३
ज्वरस्तम्भन प्रयोग	११४
शीतज्वर पर प्रयोग	,,
शीतज्वर पर अन्य प्रयोग	,
विषमज्वर परप्रयोग	११५
सन्निपात नाशक अर्क	,,
आमातिसारनाश ,,	११५
पक्कातिसारनाशक ,	११५
रक्तातिसारनाशक ,,	११६
प्रवाहिकाके ऊपर ,	११६
संग्रहणी नाशक ,,	११६
बालग्रह नाशक धूप	११६
उक्त धूप क गुण	११७
मन्दाग्निनाशक अर्क	११८
विशूचिकानाशक ,,	११८
अजीर्णनाशक ,	११८
विषमाग्निनाशक ,	११८
भारी अन्न का पचावने-वाला अर्क	११९
मन्दाग्नि नाशक अर्क	११६
जूँ और लीखोको दूर करने-वाला अर्क	११६
खटमल मच्छर आदि को	

विषय.	पृष्ठ.
दूर करनेवाला अर्क	११६
कफ और कृमि नाशक अर्क	१२०
रक्तज कृमि नाशक अर्क	,,
पाण्डुरोग नाशक ,,	१२०
कामलारोग नाशक ,,	१२१
मृद्भक्षणजन्य पाण्डुरोग पर अर्क	१२१
कुम्भकामलारोग नाशक अर्क	,,
हलीमकरोग नाशक अर्क	,,
रक्तपित्त नाशक ,,	१२२
रक्तपित्तनाशक अन्य ,,	,,
नकसीर पर ,,	,,
कण्ठदाह और पित्तकफ नाशक प्रयोग	१२३
अम्लपित्त नाशक अर्क	,,
राजयक्ष्मा नाशक ,,	,,
शोष और क्षय नाशक अर्क	,
अध्वशोष नाशक अर्क	१२४
व्रणशोथ पर ,,	,,
उर:क्षत नाशक ,,	,
कफनाशक ,,	१२५
खांसी पर ,,	१२५

विषय.	पृष्ठ.
क्षयरोग नाशक अर्क	१२५
सूखीखांसी के लिये ,,	,,
श्वासरोग पर ,,	१२६
हिक्का नाशक ,,	१२६
स्वरभङ्ग नाशक ,,	१२६
स्वर को उत्तम करने वाला अर्क	१२७
अरुचि नाशक अर्क	१२७
वमनरोग नाशक ,,	१२७
तृषारोग नाशक ,,	१२७
मुखशोष नाशक ,,	१२८
क्षय और तृषानाशक अर्क	१२८
आम नाशक ,,	१२८
तृषा और वमन पर ,,	१२८
दुर्बलमनुष्यों की तृषा दूर करनेवाला अर्क	१२६
मूर्छानाशक ,,	१२९
चैतन्यताकारक ,,	१२६
विषको दूरकरनेवाला ,,	१२६
आमनाशक ,,	१३०
तन्द्रानाशक ,,	१३०
निद्रानाषक अर्क	१३०
मदात्ययरोग नाशक ,,	१३०
अन्य अर्क १	१३१
अन्य अर्क २	१३१

विषय	पृष्ठ
अन्य अर्क ३	१३१
अन्य अर्क ४	१३१
अन्य अर्क ५	१३२
स्वेद नाशक अर्क	१३२
उन्माद नाशक ,,	,,
भूतोन्माद नाशक ,,	,,
अपस्मार नाशक ,,	१३३
वधिरत्व नाशक अर्क	१३३
बाहुशोध पर ,,	१३३
अध्मान नाशक ,,	,,
गृध्रसीरोग नाशक ,,	१३४
कोष्ठशीर्षरोग नाशक अर्क	१३४
वातरोग नाशक ,,	१३४
बातरक्त नाशक ,,	१३४
उरुस्तम्भरोग नाशक ,,	१३५
आमवात नाशक ,,	१३५
पित्तरोगो पर ,,	१३५
बमनादिरोग नाशक ,,	१३६
शूल नाशक ,,	१३६
विरेचक और पक्ति शूल नाशक अर्क	१३६
उदावर्त नाशक अर्क	१३६
आध्माननाशक ,,	१३७
हृद्रोग नाशक ,,	१३७
गुल्मरोग नाशक ,,	१३७
रक्तगुल्म नाशक अर्क	१३७
सीहा नाशक ,,	१३८
यकृच्छूल नाशक ,,	,,
शोथ नाशक ,,	,,
मूत्रकृच्छ्र नाशक ,,	,,
मूत्राघातरोग नाशक ,,	१३६
अश्मरी और शर्करारोगनाश ,,	
प्रमेहरोग नाशक अर्क	१३६
मेहरोग नाशक ,,	१४०
देहदौर्गन्ध्य नाशक ,,	१४०
स्थूलताकारक ,	१४०
कुष्टरोग नाशक ,	,,
सिध्मकुष्ठ नाशक ,	१४१
पामारोग नाशक ,,	१४१
दाद पर लेप	१४१
गलगण्ड नाशक अर्क	१४२
गण्डमाला नाशक ,,	१४२
ग्रन्थिनाशक ,,	,,
अर्बुदरोग नाशक ,,	१४३
अर्बुद नाशक अन्य लेप	१४३
श्लीपदरोग नाशक अर्क	१४३
विद्रधि नाशक ,,	१४३
विद्रधि पर अन्य ,	१४४
बातजशोथ नाशक ,,	१४४
पित्तरक्तजशोथ नाशक,,	१४४

विषय.	पृष्ठ.
कफजशोथ नाशक अर्क	१४५
व्रणशोथ ,,	,,
कठिनशोथपर प्रयोग	,,
सूजनको पकानेवाला द्रव्य	,,
भेदनके योग्य व्रण	१४६
व्रणभेदनका सुगम उपाय	,,
व्रणको शुद्धकरनेवाला अर्क	१४७
व्रणरोपण अर्क	,,
शस्त्रव्रणपर प्रयोग	,,
व्रणनाशक अर्क	१४८
अग्निदग्धव्रणपर ,,	१४९
सन्धिभग्नपर ,,	,,
मृतरक्तपर ,,	,,
कोष्ठरोगपर ,,	१५०
नाडीव्रण नाशक ,,	,,
भगन्दरनाशक	,,
उपदंश नाशक ,,	,,
शूकरोग नाशक ,,	१५१
विसर्परोग नाशक अर्क	,,
स्नायुरोग नाशक ,,	,,
विस्फोटक नाशक ,,	१५२
विस्फोटक दाह नाशक अर्क	,,
फिरङ्गरोग नाशक अर्क	,,
फिरंगपर अन्य अर्क	,,
अन्य अर्क	१५३

विषय.	पृष्ठ
मसूरिकारोगपर अर्क	१५३
अन्य अर्क	१५३
मसूरिका पर अन्य अर्क	१५४
रावण वाक्य	,,
भवितव्यताकी उत्पत्ति	,,
भवितव्याका वचन	१५७
कालका विवाह	,,
कालका विचार	१५९
शिवजीका कालको व्यथित करना	,,
कालकृत शीतला प्रार्थना	१६१
शीतलाका उत्तर	१६३
कालका वचन	,,
सीतलाका उत्तर	,,
शीतला नाशक प्रयोग	१६६
बालकाले करनेवाला लेप	१६७
इन्द्रलुप्तपर लेप	,,
दारुणरोगपर लेप	,,
अरूंषिका रोगपर अर्क	१६८
मुंहासोकोदूरकरनेवालाअर्क	,,
मुखव्यंगनाशक ,,	१६८
अङ्गुलिवेष्टकरोग पर ,,	१६८
लिंगोत्थपर ,,	१६९
गुदकण्डूरोग पर ,,	,,
गुदानिःसरणपर ,,	,,

विषय	पृष्ठ.
सूर्य्यावर्त नाशक अर्क	१६६
अर्धावभेदकपर ,,	१७०
शिरोवेदना नाशक ,,	१७०
शंखपीडा नाशक ,,	१७०
अलसरोग नाशक ,,	१७१
अलस नाशक अन्य ,,	१७१
चर्मकील आदि पर उपाय	,,
अभिष्यन्दरोग नाशक अर्क	,,
नेत्ररोग नाशक अर्क	१७२
तर्पणके योग्य नेत्र	,,
औषधिधारणका प्रमाण	१७३
नेत्ररोग नाशक अर्क	,,
रतोन्धदूरकरनेवाला ,	१७४
काचपटलादि नाशक ,,	१७४
कर्णशूल नाशक ,,	१७५
कर्णशूलपर अन्य प्रयोग	,,
पूतिकर्णरोगपर तैल	,,
नेत्रोके फूलेको दूर करने-वाली बत्ती	१७६
प्रक्लिन्नवर्त्मपर अंजन	,,
नेत्रस्रावपर अर्क	,,
नेत्ररोग नाशक ,,	१७७
पीनसादिरोग नाशक अर्क	,,
पूर्तिनासारोग नाशक ,,	,,
छींकनाशक ,,	१७८

विषय	पृष्ठ
कफ नाशक अर्क	१७८
नासार्श नाशक ,,	१७८
निद्रा नाशक ,,	,,
सब प्रकार के नेत्र रोगो पर अर्क	१७९
दांतोके कीडे दूर करनेका उपाय	,,
दांतोके दृढ करनेका उपाय	,,
उपजिव्हापर अर्क	१८०
जिव्हा और दांतके रोगों को दूर करने का उपाय	,,
तालुरोगो पर अर्क	१८१
कण्ठरोग नाशक अर्क	,,
मुखपाक नाशक अर्क	,,
व्रण क्लेदपर अर्क	,,
लालास्रावपर अर्क	१८२
विषार्तको अर्क	,,
विषहारक लेप	,,
सर्पविष नाशक अर्क	१८३
वृश्चिकविष नाशक अर्क	,,
कुत्ताके विषको दूर करनवाला अर्क	,,
लूता विष नाशक लेप	१८४
मूषक विषनाशक अर्क	,,
कनखिजूरा विष दूर करने-वाला अर्क	,,

विषय.	पृष्ठ.	विषय	पृष्ठ.
चींटी वा विष दूर करने वाला अर्क	१८४	विद्वेषण विधि	१९४
प्रदर नाशक अर्क	१८४	अथस्तम्भनम्	१९७
अन्य अर्क	१८५	भैंसे का रूप दीखना	१९८
अन्य अर्क	१८५	गधाघोडाआदिकारूपदीखना	,,
सोमरोग नाशक अर्क	,,	पूर्वजन्म का रूप दीखना	,
बहुमूत्र ,, ,,	१८५	मारण विधि	१९९
रज प्रवर्तक ,,	१८६	अदृश्य विधि	२००
गर्भधारण करनेवाला अर्क	.	अथ मोहन प्रकार	२०१
गर्भ निवारक ,,	,,	अग्निस्तम्भन विधि	२०२
विलुप्तायोनि पर तैल	१८६	अथ जलस्तम्भनम्	२०३
अन्य योनियो पर उपाय	१८७	अथ उन्मत्तकरणम्	२०४
स्कन्दापस्मार पर अर्क	,	दूर देश गमनम्	२०६
बालरोग नाशक अर्क	१८८	अथावेश विधिः	२०७
बालक के अतिसारपर ,,	१८९	सम्भोग सन्धिः	२०८
बालरोग नाशक ,,	,	अथ क्षुधावर्धनम्	२०९
बालको के मूत्रग्रह पर ,	,	अथक्षुधानिवारण विधि	२१०
बाजीकरण प्रयोग	१९०	अथचौर्य्यम्	२११
अन्य प्रयोग	१९०	चोरभय निवारण विधि	२१२
अन्य प्रयोग	१९०	अथ कौतुकानि	२१३
अन्य प्रयोग	१९०	शिरापोषक गण	२१५
वीर्यस्तम्भनयोनिदृढीक०	१९१	वामन गण	२१५
वीर्यस्तम्भन	,,	रञ्जन गण	२१५
योनि सुगन्धी करण	१९१	नेत्र्य गण	२१६
आकर्षण विधि	१९२	त्वच्य गण	२१६
		उपविष गण	२१६

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
जलपुष्प गण	२१७	विरेचन गण	२२७
कन्द गण	२१७	पाचक गण	२२८
लवण गण	२१८	उसा गण	,,
क्षार गण	२१८	दीपन गण	,,
अम्ल गण	२१९	पौष्टिक गण	,,
फल गण	२१९	वातघ्न गण	२२९
शालि गण	२२०	कृमि नाशक गण	,,
शिम्बी धान्य गण	२२१	तृण गण	,,
क्षुद्रान्न गण	२२२	प्रसर गण	२३०
पत्रशाक गण	२२२	वृक्ष गण	,,
पुष्पशाक गण	२२३	गुल्म गण	२३१
फलशाक गण	२२४	लता गण	,,
जाङ्गल गण	२२४	पुष्प गण	२३२
बिलेशय गण	२२४	दुग्ध गण	२३२
गुहाशय जीव	२२५	धूप गण	२३३
पर्ण मृग	२२५	सुगन्ध गण	२३३
विष्किर गण	,,	द्वितीयसुगंध गण	२३४
प्रतुद गण	,,	दुग्धादि गण	२३४
प्रसह गण	२२६	धातुवर्ग	२३५
ग्राम्यजीव	२२६	उपधातु गण	२३५
कूलेचर जीव	,,	रस गण	२३६
सवजीवों के नाम	,,	उपरस गण	२३६
कोषजों के नाम	२२७	रत्न वर्ग	२३६
पादिजीवों के नाम	२२७	उपरत्न वर्ग	२७४
मत्स्यों के नाम	,,	पाठान्तर	२४७

विषय	पृष्ठ
उत्तम सुवर्ण के लक्षण	२३८
धातुशोधन मारण प्रकार	२३८
सुवर्ण भस्म के गुण	२३६
कच्ची सुवर्ण के भस्म के अवगुण	२४०
उत्तम चाँदी के लक्षण	,,
चांदी के भस्म के गुण	२४१
उत्तम तांबे के लक्षण	,,
ताम्रगुण और ताम्रभस्म	,,
कच्ची भस्म के अवगुण	२४२
उत्तम वङ्ग के लक्षण	,,
वङ्ग भस्म के गुण	२४३
अशुद्ध वङ्ग के अवगुण	,,
उत्तम जस्त के लक्षण	,,
जस्त की भस्म के गुण	,,
अशुद्ध जस्त के अवगुण	२४४
शीशे की भस्म के गुण	,,
अशुद्ध शीशे के अवगुण	१४५
लोह शोधन विधि	,,
लोह भस्म की विधि	,,
लोहभस्म सेवन विधि	२४६
अशुद्ध लोह के अवगुण	,,
उपधातु शोधन मारण	,,
अथ सिन्दूर विधि	२४६
पारद विधि	२५०
सिंगरफ विधि	२५२
गन्धक शोधन प्रकार	२५३
अभ्रक मारण	२५४
हरताल शोधन मारण	,,
हरताल सेवन विधि	२५६
मनःशिला शोधन	२५७
खर्पर शोधन प्रकार	,,
उपरसशोधन	,,
वज्रशोधन	२५८
विष शोधन	,,
उपविष शोधन	२५६
जमालगोटा के शुद्ध करने की विधि	२५६
रावण का बचन	२६०



वैद्यक की पुस्तकें।

जर्राही प्रकाश भाषा।

इस पुस्तक में चार भाग हैं मनुष्य के शरीर पर होने वाले फोडे फुन्सियो का इलाज, इनमें चीरा देनेकी विधि तथा सुजाक गर्मी आदि अनेक प्रकार क रोगो का वर्णन और उनका इलाज है। इसके एक भाग में डाक्टरी मत से भी चीर फाड़ने की विधि लिखी है। मूल्य १।)

इलाजुल गुर्बा भाषा।

यह पुस्तक प्रत्येक आदमी को अपने पास अवश्य रखनी चाहिये इसमें अनेक प्रकारके रोगो के कम लागातके हजारों नुसखे हैं जो समय पर तीर का सा काम कर देते हैं एक एक रोग के कितने ही नुसखे हैं। ४०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १।।)

पथ्यापथ्य भा. टी.

इसमें किन किन वस्तुओ के खाने पीने से रोगों की वृद्धि होती है तथा किन किन रोगो में लाभ पहुँचता है तथा किस रोग पर किस प्रकार का पथ्य दिया जाय उसका वर्णन है। स्थान स्थान पर डाक्टरी मत से भी पथ्यापथ्य का वर्णन किया गया है। कीमत १) है।

केश कल्पद्रुम।

इसमें बाल काला करने के आजमाये हुए १०० नुसखे हैं। कीमत ≡) आना

॥ ओ३म् ॥

श्रीहरिम्वदे।

श्रीवृन्दावनविहारिणे नमः ।

भाषा टीकया समेतः ।

अथ अर्कप्रकाश प्रारम्भः ।



टीकाकारका मङ्गलाचरण ।

जगत्पतिं नमस्कृत्य बालवैद्य सुखाप्तये ।
अर्कप्रकाशग्रन्थस्य मया भाषा वितन्यते ॥

ग्रन्थकारका मङ्गलाचरण ।

औषधीपतिनेत्रायपद्मिनीपतिमूर्तये ।
कालाकलायनीलाय पार्वतीपतये नमः ॥ १ ॥

औषधियों का स्वामी चन्द्रमा जिनके मस्तक पर विराजमान है और चन्द्रमा ही के समान जिनका श्वेतवर्ण है ऐसे काल के भी काल, नीलकण्ठ पार्वतीपति शिवजीको मैं प्रणाम करता हूं ॥१॥

गर्भभारपरिक्रान्ताकन्यामन्दोदरीशुभा ।
रावणम्परिपप्रच्छ पूजान्तेतुष्टमानसम् ॥ २ ॥

गर्भ के भार से अत्यन्त दुःखित मन्दोदरी नामक कन्या अर्थात् राक्षसराज रावण की अर्द्धांगी, पूजा करके परम प्रसन्न चित्त है जिसका ऐसे अपने पति रावण से कहने लगी ॥ २ ॥

मन्दोदरी का वचन ।

स्वामिन्दैत्यसुराराध्याचतुर्वेदविशारद ।
सदाणिमाद्यात्मकाम भुवनत्रयपालक ॥ ३ ॥
इदंशुक्रममोघन्ते यदारभ्योदिरेस्थितम् ।
तदारभ्यनशक्नोमि वक्तुंवक्तुमनामनाक् ॥ ४ ॥
दुःखंरोगश्चकालश्चत्वत्प्रसादान्मनागपि ।
रक्षोगणान्नस्पृशन्तित्वेषांपीडाकथंमम ॥ ५ ॥
उपायंब्रूहिमेनाथगर्भिण्याहियथोचितम् ।
यथाविवर्धतेगर्भोजायतेचबलंमम ॥ ६ ॥

मन्दोदरी बोलीः--हे स्वामिन् ! हे दैत्य और देवताओं द्वारा आराधन करने योग्य ! हे चारो वेदो के विषय को पूर्णतया जानने वाले ! अणिमादिक आठों सिद्धियो से परिपूर्ण ! हे तीनों लोकों को पालन करने वाले प्राणनाथ ! ॥ ३ ॥ जब से यह आपका शुद्ध अमोघ [निष्फल न जाने वाला] वीर्य गर्भ रूप से मेरे उदर मे स्थिर हुआ है तब से मेरी किसी से बात करने की भी इच्छा नहीं होती और जो बात करती भी हूं तो सम्पूर्ण शरीर में वेदना होने लगती है ॥ ४ ॥ हे प्रिय ! जिस पर आप प्रसन्न होजाते हो उसको दुःख, रोग, काल और राक्षसगण भी स्पर्श नहीं कर सकते [ऐसे आपके मेरे पति होते भी] फिर मुझे इन सामान्य स्त्रियों की तरह पीड़ा क्यों होती है ॥ ५ ॥ हे प्राणनाथ

मुझ गर्भिणी के लिये कोई उत्तम उपाय बताओ जिससे मेरा गर्भ वृद्धि को प्राप्त हो और मेरा बल भी बढ़ै ॥ ६ ॥

रावण का उत्तर ।

एकदाहिमयापृष्टापार्वतीप्रीतमानसा ।
उमेतेहिजगन्मातस्तवदेहोद्भवाःसुताः ॥ ७ ॥
कथंनहिगणेशाद्याःसदृशास्तवबालकाः ।
तिष्ठन्तिनानुरूपास्ते कारणम्ब्रूहिमेशिवे ॥ ८ ॥

रावण बोला हे प्रिये ! एक समय प्रसन्न पार्वती जी से मैंने यही प्रश्न किया था कि हे उमे ! हे जगदम्बे ! आपके देह से जो गणेश आदि पुत्र उत्पन्न हुए है वे महा बलवान् हैं तथा स्वरूप और कांति मे आपके ही तुल्य है, हे शिवे ! इसका कारण कृपा कर मुझको बताइये ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥

पार्वती का उत्तर ।

कामिनोऽनंगनाशायजायन्तेबालकाः सुत ।
भार्य्यापिवृद्धाभवति तरुण्यपिसुतेसति ॥ ९ ॥
एवंसदाशिवंरंतुं सदैवाहंकुमारिका ।
गणेशस्कन्दनन्द्याद्याःकल्पितामनसाःसुताः ॥१०॥

पार्वती जी कहने लगी हे पुत्र ! कामी पुरुषों के काम को नष्ट करने के लिये सन्तान होती है। पुत्रके उत्पन्न होने पर स्त्री चाहै तरुणा ही क्यों न हो तो भी वृद्धासी होजाती है ॥ ९ ॥ इस प्रकार मैं सदा शिव के रमण करनेके लिये सदैव कुमारी बनी रहती हूं

और गणेश, स्कन्ध, और नन्दी आदि जो मेरे पुत्र हैं सो मन से कल्पना किये हुए है, मेरे शरीर से उत्पन्न नहीं हुए है ॥ १० ॥

रावण का वाक्य ।

नमस्तुभ्यम्मयाकिंहि संसाराकृष्टचेतसा ।
विवाहंनकरिष्यामि प्रत्युतस्यांकुमारकः ॥ ११ ॥

यह सुन कर रावण बोला हे जगदम्बे ! तुमको नमस्कार है मुझ संसारी जीव से कुछ नही होसकता है, अब मैं हिवाह ही नही करूंगा, सदैव कुमार अवस्था युक्त ही रहूंगा ॥ ११ ॥

इतिमद्वचनंश्रुत्वा पार्वतीवाक्यमब्रवीत् ।
निर्विण्णोभवमापुत्र कुरुराज्यंचिरंस्थिरम् ॥१२॥

इस प्रकार मेरे वचन को सुन कर पार्वती जी बोली हे पुत्र ! तू अपने मन में उदास मत हो, तू वहुत काल तक स्थित रहने वाला राज्य भोगकर ॥ १२ ॥

मयासहकृतेर्ष्येयं विष्णुपत्न्यतिचंचला ।
त्वयागृहेसमानेयास्थाप्याबंबन्धनेऽरिवत् ॥ १३ ॥

और मेरे साथ अत्यन्त ईर्षा रखने वाली विष्णु की स्त्री लक्ष्मी (जिसने राजा जनकके यहा अवतार लिया है) जो अत्यन्त चचल है, तू उसको पकड़ कर अपने घर लेआ और शत्रुओं के समान बन्दी बनाकर रख ॥ १३ ॥

तयोन्मत्ताःसुराःसर्वे निर्जेतव्यामहाबलाः ।
ममप्रकृतिदेहस्थरोमभ्यः शतशोऽभवन् ॥ १४ ॥

ओषध्यस्तद्भवादेव त्वं विश्वं जय बालक ।
इत्युक्त्वा मामकथय पार्वती महिमानकम् ॥ १५ ॥

उस लक्ष्मी के प्रभाव से महाबली देवता अत्यन्त उन्मत्त हो रहे हैं, उनको तू जीत ले। मेरी देह मे जो ये स्वाभाविक रोग हैं उनसे सैंकड़ों औषधियां उत्पन्न हुई है ॥ १४ ॥ सो हे बालक ! तू उन्हीं के प्रभाव से इस सम्पूर्ण विश्व को जीत ले, इस प्रकार कहकर पार्वतीजी ने फिर मुझसे औषधियोंका कल्प वर्णन किया १५

दिव्यौषधीनां प्रकल्पः कथितः प्रीतया तया ।
तमहं सम्प्रवक्ष्यामि शृणुष्वावहिता प्रिये ॥१६॥

हे प्रिये ! उन पार्वती जी ने जो दिव्य औषधियों का कल्प मुझसे कहा था, वह मैं तेरे प्रति वर्णन करता हूं तू सावधान होकर सुन ॥ १६ ॥

औषधियों के भेद ।

औषध्यः पंच व्याख्याता लतागुल्माश्च शाखिनः ।
पादपाः प्रसराश्चेति तेषां वक्ष्यामि लक्षणम् ॥१७॥

रावण कहने लगा कि औषधि पाच प्रकार की होती है (१) लता (बेल)(२) गुल्म (गुच्छा) (३) शाखी (डाली वाली) (४) पादप (बड़े वृक्ष) और (५) प्रसर (जो पृथ्वी पर फैलती हैं) अब मै इनके लक्षण कहता हूं ॥ १७ ॥

लता आदि के लक्षण ।

गुडूच्याद्या लताः प्रोक्ता गुल्माः पर्पटकादयः ।

आम्राद्याःशाखिनोज्ञेयावटाश्वत्थादिपादपाः १८

कंटकार्यादिकाःसर्वाःप्रसराइतिकीर्त्तिताः ।

तासांपंचैवचांगानि प्रबलानियथाक्रमम् ॥१६॥

गिलोय इत्यादि जो औषधि हैं उनकी लता सज्ञा है पिचपापड़ा आदि गुल्म संज्ञक औषधि हैं, आम इत्यादि शाखी हैं, वड़ पीपल आदि को पादप कहते और कटेरी आदि सम्पूर्ण औषधियो की प्रसर संज्ञा है । इन औषधियों के पाच अंग होते हैं जो क्रमसे एक दूसरे से अधिक वलवान् होते है ॥ १६ ॥

औषधियो के पञ्चांग ।

पत्रंपुष्पंवल्कलंच फलंमूलंक्रमेणच ।

अनुक्तेबलमेतेषामुष्णमंगेयथोचितम् ॥२०॥

पत्र, फूल, छाल, फल और जड़ मे पंचांग हैं, इनमें पत्ता से फूल को, फूल से छाल को, छाल से फल को और फलसे जड़ को वलवान् जाननी चाहिये ॥ २० ॥

तालीसादेस्तुपत्राणिसुमनोधातकीमुखात् ।

न्यग्रोधादेस्त्वचोग्राह्याःफलस्यात्त्रिफलादितः २१

पंचांगुलादेर्मूलानि ह्यनुक्तेपरिकल्पयेत् ।

खदिरासनकादीनांसारोपिपरिगृह्यते ॥२२॥

तालीस आदि औषधियोंके पत्ता ग्रहण करै, धाय आदि वृक्षों के फूल ले, न्यग्रोध (वड़, पीपल) आदि वृक्षों की छाल ले, और त्रिफला (हरड, बहेडा, आंवला) आदि का फल ग्रहण करै

तथा अरण्ड इत्यादि वृक्षों की जड ग्रहण करै और खैर, विजयसार ऐसी औषधियो का सार प्रयोग में लावे, जो यह बात किसी प्रयोग में न लिखी हो तो भी इसी नियम से औषधियो का ग्रहण करै ॥ २१ ॥ २२ ॥

द्रव्य की निरुक्ति ।

रसोगुणस्तथावीर्यंविपाकःशक्तिरेवच ।
पंचानांयःसमाहारस्तद्द्रव्यमितिकीर्त्यते ॥२३॥

जिसमें रस (किसी प्रकार का स्वादु) गुण (किसी प्रकार-की तासीर), वीर्य (किसी प्रकार का पुरुषार्थ), विपाक (पकने की शक्ति) और शक्ति (किसी प्रकार की सामर्थ्य) ये पाचो बात विद्यमान हों उसे द्रव्य कहते है ॥२३॥

रसो के नाम ।

स्वाद्वम्लौलवणस्तिक्तःकटुकश्चकषायकः ।
अमीषट्चरसाःख्यातानिर्बलोऽत्रपरःपरः ॥२४॥

स्वादु (मधुर), अम्ल (खट्टा), लवण (खारी), तिक्त (चरपरा), कटु (कड़वा) और कषाय (कषैला) ये छः रस होते है इनमें उत्तरोत्तर एक से एक अधिक निर्बल होता है जैसे स्वादु से अम्ल और अम्लसे लवण निर्बल है इत्यादि और भी जानो ॥२४॥

मधुर रस के गुण ।

मधुरःपिच्छिलःशीतोधातुस्तन्यबलप्रदः ।
चक्षुष्योवातपित्तादीन्कुर्यात्त्वक्तथोमलक्रिमीन् २५

कफ को दूर करने वाला रुचिकर्त्ता, स्वयं कम रोचक (अर्थात् इस रसका स्वाद अच्छा नहीं होता) और कण्ठ तथा छाती की अस्थि का अवरोधक है ॥२८॥

कटु रस के गुण।

कटूरूक्षस्तन्यमेदः श्लेष्मकण्डूविषापहः।
वातपित्तकफाग्नेयः शोषिपाचनरोचकः ॥२९॥

कटुरस, रूक्ष, स्तन्य, मेद, कफ, कण्डू (खुजली) और विषका नाश करने वाला, वात, पित्त को उत्पन्न करने वाला, आग्नेय (अग्नि समान), शोषक (सुखानेवाला) पाचन और रुचि करने वाला है ॥२९॥

कषाय रसके गुण *।

कषायोरोपणोग्राहीस्तंभनःशोधनोहिमः।
कफशोणितपित्तघ्नो जिव्हा जाड्यकरोलघुः॥३०॥

कसाय रस—रोपण (घावको पुराने वाला), ग्राही (मलको रोकने वाला), स्तम्भन शोधन शीतल, कफ, रक्त और पित्तका नाश करने वाला, जिव्हा को जड करनेवाला और लघु है ॥३०॥

---

* लखनऊकी प्रतिमें ऐसा पाठहै—"कषायः क्रमि कण्डूघ्न कफशैथिल्यनाशन। वात व्याधिहरःसूक्ष्मो सोतियुक्तोक्षिरोगकृत॥" अर्थात् कषाय रस क्रमि और कण्डूका नाश करने वाला, कफ की शिथिलताका नाशक,वात व्याधिनाशक और अत्यन्त सेवन करने पर नेत्ररोगका करने वाला है॥

गुणों का वर्णन।

गुरुस्निग्धस्तीक्ष्णरूक्षौलघुरेतेगुणाःस्मृताः ।
पंचभूतेषुतिष्ठन्तिआधिक्याद्दुपलक्षयेत् ॥३१॥

गुरु (भारी पन), (स्निग्धता) (चिकनापन) तीक्ष्ण (तीखापन), रूक्ष (रूखापन) और लघु (हलकापन), ये पांच गुण है जो पृथ्वी आदि पंचमहाभूतों में रहते हैं, इनको अधिकता से पहिचाने ॥३१॥

गुरु गुण।

गुरुर्वातहरःपुष्टिश्लेष्मकृच्चिरपाचकः ।

गुरु गुण वातका दूर करने वाला, पुष्टि कारक, कफकारक, और अन्नादिको देर में पचाने वाला है ॥०

स्निग्ध गुण।

स्निग्धोवातहरःश्लेष्माकृटिमूर्द्धबलापहः ॥३२॥

स्निग्ध गुण वातका दूर करने वाला, कफकर्त्ता, वृष्य और बल बढाने वाला है॥ ३२ ॥

तीक्ष्ण गुण।

तीक्ष्णम्पित्तकरंप्रोक्तं लेखनंकफवातकृत् ।

तीक्ष्ण गुण, पित्तकारक, प्रायः मलका उखाडने वाला, तथा कफ और वातका हरने वाला है ॥

रूक्षगुण।

रुक्षं समीरणकरंपरंकफहरंमतम् ॥३३॥

रूक्षगुण वायुको उत्पन्न करने वाला और अत्यन्त कफनाशक है ॥ ३३ ॥

लघुगुण ।

लघुपथ्यंपरम्प्रोक्तं कफघ्नंचिरपाकिच ।
पृथिव्यादिगुणाधिक्याद्गुणांद्रव्येप्रकल्पयेत् ३४

लघुगुण-पथ्य, कफनाशक, और शीघ्र पचाने वाला है इस प्रकार पृथ्वी आदि पंचमहाभूतों के गुणों की अधिकता से द्रव्य में गुण की कल्पना करै ॥ ३४ ॥

उष्ण और शीतवीर्य ।

उष्णं शीतंद्विधावीर्यंतत्कालाद्युपलक्षयेत् ।
स्थलादयितयोर्योगादयोगान्मध्यमन्तुतत् ।३५

उष्ण (गरम) और शीत (ठण्डा) ये दो प्रकार के वीर्य है, इन दोनों के काल और बल को विचार ले, स्थान के बल से भी उनका योग होने से अधिक बल हो जाता है और योग न होने से सम अर्थात् कम हो तो बराबर होजाता है ।।३५।।

जंगल और अनूप के गुण ।

सर्वंजांगलसम्भूतं प्रायोभवतिपित्तहृत् ।
आनूपसम्भवं सर्वं प्रायः कफकरंस्मृतम् ।।३६।।

जंगल देशकी औषधि प्रायः वात को दूर करने वाली होती है और आनूप देश में उत्पन्न हुई औषधिया प्रायः कफकारक होती हैं ॥ ३६ ॥

दक्षिण और उत्तर दिशा में उत्पन्न द्रव्य ।

तत्कालोष्णं दक्षिणजं परिणामेतुशीतलम् ।
धनदाशासमुद्भूतं विपरीततयास्मृतम् ॥३७॥

दक्षिण देश में उत्पन्न हुई औषधि तत्काल अर्थात् उखाड़ते ही तौ गरम होती है और परिणाम मे अर्थात् उखाड़नेके कुछकाल उपरान्त शीतल होजाती है और उत्तर दिशा मे उत्पन्न हुई औषधि विपरीत गुण वाली होती है अर्थात् उखाड़तेही शीतल और परिणाम मे गरम होती है ॥ ३७ ॥

अन्तर्वेदी औषधि ।

अन्तर्वेदिभवंसर्वंयथोक्तगुणमादिशेत् ।
विपाकस्तुत्रिधाप्रोक्तःस्वाद्वम्लकटुकात्मकः॥३८॥

अन्तर्वेद अर्थात् मध्यदेश में उत्पन्न हुई औषधि में यथोक्त गुण होते है और उसका विपाक तीन प्रकार का है यथा—स्वादु, अम्ल और कटु ॥ ३८ ॥

रसो के विपाकका वर्णन ।

क्रमाद्धीनबलोज्ञेयोमधुरोमधुरःकटुः ।
पचत्यम्लोम्लमितरेरसाःकटुकपाकिनः ॥३९॥

मधुर, अम्ल, और कटु इनमे एक की अपेक्षा एक हीन वीर्य (अर्थात् न्यूनबल वाला) होता है । मधुररस पहिले मीठा होता है किन्तु पाक के वश से कडवा होजाता है, अम्ल (खट्टा) ही रहता है और शेष चार अर्थात् तिक्त लवण, कटु और कषाय इन का विपाक बहुधा कडवा होता है ॥३९॥

पक मधुर और अम्लरस के गुण।

श्लेष्मकृन्मधुरः पाकेवातपित्तहरामतः।
अम्लस्तुकुरुतेपित्तंवातश्लेष्मगदापहः ॥ ४० ॥

मधुर रस पकने पर कफ को उत्पन्न करता है और बातापित्त का नाश करता है और अम्ल रस पकने पर पित्तको उत्पन्न करता है और वात कफ के रोगों को दूर करता है ॥४०॥

कटुपाकी रस।

कटुःकरोतिपवनंकफपित्तंचनाशयेत्।
विशेषएवरसतोविपाकानांप्रदर्शितः ॥ ४१ ॥

कटु रस पकने पर वात को उत्पन्न करता है और कफ पित्त का नाश करताहै, ये रसपाकों के रससे विशेष दिखाये हैं ॥४१॥

द्रव्योके प्रभाव।

रसादिसाम्येयत्कर्मविशिष्टंतुप्रभावजम्।
दंतीरसेनतुल्याऽपिचित्रकस्यविरेचति ॥ ४२ ॥
मधुनाचाथमृद्वीकाघृतंक्षीरेणदीपनम्।
प्रभावस्तुयथाधात्रीलकुचस्यरसादिभिः ॥ ४३ ॥
समापिकुरुतेदोषत्रितयस्यविनाशनम्।
क्वचित्तुकेवलंद्रव्य कर्मकुर्यात्स्वभावतः ॥ ४४ ॥
ज्वरंहंतिशिरोबद्धासहदेवीजटायथा।
धृतानिवारियेल्लोहंपुष्यार्केकोलमूलिका ॥४५॥

रसादिको की समता मे जो द्रव्यो के विशेष कर्म है उन्ही को

प्रभाव कहते हैं, जैसे दन्ती चीतके रसके योगसे विरेचक होजाती है ॥ ४३ ॥ शहद के साथ दाख और दूध के साथ घी दीपन हो-जाता है। जैसे आवला और कटहर रसादिको मे समान है परन्तु आंवला त्रिदोष नाशक है यह प्रभावज गुण है। और कहीं तौ एक ही औषधि स्वभाव से कर्म करती है ॥४४॥ जैसे सिरसे बाधने पर सहदेई की जड़ ज्वर को दूर करती है और जैसे पुष्प नक्षत्र में धारण की हुई अंकोल की जड़ शस्त्र बाधाका निवारण करती है ॥

द्रव्य के कल्प.

द्रव्यकल्पःपंचधास्यात्कल्कचूर्णरसंतथा ।
तैलमर्कंक्रमाज्ज्ञेयं यथोत्तरगुणंप्रिये ॥४६॥

रावण कहने लगा हे प्रिये ! द्रव्य का कल्प पाच प्रकार का होता है यथाः—कल्क, चूर्ण रस, तैल, और अर्क, इनमे उत्तरोत्तर एक से एक अधिक गुणवान् है जैसे कल्क से चूर्ण, चूर्ण से रस, रस से तैल, और तैल से अर्क अधिक गुणवान् है ॥ ४६ ॥

इनके प्रयोग करनेकी विधि ।

पृथक्द्वन्देसन्निपातेसंकरेऽसाध्यरोगिणि ।
क्रमादेतेप्रयोक्तव्याःकालमग्निनिरीक्ष्यच ॥४७॥

अलग २ दोषो मे, द्वन्द्वज रोगो मे, सन्निपात में, मिले हुए त्रिदोषज रोगो मे और असाध्य रोगों में, क्रम से ये द्रव्य दिये जाते हैं परन्तु इन द्रव्योंको काल और रोगी का अग्निबल विचार करदे।

कल्कादिके गुणोंमें न्यूनाधिक्य ।

आद्ये गुणेगुणाःसर्वेद्वितीयेह्यल्पतःस्मृताः ।

तृतीयेशीघ्रकारित्वंचतुर्थोनहिदोषकृत् ॥४८॥
पंचमंदोषरहितंगुणसंघप्रकाशकम् ।
पंचमस्यतुसामर्थ्यस्वयम्पंचाननोऽब्रवीत् ॥४९॥
वर्षाणांतुसहस्रेणकथितोऽहर्निशंमया ।
सम्पूर्णतांनजायेतकल्पोर्कस्यदशानन ॥५०॥

इनमें पहिले अर्थात् कल्क मे तो सम्पूर्ण गुण है दूसरे अर्थात् चूर्ण में कल्ककी अपेक्षा कुछ कम गुणहै तीसरा अर्थात् रस शीघ्र-कारी है चौथा अर्थात् तैल बिल्कुल दोष कारक नहीं है ॥ ४८ ॥ और पाचवा अर्थात् अर्क दोष रहित और गुणोंके समूह को प्रकाश करने वाला है, इसका प्रभाव तौ स्वयं महादेव जी ने मुझसे इस प्रकार वर्णन किया है ॥ ४९ ॥ हे रावण ! मैने सहस्र वर्ष तक दिनरात बराबर यहअर्क कल्प वर्णन किया तथापि समाप्त न हुआ ।

अर्क प्रयोग ।

पुंवारेपुरुषर्क्षेच दिवार्कोयस्तुनिर्मितः ।
रमणीषुप्रदातव्योविलोमात्पुंसियोजयेत् ॥५१॥

जो अर्क पुरुषवार पुरुषनक्षत्र और दिनमें बनाकर तैयार किया गया हो उसे स्त्री के लिये देवै और जो अर्क विलोम अर्थात् स्त्री वार, स्त्रीनक्षत्र और रात्रिको बनाया गयाहो उसे पुरुषको देवै ।५१।

यंत्र के लिये मृत्तिका बनाने की विधि ।

लोहचूर्णषष्ठिकंगैरिकंत्वभ्रष्टमृत्तिका ।
मृत्तिकास्थिभवंचूर्णं काचकंकसजंरजः ॥५२॥

एतानिसमभागानि सर्वतुल्यात्रमृत्तिका ।
भृंशनीयापंचमूत्रैर्गवाश्वमहिषोद्भवै. ॥५३।
गजाजसम्भवाभ्याचसटितंतद्विशोषयेत् ।
यावद्दुर्गन्धविनाशःस्यात्तावत्सम्मर्दयेच्चतः ॥५४॥

लोहे का चूरा, साठी चावल, गेरू, भाड की मिट्टी, साधारण मिट्टी, हाड़ का चूरा, काच का चूरा और सीप का चूरा ॥ ५ ॥ इन सबको समान भाग लेकर इनके बराबर मिट्टी मिलावे और फिर गाय, घोड़ा, भैसा, हाथी और बकरी इन पाचों के मूत्र मे उसको सान लेवे, तदनन्तर धूप मे सुखावे और जब तक मूत्रो की दुर्गन्धि दूर न हो तब तक उस मिट्टी को मसलता रहै । यह यंत्र के लिये मृत्तिका बनाने की विधि है, अब यंत्र बनानेकी विधि कहते हैं ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

यंत्र बनाने की विधि ।

लघुहस्तैःकुलालैस्तुकुर्याद्यंत्रंसुनिर्मलम् ।
यथेष्टांस्थालिकांकुर्यात्पंगुलमांतसारिकाम् ॥५५॥
पृथुब्रघ्नोदराकारांद्व्यगुलासंधिवेष्टिताम् ।.५६॥
सारिकांतेतुपरिधिंत्र्यंगुलोत्सेधशोभिताम् ॥५६॥
विनिर्मायाथसार्यांतेयथाशिल्पविनिर्मितम् ।
छिद्रंकृत्वानलन्दद्याद्गजशुण्डासमंसुधी ॥५७॥
सारिकापरिधेरंतस्तस्यकुर्यात्पिधानकम् ।
अर्द्धनिम्बूफलसमंपरिधेस्तस्यचांततः ॥५८॥

वेदांगुलंमस्तकोर्ध्वंकार्य्यंतोयस्यधारणे ।
समर्थांतस्यनलकांकुर्य्यात्तोयविमोचनीम् ॥५९॥
तस्यैवांतरतोलेप्याघनाजीर्णास्थिमृत्तिका ।
अथवा श्वेतकाचंचसर्वदोषापनुत्तये ॥६०॥

जिसका हाथ हलका हो ऐसे कुम्हार से निर्मल यंत्र बनवावै, परन्तु उस स्थाली अर्थात् यंत्र का आकार जितनी औषधि का अर्क निकालना हो उतना ही हो और उसके किनारे तीन अंगुल ऊंचे हों ॥ ५५ ॥ गोल, सूर्य मण्डल के आकार का उस यत्र का पेट हो और उसके मुख के जोड़ के समीप ढक्कन मिलाने के लिये दो अंगुल पतला किनारा छोड़दे, तदनन्तर एक ढक्कन बनवावै जिसके किनारे तीन अगुल नीचेहों परन्तु ढक्कन के किनारो की परिधि यंत्र के मुख की परिधि से कम होनी चाहिये जिससे वह उस यंत्र के मुख के भीतर चला जाय और दोनों पात्र अच्छी तरह मिल जांय और उनके बीच मे बिल्कुल सन्धि न रहै, फिर उस ढक्कन की सन्धि को मिट्टी लगाकर बिल्कुल बन्द करदे ॥ ५६ ॥ इस प्रकार ढक्कन निर्माण होने पर उस ढक्कन के बीच मे एक छिद्र करवावै और उस छेद मे हाथी की सूड के समान लम्बा तावे या बांस का नल लगवावे ॥ ५७ ॥ ऊपर वाले पिधान अर्थात् ढकने का आकार आधे नीबू के समान होना चाहिये, जिसके किनारे नीचें की ओर हों, उस ढकने के छिद्र में नल इस प्रकार लगवावै कि वह उसके भीतर तीन अगुल चला जाय ॥ ५८ ॥ उस यंत्र के ऊपर

मस्तक चार अंगुल ऊंचा हो, वह जल के धारण करने के लिये हो उसमें जल भरदे, फिर दोनों पात्रों का पुटलगा पक्का लेप करके सन्धि वन्द करदे ऊपर ढकने के वीच में एक छेद हो जिसमें नल तीन अंगुल भीतर घुसा हो जिसमें होकर जल अच्छी तरह वाहर निकल जाय ॥ ५९ ॥ उसके भीतर जीर्णास्थि मृत्तिका का गाढा२ लेप करदे अथवा सब दोषों के दूर करने के लिये सफेद काच लपेट दे ॥ ६० ॥

जीर्णास्थि मृत्तिका वनाने की विधि।

अथवक्ष्येतुजीर्णास्थिमृत्तिकाकरणंप्रिये ।
शिलाजतुस्थलेकुर्य्याद्दीर्घगर्त्तमनोहरम् ॥६१॥
निक्षिपेत्तत्रनानास्थिसंचयंद्विचतुष्पदाम् ।
स्वर्जिक्षारंमहाक्षारंमृत्क्षारंलवणानिच ॥६२॥
गंधकोष्णजलंक्षेप्यंनानामूत्राणितत्रच ।
एवंकृत्वापासषट्कंदद्यात्पाषाणमृत्तिकाम् ॥६३॥
पंकास्थ्यूर्ध्वतदूर्ध्वेतुकुर्य्याद्वह्निष्टिकाःशुभाः ।
त्रिवर्षाज्जायतेसर्वमेकीभूतंद्रवन्मयम् ॥६४॥

रावण वाला हे प्रिये ! अब मैं जीर्णास्थि मृत्तिका वनाने की विधि कहता हूं, जहां से शिलाजीत निकलता है वहा अर्थात् पर्वत में एक सुन्दर गहिरा गढ्ढा खुदवावे ॥ ६१ ॥ और उसमें अनेक प्रकार के द्विपद (दो पांव वाले) और चतुष्पद (चार पाव वाले) जीवो की हड्डियों को डाले और ऊपर से संज्जीखार, महाखार, मृ-

चिकाक्षार, पांचों नमक ॥ ६२ ॥ गन्धक, गरम जल और अनेक जीवों के मूत्र उसमे डालदे । इस प्रकार करके छः महिने के पश्चात् उसमें पत्थर का चूरा करके डालदे ॥ ६३ ॥ फिर उस कीचड़ और हड्डियों के ऊपर अग्नि जलाकर उस पर ईंट चिनंद । इस तरह करने पर गड्ढे के भीतर का सामान पतला होजाता है ॥ ६४ ॥

ततोनिष्पिष्यतच्चूर्णंकृत्वापात्राणिनिर्मयेत् ।
प्रशस्तंभोजनंतत्रसूचयेद्दूषणंद्रुतम् ॥६५॥
महाविषस्यसंयोगात्तस्यभङ्गःप्रजायते ।
सूचीविषादिसंयोगात्तस्यस्फोटाभवन्तिहि ॥६६॥
तत्राक्षिप्तंक्षुद्रविषंपात्रंकृष्णंकरोतिच ।
एवंज्ञात्वातत्रदद्यान्नकदाचिद्विषादिकम् ॥६७॥

तदनन्तर उस चूर्ण को गड्ढे में से निकाल कर पीस ले और उसके पात्र बनाले । इन पात्रों मे भोजन करना श्रेष्ठ है क्योंकि यदि भोजन में किसी प्रकार का विकार हो तो शीघ्र ही प्रकाशित होजाता है ॥ ६५ ॥ यदि भोजन में महाविष का सयोग हो तो वह पात्र शीघ्र टूट जाता है और जो सूची विष मिला हो तो उस पात्र में स्फोटक अर्थात् छाले से पड़ जाते है ॥ ६६ ॥ और जो कोई हलका विष भोजन में मिला हो तो वह पात्र काले रग का होजाता है यह जानकर उस पात्र मे विष का सयोग कभी न होनेदे ॥६७॥

विषादीनामकसिद्धौ कुर्यात्पात्रंतुलोहजम् ।
स्वर्णजंरौप्यकंवापिकुर्यात्पात्रमकल्मषम् ॥६८॥

अथवाताम्रजंवापिह्यन्तर्वंगविलेपनम् ।
पात्रंतुबुद्ध्याकुर्वीतकषायोनभवेद्रसः ॥६९॥

जो विषादिको का अर्क निकालना चाहे तो लोहे का पात्र बनावे अथवा सुवर्ण या चादी का बनावे परन्तु वह दोष रहित होना चाहिये ॥ ६८ ॥ अथवा तांबेका पात्र बनवावे परन्तु उसके भीतर राग की कलई करा लेवै, पात्र को बुद्धिमानी से बनावे जिससे उस मे अर्क कसैला न होजाय ॥ ६९ ॥

द्रव्यांतरस्यसंयोगादर्कतैलंचगुर्विण. ।
सर्वेषांनिःसरत्येवंपाषाणस्यतुकिंपुनः ॥७०॥
अनग्न्यर्कस्तथातैलं गन्धतैलादिसम्भवम् ।
वेधकंसर्वधातूनांदेहस्यापिचपुष्टिदम् ॥७१॥

दूसरे द्रव्यके सयोगसे भारीसेभारी पत्थरका भी तेल अथवा अर्क निकल जाता है तौ फिर और पदार्थों का तेल निकल आवे तौ क्या आश्चर्य है ॥ ७० ॥ जो अर्क अथवा तेल अग्नि के बिना निकाला जाताहै, उससे अधिक मनुष्यके लिये कुछ लाभदायक नही है, क्योंकि विना अग्निका अर्क और गन्धक का तेल ये सब धातुओं के वेधक और शरीर को पुष्ट करने वाले हैं ॥ ७१ ॥

यस्तैलकरणेदक्षश्चार्कनिस्सारणेपटुः ।
तस्यसेवाभवेन्नित्यंरोगैश्चनसबाध्यते ॥७२॥
कुत्सितार्कस्तुयामैस्याद्द्वाभ्यामाभ्यांतुमध्यमः ।
त्रिभिर्यामैर्भवेच्छ्रेष्ठअर्कोमितगुणप्रदः ॥७३॥

जो तेल निकालने मे और अर्क खैचने मे निपुण है, उसकी सदैव सेवा होती है और वह कभी रोगी नहीं होता ॥ ७२ ॥ जो अर्क एक पहर में निकल आता है वह कुत्सित होता है जो दोपहर में तैयार होता है वह मध्यम होता है और जो तीन पहर मे तयार होता है वह श्रेष्ठ और असख्य गुणोका देने वाला होता है ।।७३॥

उत्तम अर्क के लक्षण ।

द्रव्यादधिकसौगंध्यंयस्मिन्नर्केप्रदृश्यते ।
जीर्णास्थिपात्रसंक्षिप्तो द्रव्यवर्णःप्रदृश्यते । ७४॥
शंखकुंदेंदुधवलोन्यथापात्रांतरस्थितः ।
जिह्वोपरिगतः स्वादुंदद्याद्द्रव्यभवंतुयः ॥७५॥

जिस अर्क मे द्रव्य से अधिक सुगन्धि आती हो, जो जीर्णास्थि पात्र मे डालने पर रग में जैसे का तैसा रहा आवै ॥ ७४ ॥ जो शंख, कुन्द और चन्द्रमाके समान श्वेत हो, और जो पात्रान्तर मे रखने पर भी जिव्हा पर रखने पर वैसा ही स्वाद दे जैसा कि उस द्रव्य का है जिसमें से वह निकाला गया है तो वह अर्क उत्तम होता है, शेष सब अर्क रसादिकों के समान है ॥ ७५ ॥

सुगन्धित अर्क सेवन की आज्ञा ।

तमेवार्कविजानीयादन्यस्तुस्याद्रसादिवत् ।
कृत्वासुगन्धिमेतस्यह्यर्कपुष्पादिभिःसुधीः ॥७६॥
गुणायपश्चात्सेवेतत्वन्यथापगुणोभवेत ।
दुर्गंधंभक्षयेदर्कंयद्विजोहारकश्चन ॥ ७७ ॥

जिस अर्क में दुर्गुन्धि आती हो तो उस अर्क को पुष्पों से सुगन्धित कर ले ॥ ७६ ॥ तदनन्तर उसको गुण के लिये सेवन करै, नही तो अवगुण होता है ॥ ७७ ॥

दुर्गन्धित अर्क सेवन का निषेध !

तदास्यजायतेग्लानिर्वान्तिमालस्यकंतथा ।
तद्दोषस्यविनाशायकुर्य्याद्वान्तिमतंद्रितः ॥७८॥
दीपोद्भवप्रसूनानाम्पिबेदथपलंजलम् ।
चामेल्यार्कफलंवापिससितंमालतीभवम् ॥७९॥

दुर्गन्धित अर्क को यदि भ्रम से भी कभी कोई सेवन करैगा तौ उसको उस अर्कके पीनेसे ग्लानि उत्पन्न होगी, वमन होजायगी और आलस्य बढ़ैगा ॥ उस दूषित अर्क के विकार की शान्ति के लिये सावधान पूर्वक वमन करावे ॥७८ ॥ और चम्पा के फूलोका एक पल अर्क पान करावै अथवा चमेली के फूल और फलोका अर्क अथवा मालती का अर्क खाड मिलाकर पान करावे ॥ ७९ ॥

अर्क निकालने की छः अग्नियो के नाम ।

अर्कनिष्कासनार्थायक्रमाद्देयाःषडग्नयः ।
धूमाग्निश्चैवमंदाग्निर्दीपाग्निर्मध्यमस्तथा ॥८०॥
खराग्निश्चभटाग्निश्चतेषांवच्यामिलक्षणम् ।

अर्क निकालने के लिये क्रम से छः अग्नि दैनी चाहिये, उन के नाम यह है धूमाग्नि, मन्दाग्नि, दीपाग्नि, मध्याग्नि ॥ ८० ॥ खराग्नि और भटाग्नि, अब उनके लक्षण कहता हू ॥

धूमाग्नि के लक्षण।

विज्वालोयोधूमशिखोधूमाग्निःसउदाहृतः ॥८१॥

जो धूआं अग्नि की ज्वाला के बिना बहुत ऊँचा उठता हो उसे धूमाग्नि कहते हैं ॥ ८१ ॥

दीपाग्नि के लक्षण।

द्वाभ्यांतस्यचतुर्भ्यांयोग्निर्दीपाग्निरुच्यते।

उस धूए वाली अग्निको दुगुनी अथवा चौगुनी करके जो दीपक के समान ज्वाला निकले उसको दीपाग्नि कहते है॥

मन्दाग्नि के लक्षण।

चतुरंशेनतेनैवमंदाग्निःसमकीर्त्तितः ॥ ८२ ॥

उस दीपाग्नि को चौगुनी करनेसे जो ज्वाला निकलै उसे मंदाग्नि कहते हैं ॥ ८२ ॥

मध्यमाग्नि के लक्षण।

अर्द्धीकृताभ्यांद्वाभ्यांतुमध्यमाग्निरुदाहृतः।

दीपाग्नि की आधी और मन्दाग्नि की आधी अर्थात् मंदाग्नि और मन्दाग्नि का आधा २ भाग मिलने से जो ज्वाला निकले उसे मध्याग्नि कहते हैं॥

खराग्निके लक्षण।

अर्द्धैस्तैःपंचभिःप्रोक्तःखराग्निः सर्वकर्म्मसु ॥८३॥

उक्त प्रकार से मिली हुई दीपाग्नि और मध्याग्नि से पंचगुनी अग्नि को खराग्नि कहते है इसे सम्पूर्ण कामोंमें उपयोगमें लावे ८३

भटाग्निके लक्षण।

मस्तकावधिपात्रस्यचतुर्दिक्षुक्रमेणच।
प्रसरंतियदाज्वालाःसभटाग्निरुदीरितः॥ ८४ ॥

अर्थ—जो अग्निकी ज्वाला पात्र के चारों ओर उसके मस्तकतक ऊंची पहुचती है उस अग्निको भटाग्नि कहते हैं॥ ८४ ॥

अग्नियोंका स्थितिकाल।

द्वियामंसार्द्धयामंचयामैकंद्विमुहूर्त्तकम्।
मुहूर्तमात्रमित्येवमर्कार्थंवह्नयःस्मृताः॥ ८५ ॥

अर्थ—अर्क निकालने मे दो पहर, एक पहर, आधा प्रहर, दो मुहूर्त और एक मुहूर्त पर्यन्त अग्नि देनेका समय नियत है॥८५॥

अर्क का अग्नि के लिये काष्ठ निर्णय।

ससारमतिशुष्कंयंमुष्टिमध्येसमेष्यति।
तत्काष्ठंग्राह्यमित्याहुःखदिरादिसमुद्भवम् ॥८६ ॥

अर्थ—अब अर्ककी अग्निमे जलाने के लिये ईंधनका वर्णन करते है, लकड़ी सूखी और सारयुक्त अर्थात् भारी होनी चाहिये, हलकी और घुनी हुई न हो, तथा खैर आदिकी लकड़ी ग्रहण करनी उचित है॥८३॥

अर्क पात्र विधि।

जीर्णास्थिपात्रेगृह्णीयादर्कंवाकाचसम्भवे।
पाषाणेश्ववापात्रेह्यभावेमृन्मयेन्यसेत् ॥ ८७ ॥

अर्थ—पहिले जिस जीर्णास्थि मृत्तिकाका वर्णन किया गया है

उसके बने हुये पात्रमें, अथवा काचके पात्रमें, अथवा पत्थर के पात्रमें अर्कको ग्रहण करै और जो इनमें से कोई न हो तो साधारण मिट्टी के पात्रमें रक्खे ॥८७॥

अर्क के पीने की विधि ।

पिबेदर्कमनिर्वापं पीत्वा ताम्बूलभक्षणम् ।
कुर्य्यादभुक्त ताम्बूले लवंगं भक्षयेत्तु च ॥ ८८ ॥

अर्थ-अर्कको विना रुके प्रेम सहित पीले और पीकर ऊपरसे पान खाले, और पान खाने का निषेध हो वहा लौंग खाले ॥८८॥

द्रव्य और अर्कके गुणों की समानता ।

ये ये द्रव्यगुणाः प्रोक्ताः सर्वे तेर्क समाश्रिताः ।
सेवेतार्कं श्रिये तस्माद्राजा परमधार्मिकः ॥ ८९ ॥

अर्थ-जो जो गुण द्रव्य में होते है, वही गुण उस द्रव्य के अर्कमें होते हैं इस लिये परमधार्मिक राजा अथवा अन्य लोग इसको अपने कल्याणके लिये सेवन करै ॥८९॥

तेल और अर्कको प्रयोग विधि ।

मर्दनादिषु सर्वत्र द्रव्यंतैलम्प्रयोजयेत् ।
अर्क एव प्रयोक्तव्यो भक्षणे न तु मर्दने ॥ ९० ॥

तैल मर्दन आदिमें प्रयोग किया जाता है और अर्क केवल पीने के काम में आता है और मर्दनमें कदापि प्रयोग नहीं किया जाता ॥ ९० ॥

अर्क प्रयोगमें नियम।

स्वस्थेन रोगिणा वापि याचितोर्कश्च येन वा।
ज्ञात्वा तल्लक्षणं दद्यादन्यथा ब्रह्महा भवेत् ॥९१॥

यदि किसी स्वस्थ अथवा रोगी पुरुषने अर्क मांगा हो तो वैद्य को उचित है कि देश, काल और अग्निबलका विचार कर अर्क दे, नही तौ वह वैद्य ब्रह्महत्या का दोषीहोता है ॥९१ ॥

दूत परीक्षा।

वर्णस्वराणां प्रमिति न्दूतोक्तानां हिकारयेत्।
एकयुक्तां द्विगुणितो त्रिभिर्भागं समाहरेत् ॥९२॥
एकशेषे गुणश्शीघ्रं द्विशेषे वर्द्धते गदः।
त्रिशेषे मरणं वाच्यं स्वार्थं याचयतेथवा ॥ ९३ ॥

वैद्यको उचित है कि रोगी का दूत आकर जो वचन कहै, उसके अक्षरों की स्वर सहित गणना करले। फिर उस संख्यामें एक जोड़कर दूना करले और तीनका भागदे ॥ ९२ ॥ अब भाग देनेपर जो एक बाकी रहै तौ समझलो कि औषधि तत्काल गुण दिखावैगी जो दो बचै तौ जानलो कि रोग वढैगा (और फिर देरमें आराम होगा) और जो कदाचित् तीन शेष रहै तौ रोगीकी मृत्यु समझो ९३

अर्कं तदेत द्विज्ञाय दद्याद्योग्यं न चान्यथा।
गदिना तु यदा दूतः प्रेषितस्तद्विचारयेत् ॥९४॥

इस बातका विचार करके अर्क देवे, नही तौ हानि होती है। रोगी ने जो दूत भेजा हो, वह जो बचन कहे उनपर नीचे लिखा हुआ विचार और करले ॥९४॥

दूत के बचन का बिचार ।

नपुंसकान्त्यैरूनास्तु स्वरा एकादश प्रिये ।
वर्णास्तत्संख्यकाले ख्याकचटाद्यास्तु तत्स्थले ॥
एकादश सुकोष्ठेषु क्रमादंकांश्च विन्यसेत् ।
रसास्त्रयो द्वयं वेदाः पर्वता मृतवः कृताः ॥१६॥
वह्नयः पृथिवी शून्यं चन्द्रमाश्चह्यतिक्रमात् ।
विहाय जीवदूतस्य नामाक्षर सुयोजनम् ॥१७॥
एकमेवातुरे युक्त्वाद्वयोरष्टावशेषितम् ।
कृत्वांकयोगं गदिनोधिकशेषे शुभं भवेत् ॥ १८ ॥
समशेषे दीर्घरोगो न्यूनशेषे तदामृतिः ।
एतद्विचार्य दातव्य मन्यदप्योषधं बुधैः ॥१९॥

हे प्रिये ! नपुसक अक्षरो को बतलाने वाले जो स्वर है, उन में अन्त वालों को छोड़कर केवल ग्यारह ही स्वर है उन ग्यारह स्वरों को ग्यारह कोठो मे लिखे और उनके नीचे, क, च, ट त, प य, श, क्ष, त्र, ज्ञ ८ इन ग्यारह वर्णों को लिखे, फिर उनके नीचे वर्गो के पूरे २ अक्षर लिख दे । तदनन्तर ये अक क्रम से एक २ कोठे में लिखे यथा ६ । ३ । २ । ४ । ५ । ६ । ३ । १ । ० । और १ । इन अको को लिखकर अन्त मे जोजो अक्षर बोलते हैं उनको छोड़कर दूतके नाम मात्रके अक्षर स्वर सहित जोड़े और ऐसे ही रोगी के नाम के अक्षर जोड़ ले, फिर उन दोनो में

एक और जोड दे तथा आठ का भाग दे, शेष रहे उसे विचारे, जो रोगी का अंक अधिक हो तो शुभ समझो । जो दोनों के अंक बराबर हो तो रोग अधिक हो और जो रोगका अंक कम बचे तो रोगी की मृत्यु समझो । इस चक्र को अथवा अन्य ग्रन्थों में जो चक्र लिखे हैं उनको विचार कर औषधि देवै ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥

चक्रद्वयं तु यो ऽज्ञात्वादद्यादर्कविमोहितः ।
जायते तह्यपयशास्तत्र चापि मृतेसति ॥१००॥

इन दोनों चक्रों पर बिना विचार किये जो मूर्ख वैद्य औषधि दे देते है उनको इस लोक और परलोक दोनों में अपयश मिलता है ॥ १०० ॥

आतुरोद्धार चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	कोष्ठ स-
अ	इ	उ	ऋ	लृ	ए	ऐ	ओ	ओ	अं	अः	स्वर
क	च	ट	त	प	य	श	त्त	त्र	ज्ञ	९	वर्ण
ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष	०	०	०	०	,,
ग	ज	ड	द	ब	ल	स	०	०	०	०	,,
घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह	०	०	०	०	,,
ङ	ञ	ण	न	म	०	०	०	०	०	०	,,
६	३	२	४	८	६	४	३	१	०	१	अंक

इति रावण कृते अर्क प्रकाशे भाषाटीकान्विते

प्रथमः शतकः ॥ १ ॥

द्वितीयः शतक ।



अथातः संप्रवक्ष्यामि ह्यर्क निस्सारणं प्रिये ।
पंचप्रकारद्रव्यस्य कुर्यान्निष्कासनम्बुधः ॥ १ ॥

रावण कहने लगा हे प्रिये ! अब मै तुझसे अर्क निकालनेकी विधिका वर्णन करता हू बुद्धिमान को उचित है कि पाच प्रकार के द्रव्यों में से अर्क निकाले ॥ १ ॥

पांच प्रकार के द्रव्य ।

अत्यन्तकठिनं चाद्यं कठिनं च द्वितीयकम् ।
आर्द्रं तृतीयंक्लिन्नन्तु चतुर्थ मिति निर्दिशेत् ॥२॥
पंचमं तुद्रव द्रव्यं तेषां विधि रथोच्यते ।

पाचों द्रव्यों मे से पहिला अत्यन्त कठिन, दूसरा कठिन, तीसरा गीला, चौथा क्लिन्न और पांचवा द्रव द्रव्य है, अब इन पाचों में से अर्क निकालने की विधि कहते है ।

अर्क निकालने की विधि ।

बुसवच्चूर्णयेद्द्रद्रव्य मत्यन्तकठिनं तु वै ॥ ३ ॥
द्विगुणं निक्षिपेत्तोये छायायां स्थापयेच्च तत् ।
यावच्छुष्कं भवेत्तोयं द्रव्यंस्याच्छिथिलं तथा ॥४
ततः पुनः क्षिपेत्तोयम्पूर्वद्रव्यंसमं भिषक् ।
कृत्वाष्टप्रहरैस्तस्मं सूर्यचन्द्रकरैरलम् ॥ ५ ॥

संपूज्य गणपं सूर्यं भैरवं कुलदेवताम् ।
निक्षिपेदर्कयंत्रे तच्छित्त्वास्यार्कं समाहरेत् ॥६॥

अत्यन्त कठिन द्रव्यको कूटकर भुसी के समान चूरा करले और उसमे दुगुना जल डालकर छायामे रख देवै फिर जब वह जल सूख जाय और द्रव्य गाढा सा होजाय तब उसमें उतना पानी डालदे जितना सूखे द्रव्यका प्रमाण था, फिर उसको आठ पहर तक सूर्यकी धूप और चन्द्रमा की चादनी मे रखदे अर्थात् प्रातःकाल से धूपमें रक्खै और जब सन्ध्या होजाय तब उसको चादनी में रखदे। तदनन्तर सूर्य, गणेश और कुलदेव का पूजन करके उस द्रव्यको कूटकर पूर्वोक्त अर्क निकालने के यन्त्रमें भरकर अर्क निकालले ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

अर्क के अयोग्य द्रव्य ।

वर्षाधिकं तु यद्द्रव्यमत्यन्तकठिनं च यत् ।
चन्दनादीनि सर्वाणि ह्यत्यन्तकठिनानिहि ॥७॥
कीटैर्भुक्तं घुणैर्भुक्तं यच्च गन्धविवर्जितम् ।
रहितं च रसेनापि नार्ककर्मणि योजयेत् ॥८॥

जो द्रव्य एक वर्षसे अधिक पुराना होगया हो, और जो बहुत ही कठिन होवे जैसे चन्दन आदि द्रव्य अत्यन्त कठिन है ॥ ७ ॥ जिसे कीड़ो ने खा लियाहो जिसमे घुन लग गयाहो, जिसमें गन्ध न आती हो जिसमें रस न हो ऐसे द्रव्यों को अर्क के काममें न लावै॥८

अर्कके योग्य द्रव्य ।

यथार्के संस्थितं द्रव्यं कुर्य्याद्रोक्तुस्तथा वपुः ।
अर्के तरुणभैषज्यं तस्मात्संयोजयेत्प्रिये ॥९॥

हे प्रिये ! जैसा द्रव्य अर्क मे डाला जाता है, वैसा ही शरीर उस अर्क के पीने वाले का होगा अर्थात् जो द्रव्य उत्तम होगा तौ तत्काल गुणदायक होगा इस लिये अर्क मे नवीन औषधि कोही काममें लाना चाहिये ॥९॥

कठिन द्रव्य ।

यवान्य जाजी त्रिकुट भू निम्बादिक मौषधम् ।
ज्ञेयं तत्कठिनं द्रव्यं तदर्कस्य विधिंशृणु ॥१०॥

अजवायन, जीरा, त्रिकुटा, और चिरायता, आदि कठिन द्रव्य हैं हे प्रिये ! अब मै इनके अर्क निकालने की विधि वर्णन करताहूं तू सुन ॥१०॥

कठिन द्रव्य के अर्क की विधि ।

द्विगुणन्निक्षिपेत्तोय न्द्रव्ये हि कठिने प्रिये ।
अष्टप्रहरकं तं च कुर्य्यात्पर्य्याय मेककम् ॥ ११ ॥
रक्षेद्द्रव्यं द्विगुणितं दृष्ट्वा देशन्तु कालकम् ।
पश्चाद्दत्त्वार्कयन्त्रे तदर्कं निष्कासयेच्छनैः ॥ १२ ॥

हे प्रिये ! यदि किसी कठिन द्रव्यका अर्क निकालना हो तौ उसमे दुगुना पानी डालकर पहिले क्रम से आठ पहर तक धूप और चांदनी में रखै ॥ ११ ॥ अथवा देश और कालका विचार करके

दुगने समय पर्य्यन्त आठ पहर धूप और आठ पहर चांदनी में रखें, तदनन्तर अर्क निकालने के यन्त्रमें भरकर धीरे धीरे अर्क निकालले।

आर्द्र द्रव्योंके भेद।

आर्द्र द्रव्यं द्विधा प्रोक्तं सरसं निरसं तथा।
सदुग्धं गुप्त रसकं द्विधा नीरसमुच्यते ॥ १३ ॥

आर्द्र द्रव्य दो प्रकार के होते है एक सरस, दूसरा नीरस अर्थात् रसवाला और रसहीन तथा एक दूध सहित और दूसरा गुप्तरस। इस में से नीरस के दो भेद होते हैं ॥१३॥

आर्द्र सरस द्रव्य

वास्तुकं सार्षपंशाकं निर्गुंडश्चै रण्डमार्कवम्।
धत्तूरा द्यमिदं सर्वमार्द्रं सरसमुच्यते ॥ १४ ॥

वथुआ, सरसोंका शाक, सह्मालू, अरण्ड, भांगरा और धतूरा ये सब आर्द्र सरस द्रव्य है ॥१४॥

आर्द्रसरसद्रव्य के अर्क निकालने की विधि।

एषां नालां श्चूर्णयित्वा विंशांशं निक्षिपेज्जलम्।
मुहूर्त्तमुष्णे संस्थाप्य ग्राह्योर्को वि बुधोत्तमैः॥१५॥

इन द्रव्यों की नालका चूर्ण करके वीसवें भाग पानी में भिगो दे और दो घडी तक धूप मे रखे रहने देवै, फिर अर्क निकालने के यंत्र में भर कर बुद्धिमान् अर्क निकालले ॥ १५ ॥

पत्तों का अर्क निकालने की विधि।

पत्राणि च शतांशेन तुल्यतो येन सेचयेत्।

दद्याद्घटीमर्ककरे ततोर्कं कलयेच्छनैः॥१६॥

जो पत्तोका अर्क निकालना हो तो उनमे शतांश [१०० वा भाग] पानी डाल दे और उनको एक घडी तक धूप में रखे रहने दे, फिर अर्क यत्र में भर कर धीरे धीरे अर्क निकालले ॥ १६॥

नीरस द्रव्यो के अर्क की विधि ।

वटाश्वत्थ करीराद्य माद्रद्रव्यन्तु नीरसम् ।
विंशांशं निक्षिपेत्तोयं यामं घर्मे च धारयेत् ।१७॥
ततो निष्कासयेदर्कं क्रमवृद्धयाग्निनोक्तवत् ।

बड, पीपल और करील आदि आर्द्रनीरस द्रव्य है, इनमें बीसवां भाग पानी डालकर एक प्रहर तक धूप में रक्खा रहने दे ॥ १७ ॥ फिर अर्क निकालने के यत्र मे भरकर उक्त क्रमसे अग्नि देकर अर्क निकालले ।

सदुग्ध द्रव्यो के भेद और अर्क निकालने की विधि ।

सदुग्धं तु द्विधा प्रोक्तं मृदुतीक्ष्णमितिक्रमात् ।१८।
शातलावज्रसेहुंडशौरिण्याद्यास्तुतीक्ष्णकाः ॥
खंडानि तेषां कृत्वाथ निक्षिपेदुष्णके जले ॥१९॥
दिनत्रये तु निष्कास्य तोयन्दद्याच्चकुट्टयेत् ।
यावन्न दृश्यते दुग्धं दद्यात्तोयं दशांशकम् ।
शनै निष्कासये दर्कं सतु तीक्ष्णर्कसंज्ञकः ।

सदुग्ध द्रव्य दो प्रकार के हैं मृदु और तीक्ष्ण ॥ १८ ॥ शातला, थूहर, सेंहुड और सौरिणी आदि तीक्ष्ण सदुग्ध द्रव्य है, इन

के टुकडे २ करके गरम पानी में डालदे ॥ १९ ॥ तदनन्तर तीन दिन पीछे उस पानी को निकाल कर नया पानी डालकर जब तक दूध न निकल आवे तब तक कूटे, फिर दसवा भाग पानी मिलाकर ॥२०॥ अर्क निकालले, इसका नाम तीक्ष्णार्क है।

मृदु सदुग्ध द्रव्य।

दुग्धिकार्क क्षिरिण्याद्या मृदुदुग्धाःप्रकीर्त्तिताः २१
जले चतुर्गुणे दद्यात्तान् घर्मेविनिवेशयेत्।
यावज्जलस्योष्णता स्यात्ततोयंत्रेविनिक्षिपेत्॥२२॥
शनैर्निष्कासयेदर्कं तन्नोर्कोमृदुसंज्ञकः।

दुद्धी, आक, और खिरनी आदि मृदु सदुग्ध द्रव्य हैं इनको चौगुने जल में डालकर धूप मे रखदे और जब तक जल में गरमाई रहै तब तक यन्त्र मे डाल दे फिर धीरे २ अर्क निकालले, यह मृदु संज्ञक अर्क है॥

द्रव्योंमें से अर्क निकालने की विधि।

खण्डीकृत्यैव चाम्राणां फलानांमृदुपाकिनाम् २३
सरसानां च गृह्णीयादर्कन्तोयेनवर्जितः।
काष्ठौदुम्बरिकादीनामाम्राणां चार्कभागिनाम् २४
कृत्वा स्वल्पानि खण्डानिअशीत्यंशंप्रदापयेत्।
पृथक्पृथक्चतुर्वारं स्वर्जिक्षारं च सैन्धवम् ॥२५
दत्त्वा विमर्दयेत्सर्वं चत्वारिं शांशकं जलम्।
क्षिप्त्वा तत्कलशे घर्मे यामार्द्धेनोष्णताभवेत्॥२६॥

ततो यंत्रे हितद्त्वा गृहणीया दर्कमुत्तमम् ।
अतिपक्वफलानां तु वितोयं चार्कमाहरेत् ॥२७॥

सरस और कोमल कच्चे फलों का अर्क बिना पानी डाले ही उनके टुकडे २ करके निकालले । कठूमर प्रभृतिअपक्व फलों का अर्क निकालना हो तो इनके छोटे २ टुकडे करके अस्सीवा भाग पानी डालदे और पृथक् २ चार वार सज्जी खार और सेंधानमक डालकर सबको खूब मसलले, फिर चालीसवां भाग पानी डालकर उस कलशको आधे पहर तक धूपमें रक्खा रहने दे, जब जल गरम होजाय तब यन्त्र में भरकर अर्क निकालले । अत्यन्त पके हुए फलों का अर्क बिना पानी डालेही निकालले ॥२३॥२७॥

फूलों और बहुवार आदि फलो का अर्क ।

पुष्पार्कार्थं षोडशांशजलं पुष्पेषु चार्पयेत् ।
बहुवार फलादीनि चिह्लिकादी नियानिच ॥२८॥
प्रक्षेप्यान्युदकेतानि चुचूलत्वस्य शांतये ।
ततश्चत्वारिंश दंशं जलं दत्त्वा समाहरेत् ॥२९॥

फूलो का अर्क निकालना हो तो उनमें सोलहगुना पानी डालकर यन्त्र मे भरकर विधिपूर्वक अर्क निकालले । बहुवार (ल्हिसोड़ा) आदि फल और चिह्लिका आदि फलो का अक निकालना हो तो पहिले उनकी पिच्छिलता दूर करने के लिये उनको अस्सी गुने जलमें डालकर धूपमे रखदे, फिर जब उनकी पिच्छिलता दूर होजाय तब चालीस गुना पानी डालकर अर्क निकाल ले ॥२८॥२९॥

द्रवद्रव्यों का अर्क निकालने की विधि ।

तेषामर्कमथ द्रवद्रव्यार्कोपाय उच्यते ।
द्रवद्रव्युत्क्षेपणेशात्त्यै न्यते वास कल्पना ॥३०॥

अब द्रवद्रव्यो का अर्क निकालने की विधि कहते हैं, द्रवद्रव्यों के उत्क्षेप अर्थात् उफनने के दोषको शांत करने के लिये आच्छादन विधि कहते हैं॥३०॥

आच्छादन प्रकार ।

विधानानि विचित्राणि तेषामन्तो न विद्यते ।
शतपत्र प्रसूनैर्वा जात्युत्थैर्मालतीभवैः ॥ ३१ ॥
पारिजातैः केतकिजैर्वापिधानं समाचरेत् ।

विधान अर्थात् आच्छादन विधि अनेक प्रकारकी हैं, इनका अन्त नहीं है । यथा कमल, चमेली, मालती, पारिजात और केतकी प्रभृति द्रव्यो का पिधान देना उचित है ॥

स्निग्धपदार्थों की आच्छादन विधि ।

दुग्धे दध्न्यथवा तक्रे क्षौद्रे तैले च सर्पिषि ॥३२॥
मूत्रादौ देहतोये च चम्बेल्यादिपिधानकम् ।

दूध, दही, मांसरस, तक्र, मधु, तैल, घृत, मूत्र और स्वेद प्रभृति में चमेली के फूलो का विधान देवे ।

द्रवद्रव्य के अर्क के लिये पात्र ।

कान्तयासस्त्वस्य कृतं पात्रसनुत्तमम् ॥ ३३ ॥
निष्कासयेदेवमर्क द्रवद्रव्यस्य नान्यथा ।

कान्तीसार, और लोह सत मिलाकर जो बनाया गया है ऐसे उत्तम पात्रमें द्रवद्रव्यो का अर्क निकाले और किसी पात्रमे न निकाले।

स्तम्भक द्रव्यों का वर्णन ।

अथच स्तम्भकं द्रव्यं दध्नोहि नवनीतकम् ॥३४॥
दृढ बिल्वो जलस्योक्तो मधूच्छिष्टन्तु सर्पिषः ॥
गोकण्टकस्तु दुग्धस्य तथा मद्यस्य कीचकम् ॥३५॥
तैलस्य तस्य पिण्याकं सर्वं घृत समन्वितम् ।
यंत्रे दत्त्वा द्रवद्रव्यं यथा स्थाली निवेशनम् ॥६३॥
तथा स्थलं स्थापयित्त्वा द्रव्यैर्यंत्रं प्रपूरयेत् ।
आच्छाद्यं सारिकैः पूर्णं स्थालीं कुर्य्या दधोमुखीम्।
तथाचार्कार्पितः सर्वोद्रवः फेणं परित्यजेत् ॥३७॥

दही का स्तम्भक द्रव्य मक्खन है, जलका स्तम्भक बेलगिरी है, घी का स्तम्भक शहद है, दूधका स्तम्भक गोखरू है और मद्यका कीचक (वासका सार) है ॥३४॥ तैलकी रोकने वाली खली है। इन सब द्रव्यो को घी के साथ यन्त्रमे रखे और उन द्रवद्रव्यों को यथायोग्य स्थाली मे रखै ॥३५॥ पतलेपन के कारण बहकर गिरे नही, उसी प्रकार द्रव्योको स्थाली मे रखकर यन्त्र मे भरदे और उसके मुखको औंधी थाली रखकर अच्छी तरहसे बन्द करदे इस प्रकार द्रवद्रव्य का अर्क खींचने से उसमे झाग नही उठते है ॥३६॥

अर्क की दुर्गन्धि दूर करने का उपाय ।

दुर्गंधिर्यो भवेदर्कस्तं कुर्य्याद्दु च गन्धकम् ॥३८॥

सर्वेषामेव मांसानां दुर्गंधानां च सर्वशः ।
घृताभ्यक्ता हिंगुजीरमेथिकाराजिकाकृतः ॥३९॥
नवीनायां हंडिकायां दद्याद्धूपंपुनः पुनः ।
तत्र दद्यात्तदर्कं तुयथादुर्गंधतान्नजेत् ॥ ४० ॥
तथा पुनः पुनः कार्यं जायते गंधवारणम् ।
आयाति रोचको गंधः सभवेद्वह्नि दीपनम् ॥४१॥

दुर्गन्धित मास आदि सबका अर्क दुर्गन्धित होता है, इनको सुगन्धित करना आवश्यक है। हीग, जीरा, मेथी, और राई इनके चूर्णको घी में मिलाकर एक नवीन हाड़ी में रखकर बारम्बार धूप देवै और फिर अर्कको उसमे भर देवै। इसी प्रकार बारम्बार धूप देता रहै जबतक कि दुर्गन्धि दूर न होजाय। तबतक बारम्बार धूप देने से अर्क की सब दुर्गन्धि दूर होजाती है और उसमें उत्तम गन्ध आने लगती है, यह अर्क अत्यन्त अग्नि सन्दीपन होता है ॥ ४१॥

अर्कों को गन्ध वासना।

सर्वेष्वर्क प्रयोगेषु गंध पाषाण वासनाम् ।
अर्काणांतु प्रदातव्याते भवंत्यर्क संभवाः ॥४२॥

सब प्रकार के अर्कों को गन्धककी बासना देनी उचित है, क्योंकि इससे अर्क सूर्यके समान तेजवाला हो जाता है ॥४२॥

बातादि दोष नाशक अर्कों को वासना।

सर्वत्र वातरोगेषु महिषाक्षादि वासनाम् ।
सर्वेष पित्तरोगेषु चंदनादिक बासनाम् ॥४३॥

सर्वेषु कफरोगेषु जटामांस्यादि वासनाम् ।

सब प्रकार के वात नाशक अर्कों मे महिषाक्षादि गणकी, पित्त रोगो में नाशक अर्कों को चन्दनादि गण और कफ रोग नाशक अर्कों को जटामासी आदि गणकी वासना देनी चाहिये ॥ ४३ ॥

महिषाक्षादि पंचक ।

महिषा क्षस्तथारालं निर्यासः सर्जकस्यच ॥४४॥

कृष्णा गुरुल वंग च महिषाक्षादि पंचकम् ।

गूगल, राल, सरल, निर्यास, काला अगर और लौंग ये महिषाक्षादि पचक है ।

चन्दनादि गण ।

चंदनं च तथोशीर कर्पूरो गन्ध बाकुची ॥४५॥

एलाकचूरिणीधूली सप्तैते चन्दनादयः ।

चन्दन, उशीर, कपूर, गन्धबाकुची, इलायची, कचूर और जवासा ये सात चन्दनादि गण हैं ॥

जटामांस्यादि गण ।

जटामांसी नखं पत्री लवंगं तगरं रसः ॥४६

शिलाया गन्धपाषाण. सप्तमां स्यादिका अमी ।

जटामासी, नखी, तेजपात, लोंग, तगर, शिलाजीत, और गन्धक ये सात जटामास्यादि गण है ॥

त्रिदोष नाशक धूप ।

वासयेद्द्वादशांगे त्रिदोषघ्ने न चार्ककम् ॥४७॥

नश्यन्ति यस्य धूपेन नवग्रहपिशाचिकाः

त्रिदोपज रोगमें अर्कको द्वादशाङ्ग धूपकी वासना दे, इस धूपसे नवग्रह और पिशाच सबकी शांति होजाती है ॥

द्वादशांग धूप ।

पंचांशं गंध पाषाणं तावन्महिष गुग्गुलुः ॥४८॥
चतुरंशं चंदनं च जटामांसी तथा गुरु ।
त्रिभागः सर्जकः क्षारस्तावदेव हिरालकम् ॥४९॥
उशीरं तु द्विभागं स्यात् घृतमष्टं नखं समम् ।
कर्पूरो मृगनाभिश्च एक भागौ प्रकीर्त्तितौ ॥५०॥
द्वादशाङ्गस्तु धूपोऽयं रुद्रस्यापि मनोहरेत् ।
पलांडु लशुनादीनां दुर्गंध हरणं शृणु ॥५१॥

गन्धक पाच भाग, गूगल पाच भाग, चन्दन चार भाग, जटामासी चार भाग अगर चार भाग सज्जीखार तीन भाग, राल तीन भाग, खस दो भाग, घी आठ भाग, नखी आठ भाग, कपूर एक भाग और कस्तूरी एक भाग ले। यह द्वादशाग धूप है, यह महादेव जी का भी मन हर लेती है।

हे प्रिये ! अब प्याज और लहसन की दुर्गन्धि दूर करने का उपाय वर्णन करताहू तू सुन ॥४८॥४९॥५०॥५१॥

प्याज और लहसन की दुर्गन्ध दूर करने का उपाय ।

उत्पाद्यंत रिषं सम्यक्तक्रमध्ये विनि क्षिपेत् ।
पर्यायमेकमत्यम्ले मध्येऽस्मिन्नविरसे सति ॥५२॥

दध्नान्निष्कास्याम्यतक्रे कुर्यात्तच्चाष्टयामकम्।
द्रोणपुष्पीरसेवाथ मूर्वापत्ररसेपिवा ॥५३॥
त्रिपर्यायोत्तरं तत्तु रसोनं क्षालयेत्सुधीः।
हरिद्राराजिकातोये स्थाप्यं पर्यायमेककम् ॥५४
उष्णोदकेन संक्षाल्य पर्यायं वासयेत्ततः ।
सहस्रपत्रैः पुष्पैर्वा अभावे पल्लवैरपि ॥५५॥
आलोडयेद्दशांशेन पंचांशेन च मस्तुना ।
युक्तं कृत्वा याममात्रं स्थापयेत्प्रकटातपे ॥५६॥
ततोनिष्कासयेदर्कं जात्यादि कपिधानितम्।
तस्यार्कस्य सुगंधेन एकदा मोहितो हरः ॥५७॥
को जानाति रसोनस्य ह्यर्कोयमिति भूतले ।

प्रथम लहसन और प्याज का गूदा निकाल कर उसे अत्यन्त खट्टे तक्रमें भिगो कर रखदे ऐसा करने से वह प्याज व लहसन विरस होजाता है. तदनन्तर उसको निकाल कर फिर दूसरे मठामें डालदे और आठ पहर तक पडा रहने दे। इसके पश्चात् द्रोणपुष्पी के रस, अथवा मूर्वा के पत्तों के रसमें उस लहसनको तीन वार धोवै और हल्दी तथा राई के जलमें भिगोकर रखदे । इसके अनन्तर उसको उष्ण पानी से धोवै और पिसे हुए कमल के फूल अथवा फूल न मिल सके तौ पत्तो की वासना देकर दशांश अथवा पंचमांश दही के तोड़के साथ घोटै। घोटने के पश्चात् उस सव पदार्थ को एक पहर तक तीक्ष्ण धूपमें रक्खा रहने दे। फिर उसमें चमेली के

फूलों का पिधान देकर विधिपूर्वक अर्क निकाल ले। यह अर्क बड़ा सुगन्धित होता है, एक समय इस अर्क की सुगन्धि से भूतनाथ महादेव भी मोहित होगये ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ और उन्होने कहा कि पृथ्वी पर ऐसा कौनसा मनुष्य है जो यह कह सक्ता है कि यह ल्हसन का अर्क है।

मांस के अर्क की प्रशंसा।

एकतः सर्व एवार्का मांसार्कस्तु तथैकतः ॥५८॥

एक ओर तो सम्पूर्ण प्रकारके अर्क और एक ओर केवल मांस का अर्कहै अर्थात् मांसका अर्क सब अर्कोंके समान गुणकारीहै ५८

मया स्वर्गो गृहीतस्तु प्राप्तं तत्र न चामृतम्।
तदा प्रोक्तं शिवस्याग्रे मम धिग्जीवनं प्रभो ॥५९॥
नीता वाथ प्रयुक्ता वा सुधा देवैर्मया तु सा।
न दृष्टा तत्र देवेश शिरश्छेदं करोम्यहम् ॥६०॥
ततः प्रसन्नो गिरिशो वाक्यं मां प्रतिसोऽब्रवीत्।
दत्तं मया समस्तं ते देवावध्यत्व मेवच ॥६१॥
किं ते कार्यं तु सुधया सुधातोऽधिकरोचनम्।
संप्रवक्ष्यामि मांसार्कं मद्यमार्कं तथैव च ॥६२॥
द्रव्याणां विजयादीनां लभ्यते यैः सुखं महत्।

रावण बोलाकि जब मैंने स्वर्गको विजय करलिया किन्तु मुझको अमृत प्राप्त न हुआ तब मैंने शिवजी से कहा हे प्रभो ! मेरे जीवन को धिक्कार है क्योंकि देवता अमृत को लेकर भाग गये और

उसको पीगये परन्तु मैंने उनको देखा भी नहीं इसलिये हे देवेश ! मैं अब अपने मस्तकों का छेदन करता हूं ॥ ५९ ॥ ६० ॥ तब महादेव जी ने प्रसन्न होकर कहा हे रावण ! मैंने तुझको यह बर-दान दिया कि तू सब देवताओं को अवध्य होगा अर्थात् न किसी से हारेगा, न किसी से मरेगा और सब देवता तेरे आधीन रहेंगे ॥ ६१ ॥ तू अमृत का क्या करेगा, मै तुझे अमृत से भी अधिक रोचक मास का अर्क और मद्य का अर्क बतलाता हूं ॥ ६२ ॥ जिससे धन और विजय सबका सुख तुझको प्राप्त होगा ॥

मांस के भेद ।

मांसं तु त्रिविधंज्ञेयं मृदुलं कठिनं घनम् ॥६३॥
तेषामर्कं यथा प्रोक्तंयंत्रान्निष्कासयेच्छनैः ।

मांस तीन प्रकारका होता है, मृदुल (नरम) कठिन (कठोर) और धन ॥ ६३ ॥ इन मासों का अर्क यथोक्त विधि के अनुसार यंत्र द्वारा निकाल ले ।

नरम मॉस के अर्क की बिधि ।

मृदुलंयद्भवेन्मासं चत्वारिंशांशकं पटुः ॥६४॥
स्थूलखंडीकृते तस्मिन्दत्वा तत्क्षालयेज्जलैः ।
षष्ठांशेनाष्टगंधेन तद्विलोड्य च निःक्षिपेत् ॥६५॥
रसमिक्षोरष्टमांशं तदभावे पयः क्षिपेत ।
जातीपत्रं लवंगं च स्वगेला नागकेशरम् ॥६६॥
मरिचंमृगनाभिश्च विदुर्गंधाष्टकं त्विदम् ।

काये पुष्पपिधानाद्यमर्कं निष्काशयेत्ततः ॥६७॥
जायते सौ महास्वादुः सुधासमरसः प्रिये ।

जो नरम मास हो उसके वडे २ टुकडे करके चालीसवें भाग पानी में धोवै फिर षष्ठांश अष्टगन्ध उसमें अच्छी तरह मिलादे ६५ तदुपरान्त आठवा भाग ईख का रस डालदे और जो ईख का रस न मिल सके तौ दूध डाल दे । (अष्टगन्ध के नाम) जावित्री, तेजपात, लौंग, दालचीनी, इलायची, नागकेशर, मिरच और कस्तूरी ये अष्टगन्ध है। यंत्र पर पुष्पो का पिधान देकर अर्क निकाललें ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ हे प्रिये ! यह अर्क अत्यन्त स्वादिष्ट और अमृत के समान गुणकारी होता है ।

कठोर मांस के अर्क की विधि ।

दृढमांसस्य खंडानि लघून्येव प्रकल्पयेत् ॥६८॥
दद्याच्च तुवरं तत्र लवणंप्रोक्तया दिशा ।
क्षालयेदारनालेन त्रिवारं कोष्णवारिणा ॥६९॥
क्षालयेत्सप्त वाराणि हरेदर्कं तु पूर्ववत् ।

कठोर मास के छोटे २ टुकडे कर ले ॥ ६८ ॥ फिर उसमे सौराष्ट्र देशकी मिट्टी और सैधव लवण मिलादे और काजीके पानी से तीन बार तथा गुनगुने जलसे सात बार धोकर पूर्व नियमानुसार अर्क निकालले ॥

घन मॉस के अर्क की विधि ।

घनमांसस्य खंडानि कुर्यादतिलघूनि च ॥७०॥

आलोड्य शंखद्रावेण चालयेत्पयसा पुनः ।
सप्त वाराणि लवणं क्षालयेदेव पूर्ववत् ॥७१॥
तद्दत्वा यंत्रमध्ये तु हरेत्पूर्ववदर्ककम् ।

घन मास के अत्यन्त छोटे २ टुकडे करके प्रथमउस शंखद्राव मिलाकर खूब हिलावै फिर पानी से धोले । इसके उपरान्त उसमें नमक मिलाकर सात बार जलसे धोवै ॥ ७१ ॥ फिर पूर्व नियमानुसार यंत्र में डालकर अर्क निकालले ।

शंखद्राव की विधि ।

स्वर्जिक्षारं यवक्षारं श्वेतक्षारं च टंकणम् ॥७२॥
सौभाग्यक्षार कंसीरं क्षारं शंखभवं तथा ।
अर्क सेहुंडपालाशक्षारश्च तुवरी तथा ॥७३॥
अपामार्गभवं क्षारं तथाष्टौ लवणानि च ।
लवणाष्टकमेतच्च सैंधवं च सुवर्चलम् ॥७४॥
विडं समुद्रं पजात मुद्भिजं रोमकं गडम् ।
कृत्वा सर्वाणि चैकत्र निंबूनीरेण भावयेत् ।७५।
एकविंशति वाराणि काचकुप्यां निवेशयेत् ।
नखांशनिंबुकरसैः सर्वमार्द्रीकृतं तु तत् ॥७६॥
अधः सच्छिद्र पिटरीमध्ये कुप्पीं निवेशयेत् ।
मृदुकर्पटसंयुक्तां सहेदग्नि यथाविधि ॥७७॥
तस्याग्रे कुप्पिका योज्या दीर्घ कंठा मनोहरा ।
सा कुप्पिका जलेस्थाप्य मेलयेच्च द्वयोर्मुखम् ।७८

जलमुष्णं यथा न स्यात्तथैवो परिणूयिका ।
अग्नयः क्रमते देया यामं यामंच पंचमम् ॥७९॥
अनेनैव प्रकारेण क्षाराकाणां समुद्भवः ।
दद्यादस्थीनि मांसानि शंखशुक्त्यादिकान्यपि॥८०॥
सर्वाण्यपि विलीयंते शंखद्रावे न संशयः ।

सज्जीखार, जवाखार, कौडी की भस्म, सुहागा (सौभाग्यक्षार) सौरक्षार (सोराखार) शख की भस्म, आक का खार, थूहर का खार, ढाक का खार, सौराष्ट्र मृत्तिका ॥ ७३ ॥ ओंगा का खार, और सैन्धव, सौवर्चल ॥ ७४ ॥ विड सामुद्र, उद्भिज रोमक, विड्, और खारी ये आठो नमक लेकर सबको एकत्र करना नीबूके रसकी इक्कीस भावना दे ॥ ७५ ॥ तदनन्तर काचके बोतल में भरकर उसमे नौवा भाग नीबू का रस निचोड़कर सब द्रव्यको गीला करदे ॥ ७६ ॥ और फिर उस बोतल पर कपड़ मिट्टी करदे । परन्तु बोतल पर लेप इस प्रकार करै कि वह अग्निका ताप सहन कर सकै ॥ ७७ ॥ फिर एक अंगीठी में छेद करके उसमे उस बोतलको रखदे, उसके नीचे कूपिका अर्थात् अर्क लेने का पात्र रखै जिसका मुख छोटा, गला ऊँचा और मनोहर हो किन्तु उस पात्रको जलमें रखै और दोनों का मुख मिलादे ॥ ७८ ॥ नीचेके पात्रमे पानी इतना हो कि बोतलकी गरमी से गरम न होजाय, और युक्ति पूर्वक क्रमसे पाच पहर तक अग्नि लगावै ॥ ७९ ॥ इसी प्रकार क्षारार्क बनता है, इसमें हाड, मास, शङ्ख, सीपी, आदि

कुछ डालदो वह सब शङ्खद्राव में गलजाता है इसमें सन्देह नहीं है॥

मृदुमांसवाले जीवोंके नाम ।

पारावताजचटकाः शश शूकर टिट्टिभाः ॥८१॥
क्षुद्रमत्स्यादिकाः सर्वे मांसेषु मृदुला स्मृत ः ।

कबूतर, बकरा, चिरोटा, खरगोश, सूहर, टीडी और छोटी मछली इन सबका मास नरम होता है ।

कठोर मांसवाले जीवोंके नाम ।

मृगरोहीतकाद्याश्च मत्स्याः शल्लकिशंबराः ॥८८॥
एते कठिन मांसाः स्युर्जीवास्तु जल चारिणः ।

हरिण, रोहीतक (मत्स्यभेद) शल्लकी और शम्बर मछली ये सब जलचर जीव कठोर मास होते हैं ।

घनमांस वाले जीवोंके नाम ।

गजकुंभीरघण्टाद्याः सगंधा कर्कराद्यः ।८३॥
गोधागोश्वाखुलापाद्या घनमांसाः प्रकीर्तिता; ।

हाथी, कुम्भीर, [मगर] और घड़ियाल आदि, तथा सगन्ध, केंकडा, गोह, गौ अश्व ओर भैस ये घन मास वाले जीव कहलातेहैं।

अन्नादिसम्भवो योर्कस्तन्मद्यं परिकीर्तिम् ॥८४॥
तस्य भेदांन्प्रवक्ष्यामि कथितात्तत्समुद्धरेत् ।
तद्दामवा निवृत्त्यर्थं मष्टगंधं प्रयोजयेत् ॥८५॥
पूर्वोक्तै र्धूपयेद्धूपैर्जायते गंधवर्जितम् ।

जो अर्क अन्न आदि से निकाला जाता है, उसे मद्य कहतेहैं, मैं अब उसके भेदोंको कहताहूं । इनका क्वाथ करके अर्क निकालले।

इस अर्क की दुर्गन्धि दूर करनेके लिये अष्टगन्धका प्रयोग करे अथवा पूर्वोक्त धूपों की धूप देने से भी इसकी दुर्गन्धि दूर होजाती है॥८५

तुषोदक और सौवीर मद्य के लक्षण।

अर्द्ध तत्र जलं देयं सिद्धे देयोष्टगंधकः।
तुषोदक यवैरामैः सतुषैः शकलीकृतैः॥८६॥
सौवीरंतु यवैश्चैव निस्तुषैः शकलीकृतैः।
गोधूमैरपि सौवीरं जायते स्वल्पमादकम्॥८७॥

अपक्क जौको तुष सहित कूटकर आधा पानी डालकर अर्क निकाल ले उसे तुषोदक कहते है॥८६॥ और जौके छिलके दूरकर उनको कूटकर आधा भाग पानी डालदे और यन्त्र द्वारा अर्क निकाल ले, इसे सौवीर कहते है। गेहूं का भी सौवीर मद्य बनताहै परन्तु वह कम नशा करने वाला होता है। जब इन दोनों प्रकारके मद्यों को बनाले तब उनको अष्टगन्ध के द्रव्यो से सुगन्धित कर प्रयोग करै॥८७॥

शुक्त के लक्षण।

आरनालन्तु गोधूमैरामै स्यान्निस्तुषीकृतैः।
धान्याम्लंशालि चूर्णादिको द्रवादिकृतं भवेत् ८८।
शण्डाकीराजिकायुक्तैः स्यान्मूलकदलद्रवैः।
सर्षपस्वरसैर्वापि शालिपिष्टिकसंयुतैः॥८९॥
कन्दमूल फलादींश्च सस्नेह लवणानि च।
एकीकृत स्तुयोऽर्कः स्यात्सशुक्तमभिधीयते॥९०।

कच्चे गेहुओं के तुप दूरकर जो अर्क खींचा जाता है उसे आरनाल कहते है। शालिचावल और कोदो के चूर्ण से जो अर्क निकाला जाता है उसे धान्याम्ल कहते है। राई, मूली के पत्तों का रस और सरसो के पत्तों का रस इनमें चावल की पिठ्ठी मिलाकर जो मद्य बनाया जाता है उसे शण्डाकी कहते है। और कन्द, मूल, फल, घृतादि स्नेह और लवण इनको मिलाकर जो मद्य बनाया जाता है उसे शुक्त कहते है ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥

अरिष्ट के लक्षण।

पक्कौषधाम्बुसंसिद्धो योऽर्कः सः स्यादरिष्टकम्।
अरिष्टं लघुपाकेन सर्वतोहि गुणाधिकम् ॥९१॥

जो अर्क पकी हुई औषधि और जल से सिद्ध किया जाताहै उसे अरिष्ट कहते है। आरिष्ट लघुपाकी और सर्वत्र अधिक गुण-दायक है ॥ ९१ ॥

सुरा और वारुणी के लक्षण।

शालिपिष्टकपिष्ट्यादिकृतो योऽर्कः सुरा तु सा।
पुनर्नवाशिवापिष्टैर्विहिता वारुणी स्मृता ॥ ९२ ॥

शालिधान्य और पेठा आदि इनकी पिठ्ठीका जो अर्क निकाला जाता है उसे सुरा कहते हैं और साठ तथा हरड की पिठ्ठी से जो अर्क निकाला जाता है उसे वारुणी कहते हैं ॥ ९२ ॥

सीधु के लक्षण।

इक्षोः पक्वै रसैः सिद्धः स्सीधुः पक्वरसश्च सः।

आमैस्तैरे वयः सिद्धः स च शीतरसः स्मृतः ॥९३॥

जो अर्क ईख के पके हुए रस से सिद्ध किया जाता है उसे सीधु या पक्वरस कहते है और जो ईख के कच्चे रस से सिद्ध किया जाता है उसे शीतरस कहते है ॥ ९३ ॥

तामसादि मद्य के लक्षण।

पर्यायाद्यो भवेन्मद्यस्तामसो राक्षसप्रियः।

मण्डादि राजसोज्ञेयस्ततो नैसात्विको भवेत् ॥९४॥

जो अर्क कई बार खींचा गया है उसको तामस कहतेहै और यह राक्षसोंको प्रिय होता है, जो मण्ड आदिहै वे राजस कहाते हैं और जो इनसे भी हलका होता है अर्थात् जिससे अपने स्वरूपकी विस्तृति नही होती उसे सात्विक कहते है ॥ ९४ ॥

उक्त मद्यो के पीने का काल।

सात्विकं गीतहासादौ राजसं साहसादिके।

तामसं निन्द्यकर्माणि निद्रां च बहुधाचरेत् ॥९५॥

गीत और हास्यादि में सात्विक मदिरा का पान करै, साहस-जन्य कर्मों मे राजस मदिरा ग्रहण करै और निन्दित कर्मा में तामस मदिरा पीवै, इससे निद्रा बहुत आती है ॥९५॥

मादक द्रव्यों के अर्क की विधि

भङ्गादि मत्तद्रव्याणां यवानी पादयोगतः।

अर्कनिष्कासयेद्धीमान् वर्द्धकः स्यान्मदस्य सः९६

धत्तूरादिक बीजानि क्षिप्त्वा पयसि धापयेत् ।
कण्ठशोषविबन्धादि रहितोऽर्को भवेत्सहि ॥ १७॥

भाग आदि द्रव्यो मे चतुर्थांश अजवाइन मिलाकर विधिपूर्वक यंत्र द्वारा अर्क निकाल ले, यह अर्क नशे को बहुत बढाताहै ॥१६॥

धतूरे आदि के बीजों में जल डालकर नियमानुसार अर्क निकाल ले यह कण्ठशोष और विबन्ध आदि रोगों को दूर करता है ॥१७॥

नोट—इस शतक के तीन श्लोक ठीक २ नहीं मिलते हैं ।

इति रावणकृते अर्कप्रकाशे भाषाटीका सहितं
द्वितीयं शतकं समाप्तम् ॥ २ ॥

तृतीय शतकम् ।



रावण का वचन ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि केवलार्क गुणान्प्रिये ।

रावण बोला हे प्रिये ! अब मैं केवल अर्कों के गुणों का वर्णन करता हूं ।

हरड के अर्क के गुण ।

हरीतक्याः शूलकृच्छ्र कामला नाहनाशनः ॥१॥

हरडका अर्क शूल, मूत्रकृच्छ्र, कामला और आनाह (अफरा) इन रोगों को दूर करता है ॥ १ ॥

बहेडे के अर्क के गुण

विभीतकस्य तृट्छर्दि कफकास विनाशनः ।

बहेडे का अर्क तृषा, वमन, कफ और खासी इन रोगों को दूर करता है ॥

आमले के अर्क के गुण

आमलस्य त्रिदोषास्रपित्त मेहान्नि नाशयेत् ॥२॥

आवले का अर्क त्रिदोष, रक्त पित्त और प्रमेह इनको दूर करता है ॥ २ ॥

सोठ के अर्क के गुण

शुण्ठ्याविबन्धा मवात शूल श्वास बलासहृत् ।

सोंठ का अर्क मलावरोध, आमवात, शूल, श्वास और कफ को नाश करता है ।

अदरख के अर्क के गुण ।

आर्द्रकस्य ज्वरंदाहं हरेद्रुच्योऽग्निदीप्तिकृत् ॥३॥

अदरख का अर्क ज्वर, और दाह को दूर करता है तथा रुचि कर्त्ता और अग्नि का बढाने वाला है ॥३॥

पीपल के अर्क के गुण ।

पिप्पल्याः श्वासकासामवातार्शो ज्वरशूलहृत ।

पीपल का अर्क श्वास, खासी, आमवात, बवासीर, ज्वर और शूल इन रोगों को दूर करता है ।

मिरच के अर्क के गुण।

मरिचस्य श्वास कृमीन्हरेत्सर्वान्गदानपि ॥४॥

मिरच का अर्क श्वास, कृमि और अन्य सब रोगों का नाश करता है ॥ ४ ॥

पीपलामूल के अर्क के गुण।

ग्रन्थिकस्य प्लीह गुल्म कफ वात हरः परः ।

पीपलामूल का अर्क प्लीहा, गुल्म, कफ, और बात को नाश करने वाला है ॥

चव्य के अर्क के गुण।

चव्यार्कोऽत्यंत रुचि कृद्विशेषाद्गुदजा पहः ॥५॥

चव्य का अर्क अत्यन्त रुचि बढाने वाला और विशेष करके बवासीर को दूर करने वाला है ॥५॥

गज पीपल के अर्क के गुण।

अर्कस्तु गजपिप्पल्या वातश्लेष्माग्नि मान्द्यहृत् ।

गजपीपल का अर्क बात, कफ और जठराग्नि की मन्दताको दूर करता है ।

चीते के अर्क के गुण।

चित्रकस्याग्नि कृत्का संग्रहणी कृमिनाशनः ॥६॥

चीते का अर्क जठराग्निका बढाने वाला और खासी, संग्रहणी और कृमि रोग का नाश करने वाला है ॥६॥

अजवायन के अर्क के गुण ।

यवान्याः पाचनारुच्यो दीपनस्त्रिक शूलहृत् ।

अजवायन का अर्क पाचन, रुचिवर्द्धक, अग्नि सदीपन, और त्रिकशूल नाशक है ।

अजमोद के अर्क के गुण ।

अजमोदोद्भवो वात कफ हा बस्तिशोधनः ॥७॥

अजमोद का अर्क वात और कफ का दूर करने वाला और बस्ति का शोधन कर्त्ता है ॥ ७ ॥

खुरासानी अजवायन के अर्क के गुण ।

पारसीकयवान्यास्तु ग्राही पाचन मादनः ।

खुरासानी अजवायन का अर्क ग्राही अर्थात् मल का रोकने वाला, पाचक और मत्तता करने वाला है ।

जीरे के अर्क के गण ।

जीरकस्य तु संग्राही गर्भाशय विशुद्धिकृत् ॥८॥

जीरे का अर्क मल का रोकने वाला और गर्भाशय का शुद्ध करने वाला है ॥ ८ ॥

कालेजीरे के अर्क के गुण ।

कृष्णजीरस्य च चुष्यो गुल्मछर्द्यतिसारजित् ।

काले जीरे का अर्क नेत्रों को हितकारी और गुल्म, वमनरोग और अतिसार का नाश करने वाला है ।

कलोजी के अर्क के गुण ।

कारव्याबल्कुञ्चार्को ज्वरघ्नः पाचनोसरः ॥९॥

कलौंजी का अर्क बलका बढाने वाला, ज्वर का नाश करने वाला, पाचन और विरेचन कर्त्ता है ॥ ९ ॥

धनिये के अर्क के गुण।

धान्यकस्य तृषा दाहो वमिश्वास त्रिदोषहृत्।

धनिये का अर्क तृषा, दाह, वमन, श्वास और त्रिदोष का नाश करने वाला है।

सोफ के अर्क के गुण।

मिस्या ज्वरानिलश्लेष्म व्रण शूलाक्षि रोगहृत॥१०॥

सोफ का अर्क ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल, और आख के रोगो को दूर करने वाला है ॥१०॥

सोआ के अर्क के गुण।

मिश्रेयाया वह्निमान्द्ययोनिशूल कृमीन् हरेत्।

सोआ का अर्क जठराग्निकी मन्दता, योनिशूल और कृमि रोग का नाश करता है।

लाल मिरच के अर्क के गुण।

ज्वाला मरीचकस्यापस्मार भूत त्रिदोषहृत् ॥११॥

लाल मिरच का अर्क अपस्मार (मृगी) और भूत दोष तथा त्रिदोष का नाश करने वाला है ॥११॥

मेथी के अर्क के गुण।

मेथिकायाः श्लेष्म वातज्वराम कफ नाशनः।

मेथी का अर्क कफ, वात ज्वर और आम कफ का नाश करता है।

वन मेथी के अर्क के गुण ।

वनमेथ्यामर्कगेगान हरेत्कुञ्जर वाजिनाम् ॥१२॥

वन मेथी का अर्क हाथी और घोडा के सम्पूर्ण रोगों को दूर करता है ॥ १२ ॥

हालों के अर्क के गुण ।

चद्रसूरस्य हिक्का स्रक्वात हृत्पुष्टिवर्द्धनः ।

चन्द्रसूर अर्थात् हालो का अर्क हिचकी, रक्त, और वात नाशक तथा पुष्टि का वढाने वाला है ।

हींग के अर्क के गुण ।

हिंगुनः पाचनोरुच्यः कृमि शूलोदृग पहः ॥१३॥

हींग का अर्क पाचन, रुचिवर्द्धक, कृमिरोग नाशक और शूल तथा उदर रोगो का नाश करने वाला है ॥ १३ ॥

वच के अर्क के गुण ।

वचाया वह्नि वमिकृद्विवन्धाध्मान शूलहृत् ।

वचका अर्क जठराग्निका वढानेवाला, वमन कारक, और बिबिन्ध, अफरा और शूलको दूर करता है ।

खुरासानी वचके अर्कके गुण ।

पारसीक वचायास्तु भूतोन्माद वलं हरेत ॥ १४ ॥

खुरासानी वचका अर्क भूतोन्माद और बलका नाश करताहै ।

कुलीजनके अर्क के गुण ।

कुलिञ्जनस्य स्वरकृहृत्कंठ मुख शोधनः ।

कुलीजनका अर्क स्वरको शुद्ध करनेवाला और हृदय, कंठ और मुखका शोधक है ।

स्थूल ग्रन्थिके अर्कके गुण ।

स्थूल ग्रन्थिभवश्चार्को विशेषात्कफकासनुत् ॥१५॥

स्थूल ग्रन्थि अर्थात् महाभरी बचका अर्क विशेष करके कफ और खांसीको दूर करनेवाला है ॥ १५ ॥

चोबचीनीके अर्कके गुण ।

द्वीपान्तर वचायास्तु हरेच्छूलं फिरङ्गकम् ।

द्वीपान्तर बच अर्थात् चोबचीनीका अर्क शूल और फिरंग रोगको दूर करता है ।

हाऊबेरके अर्कके गुण ।

वपुषाया हरेत्प्लीहं विषमेहं च दारुणम् ॥१६॥

हाऊबेरका प्लीहा, विष और दारुण मेहको दूर करता है॥१६॥

क्षुद्र हाऊबेरके अर्कके गुण ।

हवुषायाः समीरार्शो ग्रहणी गुल्म शूल हृत् ।

क्षुद्र हाऊबेरका अर्क वात, अर्श, सग्रहणी, गुल्म और शूल इन सबका नाश करता है ।

विडंगके अर्कके गुण ।

विडङ्गार्को दरश्लेष्म कृमि वात विबन्धनुत् ॥ १७ ॥

वायविडंगका अर्क उदररोग, कफ, कृमि, वात और मलावरोधको दूर करता है ॥ १७ ॥

तुम्बरुके अर्कके गुण ।

तुंबरोगुरुता श्वास प्लीहोदर कृमीन हरेत् ॥

तुम्बरु फलका अर्क शरीरका भारीपन, श्वास, प्लीहा, गुल्म और कृमि इन रोगोंको दूर करता है ।

वंशलोचनके अर्कके गुण ।

वंशलोचन जस्तृष्णा क्षय कास ज्वरान् हरेत् ॥१८॥

वंशलोचनका अर्क तृषा, क्षय, खासी और ज्वरको दूर करता है ॥ १८ ॥

समुद्रफेनके अर्कके गुण ।

समुद्रफेनजः शीतोलेखनः कफ हृत्परः ।

समुद्रफेनका अर्क शीतल, विरेचन कर्त्ता, और कफको दूर करनेवाला है ।

जीवकके अर्कके गुण ।

जीवकोत्थः शुक्र कफबल कृच्छीतलः समः ॥ १९ ॥

जीवकका अर्क शुक्रका उत्पन्न करनेवाला, कफ कारक, बलका बढानेवाला, शीतल और सम है ॥ १९ ॥

ऋषभकके अर्कके गुण ।

आर्षभः पित्तदाहा सृक्कास वात क्षया पहः ।

ऋषभकका अर्क पित्त, दाह, रुधिरविकार, खांसी, वात और क्षय रोग दूर करता है ।

मेदाके अर्कके गुण ।

महामेदो द्भवोऽर्कस्तु वृष्यः स्तन्य कफापहः ॥२०॥

मेदाका अर्क वृष्य (बलकर्त्ता) स्तन्य (स्तनोंमें दूध बढाने वाला) और कफनाशक है ॥ २० ॥

महामेदाके अर्कके गुण ।

महामेदोद्भवः शीतो रक्तवात ज्वर प्रणुत् ।

महामेदाका अर्क शीतल और वातरक्त तथा ज्वरका नाश करनेवाला है ॥

काकोलीके अर्कके गुण ।

काकोल्याः प्रायशः शीतः पित्तशोथ ज्वरापहः ॥२१॥

काकोलीका अर्क प्रायः शीतल, और पित्त, शोथ तथा ज्वर का दूर करनेवाला है ॥ २१ ॥

क्षीरकाकोलीके अर्कके गुण ।

क्षीरकाकोलि काजातो वृंहणो दाह वातहा ।

क्षीरकाकोलीका अर्क वृंहण (पुष्ट करनेवाला) तथा दाह और वातका नाश करनेवाला है ॥

ऋद्धिके अर्कके गुण ।

ऋद्धया बल्यस्त्रि दोषघ्नो रिक्तपित्त विनाशनः ॥२२ ।

ऋद्धिका अर्क, बलकर्त्ता, त्रिदोषका नाश करनेवाला और रक्तपित्त नाशक है ॥ २२ ॥

वृद्धिके अर्कके गुण ।

वृद्धया गर्भप्रदः शीतोक्षत कास क्षयापहः ।

वृद्धिका अर्क गर्भ धारण करनेवाला, शीतल, व तथा क्षत, खांसी और क्षयरोगका दूर करनेवाला है ।

मुलहटीके अर्क गुण ।

मधुयष्टया: केशकर: स्वर्य: पित्त निलास्रजित् ॥२३॥

मुलेहटीका अर्क केशवर्द्धक स्वरका शुद्ध करनेवाला और पित्त, वात और रक्त विकारोंको दूर करनेवाला है ॥ २३ ॥

जलयष्टीके अर्क के गुण ।

जलयष्टया विषच्छर्दितृष्णा ग्लानि क्षया पह. ।

जलयष्टीका अर्क, विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षयका दूर करनेवाला है ।

कम्पिल्लकके अर्क के गुण ।

कम्पिलस्य विरेकी स्यान्मेहा नाह विकारनुत् ॥ २४ ॥

कबीलेका अर्क, दस्तावर, और प्रमेह तथा अनाह रोगका नाश करनेवाला है ॥ २४ ॥

अमलतासके अर्क के गुण ।

आरग्वधस्य पित्तास्रवातोदवर्त शूलनुत् ।
कण्डूमेह श्वास कास कृमि कुष्ट ज्वरापाह: ॥ २५ ॥

अमलतासका अर्क पित्त, रक्त और वातविकार तथा उदावर्त्त और शूल इनका नाश करता है, तथा खुजली, प्रमेह, श्वास, खासी, कृमि, कोड और ज्वर इनका नाश करता है ॥ २५ ॥

चिरायतेके अर्क के गुण ।

भूनिम्बस्य तृषा कुष्ठ ज्वर व्रण कृमि प्रणुत् ।

चिरायतेका अर्क, तृषा, कोढ, ज्वर, व्रण और कृमि इन रोगोको दूर करता है ॥

गंभारीके अर्कके गुण ।

भद्रायार्क स्तु पित्तास्रक् कृमिघ्नी सर्प्प कुष्ठनुत् ॥२६॥

गम्भारीका अर्क पित्तविकार, रक्तविकार, कृमि और विसर्प इन रोगोंको दूर करता है ॥ २६ ॥

मैनफलके अर्कके गुण ।

मदनोत्थः छर्दि नेत्र चातुर्थिकज्वरादि हृत् ।

मैनफलका अर्क वमन, मेत्ररोग और चातुर्थिक (चौथैया) ज्वर आदि रोगोंका नाश करनेवाला, है ।

रास्नाके अर्कके गुण ।

रास्नोद्भवः समीरास्रवात शूलोदरा पहः ॥ २७ ॥

रास्नाका अर्क, वातविकार, रक्तविकार, वायुशूल और उदर रोगोका नाश करता है ॥ २७ ॥

नागदौनके अर्कके गुण ।

नागभिन्नोद्भवो भोगी लूताद्या खुविकारनुत् ।

नागदौनका अर्क सर्प, मकड़ी और आदिके विष विकारोंको दूर करता है ।

माचिकाके अर्कके गुण ।

माचिकाजस्तु पित्तास्र पक्वातीसार हालघुः ॥२८॥

माचिका (भोइयाका) अर्क पित्तविकार, रक्तविकार और

पक्वातिसारका नाश करता है तथा लघु (हलका) है ॥ २८ ॥

तेजबलके अर्कके गुण ।

तेजस्विन्याः श्वास कास कफ हृद्वह्नि दीपनः ।

तेजवलका अर्क, श्वास, खासी और कफ इनको दूर करता है, तथा जठराग्निको प्रदीप्त करता है ॥

मालकांगनीके अर्कके गुण ।

ज्योतिष्मत्या वान्तिकरो वह्नि बुद्धि स्मृति प्रदः २९

मालकागनीका अर्क, वमन, करानेवाला, और जठराग्नि, बुद्धि तथा स्मरणशक्तिका बढानेवाला है ॥ २९ ॥

कूठके अर्कके गुण ।

कुष्ठस्य हन्ति वातास्र कास कुष्ठ मरुत्कफान् ।

कूठका अर्क वातविकार, रक्तविकार, खासी, कोढ और वातकफके रोगोको दूर करता है ॥

पोहकरमूलके अर्कके गुण ।

पौष्करस्या रुचि श्वासान् विशेषात्पार्श्वशूल नुत् ॥३०॥

पोहकरमूलका अर्क अरुचि, श्वास, और विशेष करके पार्श्वशूल (पसलीका दर्द) को दूर करता है ॥ ३० ॥

स्पर्शाक्षीरीके अर्कके गुण ।

हेमाह्वाया एष वान्तिकरः कण्डू विनाशनः ।

स्वर्णक्षीरी (चोक) का अर्क वमन कारक और कण्डू (खुजली) को दूर करनेवाला है ॥

शृङ्गी के अर्क के गुण

शृङ्ग्याहरेदूर्ध्वं वातहिक्का तृष्णा स्वरक्षयान् ॥३१॥

काकडाशींगी का अर्क ऊर्ध्ववात, हिक्का [हिचकी] तृष्णा, और स्वरक्षय (कण्ठ का बैठजाना) इनको दूर करता है ॥३१॥

कायफल के अर्क के गुण।

कट्फलोत्थः श्वास कास प्रमेहार्शो रुचिर्हरेत्।

कायफल का अर्क श्वास, खासी, प्रमेह, अर्श और अरुचिको दूर करता है।

भारङ्गी के अर्क के गुण।

भाङ्ग्र्या हरेत्कफ श्वास पीनस ज्वरमारुतान् ॥३२॥

भांडगी का अर्क कफ, श्वास पीनस, ज्वर और वात विकारों को दूर करता है ॥३२॥

पाखान भेद के अर्क के गुण।

पाषाणभेद जायोनिरोग कृच्छ्राश्म गुल्महा।

पाषाणभेदका अर्क योनिरोग, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी (पथरी) और गुल्मरोग का नाश करता है।

कुसुम के अर्क के गुण।

कौसुम्भु जोवर्णकरो रक्त पित्त कफापहः ॥३३॥

कुसुम का अर्क कान्ति बढाने वाला, रक्त, पित्त और कफ विकारो को दूर करने वाला है ॥३३॥

धाय के फूलों के अर्क के गुण।

धातकी जस्तृषाशीत विषकृमि विसर्पजित्।

धाय के फूलो का अर्क तृषा, शीत, विष, कृमि और विसर्प रोग इनको दूर करता है।

मजीठ के अर्क के गुण

माञ्जिष्ठजो विषश्लेष्म रक्तातीसार कुष्टहा ॥३४॥

मजीठका अर्क, विष, कफ रक्तातिसार और कोढ इन रोगों को दूर करता है ॥३४॥

लाख के अर्क के गुण।

लाक्षाजः कृमिवी सर्पव्रणोरः क्षतकुष्ठहा।

लाखका अर्क कृमि, विसर्प, व्रण, उरःक्षत और कुष्ठ इन रोगों को दूर करता है।

हल्दी के अर्क के गुण।

हरिद्राया मेहशोथत्वग्दोष व्रण पाण्डुनुत् ॥३५॥

हल्दी का अर्क प्रमेह, शोथ, त्वचा के दोष, व्रण और पाण्डु रोग इनको दूर करता है ॥ ३५ ॥

वन हल्दी के अर्क के गुण।

आरण्यकहरिद्रायाः कुष्ठवातास्रनाशनः।

वन हल्दी का अर्क कोढ और वात रक्त का नाश करता है।

कपूर हल्दीके अर्कके गुण।

कर्पूरक हरिद्राय. सर्व्वकण्डू विनाशनः॥ ३६ ॥

कपूर हल्दीका अर्क सब प्रकारकी खुजलीका नाश करता है॥ ३६ ॥

दारुहल्दीके अर्कके गुण।

दार्व्या विशेष तोले पान्नेत्र कर्णास्य रोगनुत।

दारुहल्दीका अर्क विशेष करके लेप करनेसे नेत्रोंके और कान के रोगोंको दूर करता है।

रसोत के अर्कके गुण।

रसाञ्जनो द्भवा नेत्रविकार व्रणदोषहृत ॥ ३७ ॥

रसोतका अर्क नेत्र विकार और व्रण के दोषोंको दूर करता है॥ ३७ ॥

बावचीके अर्कके गुण।

वाकुच्याः कृमि विष्टम्भ, पाण्डु शोथ, कफापहः।

बावचीका अर्क कृमि, विष्टम्भ, पाण्डुरोग, शोथ (सूजन) और कफ इनको दूर करता है।

पंवाडके अर्कके गुण।

प्रपुन्नाटस्य हन्त्येव कण्डू दद्रू विषानिलान ॥३८॥

पंवाडका अर्क कण्डू, दाद विष, और वात इनका नाश करता है॥ ३८ ॥

अतीसके अर्कके गुण।

विषजो दीप्तिकृच्चार्कःकफ पित्तातिसार हा।

अतीसका अर्क जठराग्निको प्रदीप्त करनेवाला, तथा कफ, पित्त और अतिसारका नाश करनेवाला है ।

लोधके अर्कके गुण ।

लोध्रजः शीतलोग्राही चक्षुष्यः कफपित्त नुत् ॥ ३९ ॥

लोधका अर्क शीतल, ग्राही [मलका अवरोध करनेवाला] नेत्रोको हितकारी और कफ तथा पित्तका नाश करनेवाला है ॥३९॥

बृहत्पत्राके अर्कके गुण ।

बृहत्पत्रोद्भवो नेत्रो दरातीसार शोथ हृत् ।

बृहत्पत्रा (त्रिपर्णिका कन्द) का अर्क नेत्ररोग उदररोग अतिसार और शोथरोगका नाश करनेवाला है ।

भिलायके अर्कके गुण ।

भल्लातकोद्भवो हन्याज्ज्वरो दर कृमि व्रणान ॥४०॥

भिलायेका अर्क ज्वर, पेटके कीडे और घाव इनको दूर करता है ॥ ४० ॥

गिलोयके अर्कके गुण ।

गुडूच्या दीपनः श्वासकास पाण्डु ज्वरापहः ।

गिलोयका अर्क, जठराग्निको बढाने वाला, श्वास, खासी, पाण्डुरोग और ज्वर इनको नाश करनेवाला है ।

बेलके अर्कके गुण ।

बैल्वः श्लेष्म हरोबल्यो लघुरूक्षश्च पाचनः ॥ ४१॥

बेलगिरीका अर्क कफका नाशकरनेवाला, बल बढानेवाला, हलका, रूक्ष और पाचन है ॥ ४१ ॥

गम्भारी के अर्क के गुण ।

गम्भारीजो भ्रम तृषा शूलार्शोविषदाहनुत् ।

जम्भारी का अर्क भ्रम, तृषा, शूल अर्श, विष और दाह को दूर करता है ।

पान के अर्क के गुण ।

ताम्बूल्या मुखदौर्गन्ध्यमलवान्त भ्रमापहः ॥४२॥

पान का अर्क मुख की दुर्गन्धि तथा मल, वमन और तज्जन्य भ्रम को दूर करता है ॥४२॥

पाटल के अर्क के गुण ।

पाटल्या छर्दिशोथास्रत्रिदोषारुचिदाहहा ॥

पाढर का अर्क वमन, सूजन, रुधिर विकार, त्रिदोषज, अरुचि और दाह को दूर करता है ।

अरणी के अर्क के गुण

अग्निमन्थोद्भवः शोथ कृमि पाण्डु बलासनुत् ४३

अग्निमन्थ (अरणीका) अर्क, सूजन, कृमि, पाण्डुरोग और बलास (कफ) इनका नाश करता है ॥

स्योनाकके अर्क के गुण ।

श्योनाकजस्तु गुल्मार्श कृमि हृद्रुचि दीप्तिकृत् ।

स्योनाक का अर्क गुल्म, अर्श और कृमि इनका नाश करता है तथा रुचि और जठराग्निको बढाता है ॥

शालिपर्णीके अर्क के गुण ।

शालिपर्ण्याः क्षत कृमि ज्वरच्छर्द्यतिसारहाः ॥४४॥

शालिपर्णीका अर्क क्षत, कृमि, ज्वर, वमन और अतिसार को दूर करता है ॥ ४४ ॥

पृष्ठपर्णीके अर्क के गुण।

पृष्ठपर्ण्यार्ज्वरः श्वास रक्तातीसार दाहजित्।

पृष्ठपर्णीका अर्क ज्वर, श्वास, रक्तातिसार और दाहको दूर करता है।

कटेरीके अर्क के गुण।

वार्ताक्यार्को ज्वरालस्यमला रोचक शूलहा ॥ ४५ ॥

कटेरीका अर्क ज्वर, आलस्य, मल, अरोचक और शूल का नाश करने वाला है ॥४५॥

कटेरीके अर्क के गुण।

कण्टकार्या गर्भकरः पाचनः कफ कासहा।

कटेरीका अर्क गर्भ स्थापन करने वाला, पाचन और कफजकास का नाश करने वाला है ॥

गोखरूकेअर्क के गुण।

गोक्षुरस्या श्मरी मेह कृच्छ्रहृद्रोग वातहा ॥ ४६ ॥

गोखरूका अर्क अश्मरी (पथरी) प्रमेह मूत्रकृच्छ्र हृद्रोग और वातरोगोंका नाश करता है ॥ ४६ ॥

जीवन्तीके अर्क के गुण।

जीवन्त्याः श्वास हृन्नेत्र दोषत्रितय नाशनः।

जीवन्तीका अर्क अतिसार, हृदरोग, नेत्ररोग, और त्रिदोषका नाश करनेवाला है ॥

मुद्गपर्णी अर्क के गुण।

मुद्गपर्ण्याः शोथ दाह ग्रहण्यर्शोऽतिसार जित् ॥४७॥

मुद्गपर्णी (मुगवनका) अर्क शोथ, दाह, सग्रहणी ववासीर और अतिसारका नाश करता है ॥४७॥

मापपर्णी के अर्क के गुण।

मापपर्ण्याः शुक्रकरो वातपित्त ज्वरास्रजित् ।

मापपर्णी का अर्क वीर्यको उत्पन्न करने वाला और वात पित्त, कफ तथा रक्त इनके रोगों को दूर करने वाला है।

अरण्ड के अर्क के गुण।

पञ्चांगुलोद्भवा शूलशिरः पीडोदरापहः ॥४८॥

अरण्ड का अर्क शूल, सिरका दर्द और उदर रोग इनका नाश करता है ॥४८॥

हाऊबेर के अर्क के गुण।

हवुषोत्थो वृद्धकास श्वासकुष्ठाम मारुतान् ।

हाऊबेर का अर्क बढ़ी हुई खासी, कोढ, श्वास, आमवातको दूर करता है।

मन्दार के अर्क के गुण।

मन्दारजो वात कुष्ठ कण्डू व्रण विषापहः ॥४९॥

मन्दारवृक्ष का अर्क वातरोग, कोढ, खुजली, व्रण और विष इनका नाश करता है ॥ ४९ ॥

आकके अर्कके गुण।

अर्कार्कः प्लीह गुल्मार्शः श्लेष्मोदर कृमं हरेत् ।

आकका अर्क प्लीहा (तिल्ली) गुल्म, बवासीर, कफ उदर रोग और दुर्बलता इनको दूर करता है (किसी २ पुस्तक में "कृमीन् हरेत्,, ऐसा पाठ है उसका अर्थ कृमिको दूर करता है ऐसा होता है) ।

बज्रीके अर्कके गुण ।

वज्रीजोलेपतो हन्याद्व्रण शोथोदर ज्वरान ॥५०॥

बज्री (थूहरके) अर्क का लेप करने से व्रण, सूजन उदर रोग और ज्वर ये दूर होते है ॥५०॥

सातला के अर्क के गुण ।

सातलोत्थः कफानाह पित्तोदावर्तशोथहा ।

सातला का अर्क कफ, आनाह (अफरा,) पित्तोदावर्त और सूजन इनको दूर करता है ।

कलिहारी के अर्क के गुण ।

लाङ्गल्यालेपनो हन्याच्छोफार्शो व्रण हृन्मतः॥ ५१॥

लाङ्गली (कालिहारी) का अर्क लेप करनेसे सूजन बवासीर और व्रण ये रोग दूर होते हैं ॥५१॥

कनेर के अर्क के गुण ।

करवीरोद्भवो नेत्र कोप कुष्ठ व्रणापहः ।

कनेरका अर्क नेत्रों के रोग, कोढ और व्रण का नाश करता है ।

चाण्डाल के अर्क के गुण।

चांडालोत्थस्तु विषवद्भक्षणे लेपने सुहृत् ॥५२॥

चाण्डाली (लिङ्गनी, पंचगुरिया) का अर्क खाने से विष को दूर करता है और लेप करने से (सूजन आदि मे हितकारी है ॥५२॥

धतूरे के अर्क के गुण।

धत्तूरजोहरेल्लेपाद्यूका कृमिविषादिकम् ।

धतूरे का अर्क लेप करने से जू, कृमि और इनके विषको दूर करता है।

अडूसे के अर्क के गुण।

वासोद्भवोज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठ क्षयापहः ॥५३॥

अडूसा का अर्क ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ और क्षय इनको दूर करता है ॥५३॥

पित्तपापड़े के अर्क के गुण।

पर्पटोहंति पित्तास्र भ्रम तृष्णा कफ ज्वरान् ।

पित्तपापडे का अर्क रक्तपित्त, भ्रम, तृषा, कफ और ज्वरका नाश करता है।

नीम के अर्क के गुण।

निम्बजः श्रमतृट्कास ज्वरारुचि कृमि प्रणुत् ॥५४॥

नीम का अर्क श्रम, तृषा, खासी, ज्वर, अरुचि और कृमि इनका नाश करता है ॥५४॥

बकायन के अर्क के गुण।

महानिम्बोद्भवो गुल्म मूषकाविष नाशनः।

महानिंब (बकायन) का अर्क गुल्म, और चूहेके विषको दूर करनेवाला है।

पारिभद्रके अर्कके गुण।

पारिभद्रो निलश्लेष्मशोथ मेद कृमि प्रणुत् ॥५५॥

पारिभद्र अर्थात् फरहद (नीमका भेद) का अर्क वातरोग, कफज सूजन, मेदरोग, और कृमि इनका नाश करता है ॥ ५५ ॥

कचनारके अर्कके गुण।

कञ्चनीरो गण्डमाला गुदभ्रंश व्रणापहः।

कचनारका अर्क गण्डमाला गुदभ्रंश और व्रणका नाश करता है।

सफेद कचनारके अर्कके गुण।

कोवदारस्तु पित्तास्र प्रदरक्षय कासहा ॥ ५६ ॥

सफेद कचनारका अर्क पित्तरक्त, प्रदररोग, क्षयरोग, और खासी इनको दूर करता है ॥ ५६ ॥

सहजनेके अर्कके गुण।

सौभाञ्जनार्को रुचि कृच्छ्रु क्रको ग्राहिदीपनः।

सौभाञ्जन (सहजना) का अर्क रुचिका बढानेवाला, शुक्रको बढानेवाला, ग्राही और अग्निका बढानेवाला है।

मधुसहजनेके अर्कके गुण ।

मधुशिग्रूद्भवो हन्या द्विद्रधि श्वयथु कृमीन् ॥५७॥

मधु सहजनेका अर्क विद्रधि, सूजन और कीडोका नाश करता है ॥ ५७ ॥

सहजने के अर्कके गुण ।

शिग्रूजो विष हृन्नेत्र्यो नस्येनस्याच्छिरोर्ति हृत् ।

सफेद सहजनेका अर्क विषको दूर करनेवाला और नेत्रोको लाभदायक है तथा इसकी नस्य लेनेसे यह शिरकी पीडाको दूर करता है ।

कोयलके अर्कके गुण ।

गिरिकर्ण्याः कुष्ठ शूल शोथ व्रण विशापहः ॥५८॥

गिरिकर्णी अर्थात् कोयलका अर्क कोढ, शूल, सूजन व्रण और विष इनको दूर करता है ॥ ५८ ॥

सिन्दुवारके अर्कके गुण ।

सिन्दुवारोद्भवो हन्ति शूल शोथाम मारुतान् ।

सिन्दुवार (सम्हालू) का अर्क शूल, सूजन और आमवात का नाश करता है ।

निर्गुण्डीके अर्कके गुण ।

निर्गुण्ड्यर्को हरेज्जंतु व्रण कुष्ठारुचि लघुः ॥५९॥

निर्गुण्डीका अर्क कृमि, व्रण, कोढ और अरुचिका दूर करने वाला तथा लघुपाकी है ॥ ५९ ॥

कुटजके अर्कके गुण।

कौटजो दीपनः शीतः कफ तृष्णाम कुष्ट जित् ।

कुटज (कुडा) का अर्क जठराग्निको बढानेवाला शीतल, कफकी तृषा और कच्चा कोढ इनका नाश करनेवाला है ।

कंजाके अर्कके गुण।

कारञ्जः कफ गुल्मार्शो व्रण कृमिरुजा पहः ॥९०॥

कंजाका अर्क गुल्म, कफ, ववासीर, व्रण और कृमि इन रोगोंका नाश करता है ॥ ९० ॥

घृतकरंजके अर्कके गुण।

घृतकारञ्जको भेदी वातार्शः कृमि कुष्ट जित् ।

घीकरंज का अर्क मलका भेदन करनेवाला, वातनाशक तथा बवासीर, कृमि और कोढ इन रोगोको दूरकरनेवाला है ।

करंजीके अर्कके गुण।

कारञ्जावमि वातार्शः कृमि कुष्ठ प्रमेह जित् ॥९१॥

करंजी (करंजभेद) का अर्क बमन वातज अर्श, कृमि, कोढ और प्रमेहको दूर करता है ॥ ९१ ॥

उच्चटाके अर्कके गुण।

उच्चटार्कः केशकरो वातपित्त ज्वरापहः ।

उच्चटा (चौटली) का अर्क वालोका बढानेवाला और वातज तथा पित्तज ज्वरको नाश करनेवाला है ।

गुंजा के अर्क के गुण।

गुञ्जायाश्चहरेच्छ्वास मुखशोष भ्रमज्वरान् ।६२।

गुंजा [घुंघुची] का अर्क श्वास, मुखशोष, भ्रम और ज्वर इनको दूर करता है ॥६२॥

कौंच के अर्क के गुण।

कपि कच्छूद्भवो वृष्योवृंहणा वाजिकर्म कृत् ।

कौंचका अर्क वीर्य बढाने वाला, बल बढाने वाला, और वाजीकरण करने वालाहै

मांस रोहिणी के अर्क के गुण।

मांसरोहिण्युद्भवस्तु वृष्यो दोषत्रया पहः ॥६३॥

मासरोहिणी का अर्क बल बढाने वाला और तीनो दोषों का नाश करने वाला है ॥ ६३ ॥

चिल्ह के अर्क के गुण ।

चिल्हजःकुरुते पुष्टिंतत्फलं मारयेज्जनान् ।

चिल्हका अर्क धातु को पुष्ट करताहै और उसका फल खानेसे मनुष्य की मृत्यु होती है ।

कटेरी के अर्क के गुण।

कण्टकाद्यां दीपनश्च श्लेष्म शोथं हरो रुचिः ॥६४॥

कटेरी का अर्क, जठराग्नि को बढाने वाला और कफ की सूजन तथा अरुचि को दूर करने वालाहै ॥६४॥

वेतवा के अर्क के गुण।

वैतसो हरते दाहे शोथार्शो योनिरुग्व्रणान् ।

वेतका अर्क दाह, सूजन, बवासीर, योनिरोग और व्रण इनको दूर करता है।

जलवेतस के अर्क के गुण।

जलवेतसजो ग्राही शीतो वात प्रकोपनः ॥ ६५ ॥

जलवेतस का अर्क मलका अवरोध करने वाला, शीतल और वात को प्रकुपित करने वाला है ॥६५॥

समुद्रफल के अर्क के गुण।

हिज्जलार्कस्तु हरते चराचर विषंस्फुटम् ।

समुद फल का अर्क स्थावर और जंगम दोनों प्रकार के विषों को दूर करताहै ।

अङ्कोल के अर्क के गुण।

अङ्कोलकस्य शूलाम शोथ ग्रह विषापहः ॥६६॥

अङ्कोल का अर्क शूल सूजन, मलग्रह और विष इनको दूर करता है ।६६॥

बला के अर्क के गुण।

वलार्को ग्राहि वातास्र पित्तास्र क्षतनाशनः ।
अतिपूर्व बलार्कस्तु मूत्रातीसार नाशनः ॥ ६७ ॥

बला [खरैटी] का अर्क ग्राही है तथा वातरक्त, पित्तरक्त और क्षतका नाश करने वाला है। अतिबला अर्थात् कंघी का अर्क बहुमूत्रता रोग का नाश करता है किसी पुस्तक मे "मूर्च्छामोह हरः परः" ऐसा पाठ है उसका अर्थ मूर्च्छा और मोहको दूर करने वाला यह है ॥६७ ॥

महावला के अर्क के गुण ।

महाबलार्को हरते कृच्छ्राघ्रात्यनुलोमनः ।

महावला [सहदेई] का अर्क मूत्रकृच्छ्र को दूर करताहै और अनुलोमन करता है ।

नागवला के अर्क के गुण ।

नागपूर्व वलार्कश्च मूर्च्छा मोहहरः परः ॥६८॥

नागवला अर्थात् गंगेरनका अर्क मूर्च्छा और मोह का नाश करता है ॥ ६८ ॥

लक्ष्मणाके अर्क के गुण ।

लक्ष्मणार्कञ्च संवेद्य वन्ध्यापिलभते सुतम् ।

लक्ष्मणा का अर्क सेवन करने से वन्ध्या स्त्री भी पुत्र प्राप्त करती है ।

स्वर्णवल्ली के अर्क के गुण ।

स्वर्णवल्याः शिरः पीड़ा त्रिदोषान् हन्ति दुग्धहा॥६९

स्वर्णवल्ली का अर्क शिरकी पीडा और त्रिदोषको दूर करता है तथा दूधका नाश करता है ॥६९॥

कपास के अर्क के गुण ।

कार्पासोऽर्कःशिरः शङ्खकर्णरोगान्विनाशयेत् ॥

कपास का अर्क सिर, कनपटी और कानके रोगोको दूर करता है ।

बांस के अर्क के गुण ।

वंशजः कफ पित्तघ्नः कुष्ठास्रव्रण शोथजित् ॥७०॥

वासका अर्क कफ और पित्तका नाश करने वाला कोढ, रक्त विकार, व्रण और शोष इनका दूर करने वाला है ॥७०॥

नल के अर्क के गुण ।

नालार्को बस्तियोन्यर्ति दाह त्रिपत्तसिर्पहृत ।

नलका अर्क बस्तीरोग, योनिरोग, दाह और पित्त विसर्प इनको दूर करता है ।

मुलहटी के अर्क के गुण ।

यष्टयाजयेज्ज्वर च्छर्दिकुष्ठातीसार हृद्रुजः ॥७१॥

मुलहटी का अर्क ज्वर, वमन. कोढ, अतिसार और हृदयके रोगो को दूर करता है ॥७१॥

सफेदनिसोथ के अर्क के गुण ।

श्वेत तृवृद्भवोप्यर्कोपित्तशोथो दरापहः ।

सफेद निसोथ का अर्क पित्तकी सूजन और उदररोग इनका नाशक है ।

शरपुङ्खा के अर्क के गुण ।

शरपुङ्खोद्भवः प्लीहा गुल्म व्रण विषापहः ॥७२॥

शरपुखा का अर्क प्लीहा, गुल्म, व्रण और विष इनको दूर करता है ॥७२॥

जवासे के अर्क के गुण ।

यवासजो मदभ्रांति पित्तास्र वकुष्ठ कासजित् ।

जवासे का अर्क मद, भ्राति, रक्तपित्त, कोढ और खांसी को दूर करता है।

गोरखमुण्डी के अर्क के गुण।

मुण्डिजोत्यन्त बलकृत्प्लीह मेहानिलार्तिजित ॥७३॥

गोरखमुण्डी का अर्क अत्यन्त बल बढाता है, प्लीहा प्रमेह और वातरोगो को दूरकरता है ॥ ७३ ॥

ओंगा के अर्क के गुण।

अपामार्ग भवछर्दि कफ मेदोऽनिला पहः ।

ओंगाका अर्क वमन, कफ, भेद और बातरोगों का नाश करने वाला है।

लाल ओंगा के अर्क के गुण।

आरक्तापामार्ग भवोधातु स्तम्भन कारकः ॥७४॥

लाल ओंगाका अर्क धातुको स्तम्भन करता है ॥७४॥

तालमखाने के अर्क के गुण।

कोकिलाक्षिभवः शीघ्रंसेकाच्छोथाग्नि वारयेत् ।

तालमखाने का अर्क सेवन करने से शीघ्र ही सूजन को दूर करता है।

अस्थिसहार के अर्क के गुण।

अस्थिसंहार कायास्तु भग्निसन्धानकृच्छिवे ॥७५॥

अस्थिसंहार का अर्क हे कल्याणरूपिणी ? टूटी हड्डी को जोड़ने वाला है ॥ ७५ ॥

लाल सांठ के अर्क के गुण।

पुनर्नवा या रक्ताया ग्राही पित्तास्र नाशनः ।

लालसाठका अर्क मलका अवरोधक और रक्तपित्त का नाश करने वाला है ।

प्रसारिणी के अर्क के गुण !

प्रसारिण्या वातहरो वृष्यः सन्धान कृत्सरः ॥७६॥

प्रसारिणी का अर्क बातरोगों का नाश करने वाला बलकारक, सन्धानकारक और दस्तावर है ॥७६॥

ग्वारपाठे के अर्क के गुण।

कुमारिकाया ग्रन्थ्यग्नि दग्ध विस्फोटकान्जयेत् ।

ग्वारपाठे का अर्क गाठ और आगसे भुरसने के घावों को दूर करता है ।

सफेद सांठके अर्क के गुण।

पुनर्नवायाः श्वेताय : सर्वनेत्रा मयापहः ॥७७॥

सफेद साठका अर्क सब प्रकारके नेत्ररोगों को दूर करताहै॥

सारिवा के अर्क के गुण ।

सारिवाया वह्निमान्द्य कासाम विषनाशनः ॥

सारिवाका अर्क मन्दाग्नि, खासी, आम और विष इनको दूर करता है ।

भांगरे के अर्क के गुण।

भृंगराजस्य जातोर्कः केशत्वच्यः शिरोर्त्तिहृत ॥७८॥

भागरे का अर्क केशोंको हितकारी, त्वचा को कोमल करने वाला और सिरकी पीड़ा को लाभदायक है ॥७८॥

शणपुष्पी के अर्क के गुण।

शणपुष्पी लतायास्तुअर्कः पित्त कफापहः।

शणपुष्पीका अर्क पित्त और कफका नाश करनेवाला है।

त्रायमाणा के अर्कके गुण।

त्रायन्त्यर्कःशूल विषविलेपी ज्वरनाशनः ॥७९॥

त्रायमाणका अर्क शूल, विष, विलेपी और ज्वर का नाश करने वाला है ॥७९॥

मूर्वा के अर्कके गुण।

मूर्वायाःमेहरोगघ्नःकण्डूकुष्ठज्वरापहः।

मूर्वा का अर्क प्रमेह, कण्डू, कुष्ठ और ज्वर का नाश करने वाला है।

मकोय के अर्कके गुण।

काकमाच्या नेत्रहितः छर्दि हृद्रोग नाशनः॥८०॥

काकमाची (मकोय) का अर्क नेत्रो को हितकारी, बमन और हृदयके रोगोंका नाश करने वाला है ॥८०॥

काकनासा के अर्कके गुण।

काकनासभावो वामी शोथार्शश्वित्रकुष्ठनुत्।

काकनासा (कौआटोडी) का अर्क बमन कराने वाला और सूजन तथा बवासीर और सफेद कोढको दूर करताहै।

काकजंघा के अर्क के गुण ।

काकजङ्घोद्भवो हन्याज्ज्वर कण्डू विषकृमीन् ८१

काकजंघा का अर्क ज्वर, कण्डू, विष और कृमि इनको दूर करताहै ॥८१॥

नागपुष्पी के अर्क के गुण ।

नागिन्यास्तु हरेच्छूल योनि दोषवमि कृमीन् ।

नागपुष्पी का अर्क शूल, योनिदोष, वमन और कृमि इनको दूर करता है ।

मेढासिंगी के अर्क के गुण ।

मेषशृङ्ग्याश्वास कासव्रण श्लेष्माक्षि शूलहा ।८२।

मेढासिंगी का अर्क श्वास, खासी, व्रण, कफ और नेत्रशूल का नाश करनेवाला है ॥८२॥

हंसपदी के अर्क के गुण ।

हंसपद्या हन्तिलूतां भूतरक्तविष व्रणान् ।

हंसपदी का अर्क लूताविष, भूतावेश, रुधिर विकार, विष और व्रण इनको दूर करताहै ।

सोमबल्ली के अर्क के गुण ।

सोमवल्ल्यास्त्रिदोषघ्नो क्षीरकृच्च रसायनः॥८३॥

सोमबल्ली का अर्क त्रिदोष का नाश करने वाला, दूध को बढाने वाला और रसायन है ॥८३॥

आकाशवेल के अर्क के गुण।

आकाशवल्ल्या:शीतोऽर्क:पित्तश्लेष्माम नाशनः।

आकाशवेलका अर्क शीतल तथा पित्त कफ और आमका करने वाला है।

पाताल गरुडी के अर्क के गुण।

पाताल गरुडीजार्को वृष्य:पवननाशनः ॥८४॥

पातालगरुडी (छिरहिटा) का अर्क वीर्यको बढ़ाने वाला और बातरोगों का नाश करने वाला है ॥८४॥

तुलसी के अर्क के गुण।

वृन्दा वृक्षोद्भवोऽर्कस्तु विष रक्षो व्रणापहः।

वृन्दा (तुलसी) का अर्क विष, राक्षसबाधा और व्रण इनको नाश करता है।

वटपत्री के अर्क के गुण।

वटपत्रा भवश्चोष्णो योनिमूत्र गदापहः ॥८५॥

वटपत्री का अर्क गरम है तथा योनिरोगो और मूत्ररोगका नाश करता है ॥८५॥

हिंगुपत्री के अर्क के गुण।

हिंगुपत्रा विबन्धार्शः श्लेष्म गुल्मानिला पहः।

हिंगुपत्रीका अर्क मलविबन्ध, अर्श, कफज गुल्म और बात-रोगोंको दूर करता है।

वंशपत्रीके अर्कके गुण।

वंशपत्र्याः पाचनोष्णो हृद्वस्ति गद संघहृत् ॥८६॥

वंशपत्री का अर्क पाचन और ऊष्ण है तथा हृदय और वस्तिके रोग समूहोंका नाश करने वाला है ॥८६॥

मत्स्याक्षीके अर्कके गुण।

मत्स्याक्ष्यर्को ग्राहि शीत कुष्ठ पित्तकफास्र जित् ।

मत्स्याक्षी [मछेछी] का अर्क मलका रोकनेवाला, शीतल तथा कोढ, पित्त, रक्त और कफके रोगोंको दूर करने वालाहै ।

सर्पाक्षी के अर्कके गुण।

सर्पाक्ष्यारोपणः सर्प वृश्चिकोद्भव दंशहृत् ॥८७॥

सर्पाक्षी [सरहटी] का अर्क रोपण तथा सर्प और विच्छूके विषका नाश करने वाला है ॥८७॥

शंखपुष्पीके अर्क के गुण।

शङ्खपुष्पी विषहारः स्मृति कान्ति बलाग्निदः।

शङ्खपुष्पी [शङ्खाहूली] का अर्क विषका नाश करता है स्मृति, कान्ति बल और जठराग्निको वढाता है ।

अर्कपुष्पीके अर्क के गुण।

अर्क पुष्प्याः कृमि श्लेष्म मेहश्चित्र विकारनुत् ॥८८॥

अर्कपुष्पी का अर्क कृमि, कफ, प्रमेह और चित्रि [कोढ] विकारको दूर करता है ॥८८॥

लज्जालू के अर्कके गुण ।

लज्जालुकाया भगरुक् रक्तपित्तातिसारहृत ।

लज्जालू (लजवन्ती) का अर्क योनिरोग रक्तपित्त और अतिसार को दूर करताहै ।

अलम्बुषाके अर्कके गुण ।

अलंबुषासंभवोऽर्कः कृमिपित्त कफापहः ॥८६॥

अलवुसा (लज्जालूभेद) का अर्क कृमिरोग और पित्त तथा कफ के रोगोंको दूर करताहै ॥८६॥

दुद्धीके अर्कके गुण ।

दुग्धिकायाः कफकरोवृष्यःस्तम्भी कृमि प्रणुत ।

दुद्धी का अर्क कफ का उत्पन्न करनेवाला, बलकारक, स्तम्भन कर्त्ता और कृमिनाशक है ।

भूआवले के अर्कके गुण ।

भूमिवल्याःकास तृष्णा कफपांडु क्षतापहः ॥९०॥

भूआंवलेका अर्क खासी, तृषा, कफ, पाण्डुरोग और क्षतरोग इनको दूर करताहै ॥९०॥

ब्राह्मी के अर्क के गुण ।

ब्राह्मयाबुद्धि प्रदश्चार्क. षण्मासाभ्या सतःकविः ।

ब्राह्मीका अर्क बुद्धिका बढाने वाला है और यदि छः महीने तक इसका सेवन किया जाय तो मनुष्य कवि होजाता है ।

ब्रह्मदण्ड् के अर्कके गुण।

ब्रह्माण्डूकिजः पाण्डु विष शोथज्वरान्हरेत् ९१॥

ब्रह्ममण्डूकी का अर्क पाण्डुरोग, विष, सूजन और कृमिरोग को दूर करता है।

द्रोणपुष्पीके अर्क के गुण।

द्रोणपुष्प्या ज्वर श्वास कामला शोथ जन्तुजित्।

द्रोणपुष्पी (गोमा)का अर्क ज्वर, श्वास कामला, शोथ और कृमिरोग इनको दूर करताहै।

सूर्यमुखी के अर्क के गुण।

सूर्यमुख्याः हरेत् स्फोट योनिरुक्क्रमि पांडुताम् ९२

सूर्यमुखी का अर्क स्फोट (फोडा), योनिरोग, कृमिरोग और पाण्डुरोग इनको दूर करताहै ॥९२॥

वंध्याकर्कोटकी के अर्कके गुण।

वन्ध्या कर्कोटकी जातःसर्प दृष्टव्रणापहः।

वंध्याकर्कोटकी (बांझ ककोडी) का अर्क सर्प के काटने से उत्पन्न हुए व्रण को दूर करताहै।

मार्कण्डिका के अर्क के गुण।

मार्कण्डिकाया दुर्गंधि विष गुल्मोदरा पहः ॥९३॥

मार्ककण्डिका (एक प्रकार का ककोडा) का अर्क दुर्गन्धि, विष, गुल्म और उदर रोगों को दूर करताहै ॥९३॥

देवदाली के अर्क के गुण।

देवदाल्याःशूल गुल्म श्लेष्माशों वातजित्परम्।

देवदाली [बन्दाल] का अर्क दर्द, गुल्म, कफ, बवासीर और बातरोग इनका नाश करनेवाला है।

धतूरे के अर्क के गुण।

धत्तूरजो ग्राहि हिमोवह्नि कृद्व्रण दाह हृत् ॥४४॥

धतूरे का अर्क मलका अवरोधक, शीतल, जठराग्नि को बढाने वाला व्रण और दाहको दूर करने वाला है ॥९४॥

गोभी के अर्क के गुण।

गोजिह्वाया मेह कास व्रण सार ज्वरापहः ।

गोभी का अर्क प्रमेह, खासी, व्रण, अतिसार और ज्वर इनका नाश करता है ।

नागकेशर के अर्क के गुण।

नागपुष्प्याः सर्व्वविष सर्व्वगृह विनाशनः ॥९५॥

नागकेशर का अर्क सब प्रकारके विष और सम्पूर्ण ग्रहोंका नाश करता है ॥९५॥

वेलन्तर के अर्कके गुण।

वेलन्तरोमूत्र घाताश्मरी योन्यनिलार्त्ति जित् ।

बरवेलका अर्क मूत्राघात, अश्मरी, योनिरोग और वातरोग इनको दूर करता है ।

नकछिकनी के अर्क के गुण।

छिक्कन्या वह्नि रुचि कृदर्श कुष्ठ कृमिप्रणुत् ॥९६॥

नकछिकनी का अर्क अग्निको बढाने वाला रुचिकर्ता और अर्श, कोढ और कृमिको दूर करने वाला है ॥९६॥

कुकुंदर के अर्क के गुण।

कौकुंदरो ज्वरं रक्त मुखशोथ कफं हरेत् ।

कुकुदरों का अर्क ज्वर, रक्तविकार मुखकी सूजन और कफके रोगोको दूर करता है।

सुदर्शन के अर्क के गुण।

सुदर्शनार्कश्चात्युष्णः कफास्रं वातरोगजित् ॥९७॥

सुदर्शनका अर्क अत्यन्त गरम है तथा कफ और वातरक्त को दूर करता है ॥९७॥

शतपत्र के अर्क के गुण।

तरुण्यर्कः सरः शीतस्तुवरः श्रमदाहहा ।
वान्तितृट्पित्तरोगघ्नो मुखरोग विनाशनः ॥९८॥

गुलाव और सेवती का अर्क किंचित् विरेचन कर्त्ता शीतल, कषेला और भ्रम, दाह, वमन, तृषा, पित्तरोग और मुखरोग इनका नाश करता है ॥९८॥

बडी इलायची के अर्क के गुण।

एलार्कः कटुकः पाकेरसे तिक्तोग्नि कृल्लघुः ।

बडी इलायची का अर्क पाकमे कटुरसमें तिक्त अग्निका वढाने वाला और लघु है।

छोटी इलायची के अर्क के गुण।

सूक्ष्मैलार्कः कफंहंतिमूत्रकृच्छ्रं विशेषतः ॥ ९९॥

छोटी इलायची का अर्क पित्त और कफ तथा विशेष करके मूत्रकृच्छ्र को दूर करनेवाला है ॥९९॥

केवड़े के अर्क के गुण ।

केतक्याः पित्तदाहघ्नश्चक्षुष्योन्मादहृत्सराः १००

केवडे का अर्क पित्त के दाह को दूर करताहै, नेत्रों को हितकारीहै, उन्मादको दूर करताहै और दस्तावर है ॥१००॥

इतिश्री रावणविरचिते अर्कप्रकाशे मथुरानिवासि कृष्णलालकृत भाषाटीकायां विभूषितं तृतीयम् शतकम् ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थशतकम् ।



रावण उवाच ।

षड्रस ।

सिताचिञ्चोषणपटुविभीतककटीलकाः ।
एतत्षड्रसमित्युक्तं विपरीतबलाधिकम् ॥१॥

रावण बोला हे प्रिये ! मिश्री, इमली, मिरच, परवल, बहेडा और करेला इन छः द्रव्योंका नाम षड्रस है इनमें एक दूसरे से विपरीत क्रम से बलवान होतेहैं अर्थात करेला से बहेडा बलवान होता है, परवल से मिरच बलवान होती है इत्यादि ॥१॥

षड्रस के अर्क के गुण ।

एषामर्कं प्रत्यहं चपिबेत्पलयुगं प्रिये ।

अरुचिञ्चैवमन्दाग्निं स्वप्नेपिसनपश्यति ।

जो मनुष्य प्रतिदिन इनका अर्क चारपल के अनुमान पीवै तो वह स्वप्न मे भी मन्दाग्नि और अरुचि रोग से पीडित नहीं होता ॥ २ ॥

उन्मत्तपंचक ।

उन्मत्तोसोमविजयाजातीपत्रीचखस्खसम् ।
उन्मत्तपञ्चकंचैतद्यवानीपञ्चभिःसमा ॥ ३ ॥

धतूरा, बाकुची, जावित्री, खसखस और इन चारों के बराबर अजवायन ये उन्मत्त पंचक है ॥३॥

उन्मत्तपंचक के गुण ।

दुग्धनिर्वापितादस्मादर्कोग्राह्योयथोक्तितः ।
खादेत्पिशाचवन्मत्तोरमेच्चरमणीशतम् ॥४॥

उन्मत्त पंचक में कहे हुए सब द्रव्यों को दूध में भिगोकर यथोचित रीति से अर्क निकालकर सेवन करे तौ मनुष्य पिशाच की भाति उन्मत्त होकर सौ स्त्रियों से रमण करताहै ॥४॥

त्रिसुगंध ।

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धमितिस्मृतम् ।

दालचीनी इलायची पत्रज इन तीनो को समान भाग ले यही त्रिसुगंध है ।

त्रिसुगंध के अर्क के गुण ।

तदर्कोमुखदौर्गन्ध्यच्छेदनोमल भेदनः ॥५॥

त्रिसुगन्ध का अर्क मुखकी दुर्गन्धी को छेदन करनेवाला और मल का भेदन करने वाला है ॥५॥

चतुर्जातक और उसके अर्क के गुण।

नागकेशर मेलाच पत्रकंदारुचीर्णकम् ।
चातुर्ज्जातमिदंज्ञेयंवन्हिकृच्चविषापहम् ॥ ६ ॥

नागकेशर, इलायची, पत्रज और दालचीनी इनको समान भाग ले ये चातुर्जातक है, इसका अर्क जठराग्निको बढाने वाला और विषको दूर करने वाला है ॥६॥

त्रिफला।

पथ्याबिभीतको धात्री त्रिफलैषा प्रकीर्तिता।

हरड, बहेडा और आवला इन तीनो का नाम त्रिफला है।

त्रिफला के अर्क के गुण।

एतदर्को मेहकुष्ठविषमज्वर पित्तनुत ॥ ७ ॥

त्रिफला का अर्क प्रमेह कोढ. विषमज्वर और पित्तविकार इनको दूर करता है ॥७॥

त्रिकुटा।

विश्वोपकुल्या मरिचमे तत्त्रि कटु रुच्यते ।

सोंठ, पीपल और मिरच इन तीनों का नाम त्रिकुटा है।

त्रिकुटा के अर्क के गुण।

हरेद्गुल्मकफस्थौल्यमेदश्लीपदपीनसान् ॥ ८ ॥

त्रिकुटाका अर्क गुल्म, कफरोग, स्थूलता, मेदरोग श्लीपद और पीनस इनको दूर करता है ॥ ८ ॥

चतुरूषण के अर्क के गुण।

पिप्पली पिप्पलीमूलं मरीचं विश्वभेषजम् ।
चतुरूषणमित्युक्तमेतदर्कोऽग्नितत्परः ॥ ९ ॥

पीपल, पीपलामूल, मिरच और सोंठ इनका नाम चतुरूषण कहते है, चतुरूषणका अर्क अग्निका प्रदीप्त करने वाला है ॥९॥

पंचकोल के अर्क के गुण।

पिप्पली पिप्पली मूला चव्यचित्रकनागरैः ।
पञ्चकोलमिदं गुल्मप्लीहानाहोदरापहः ॥ १० ॥

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक और सोंठ इन पांचों का नाम पांचकोल है, पंचकोल का अर्क गुल्म, प्लीहा, आनाह और उदररोग इनको दूर करता है ॥१०॥

षडूषण के अर्क के गुण।

कणामूलोषण कणा चव्य चित्रक नागरैः ।
एतत्षडूषणं चोष्णं दीप्तिकारिविषापहम् ॥ ११ ॥

पीपलामूल, कालीमिरच, पीपल, चव्य, चीता और सोंठ इन छः द्रव्यो का नाम षडूषण कहते हैं, इसका अर्क गरम, जठराग्निको बढाने वाला और विषका दूर करने वाला है ॥११॥

चतुर्बीज के अर्क के गुण।

मेथिका चन्द्रसूरश्च काला जाजीथ वानिका ।
चतुर्बीयमिदंप्रोक्तं शूलाध्मानसमीरजित् ॥ १२ ॥

मेथी हालों, कालाजीरा और अजवायन इन चारो का नाम चतुर्वीज है चतुर्वीज का अर्क शूल, आध्मान (अफरा) और वातरोग इनका नाश करनेवाला है ॥ १२ ॥

अष्टवर्ग के अर्क के गुण।

जीवकर्षभकौ मेद काकोल्यौ ऋिद्धवृद्धिके ।
अष्टवर्गोऽयमर्कस्तु भग्नसन्धानकृत्परः ॥ १३ ॥

जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि इन आठ औषधियों का नाम अष्टवर्ग है, अष्टवर्ग का अर्क टूटी हुई हड्डियों को जोड़ देता है ॥१३॥

बृहत्पञ्चमूल के अर्क के गुण।

बिल्वोग्निमंथःश्योनाकः पाटलागणकारिका ।
पञ्चमूलबृहत्प्रोक्तं तदर्कोत्यग्निदीपनः ॥१४॥

बेल, अरनी, सोनापाठा, पाढल और गणकारिका (अगेथु वा छोटी अरनी) इन पाच द्रव्यों का नाम बृहत्पंचमूल है इसका अर्क जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाला है ॥१४॥

लघुपंचमूलके अर्कके गुण।

शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी वार्ताकी कण्टकारिका ।
गोक्षुरः पञ्चमूलं स्यात्तदर्कश्चाश्मरीप्रणुत ॥१५॥

शालपर्णी, पृष्टिपर्णी, वार्ताकी (खटाई), कटेरी और गोखरू यह लघुपंचमूल हैं, इसका अर्क पथरीका नाश करता है ।

दशमूलके अर्कके गुण ।

उभाभ्यांपञ्चमूलाभ्यांदशमूलमुदाहृतम् ।
तदर्कःसूतिकारोगत्रिदोषज्वरशोथहा ॥१६॥

दोनों अर्थात् वृहत और लघुपचमूल का नाम दशमूल है इसका अर्क प्रसूति का रोग, त्रिदोष ज्वर और सूजन इनको दूर करता है ॥१६॥

जीवनीयगण ।

जीवन्तीमधुकंमुद्गाशालिपर्ण्यष्टवर्गकः ।

जीवन्ती, मुलहटी, मुद्गपर्णी, मापमर्णी, शालिपर्णी और अष्टवर्ग मे कहे हुए द्रव्य इन सब के समुदाय को जीवनीय गण कहते है ।

जीवनीयगण का अर्क ।

जीवनीयगणस्यार्कः सर्व्वरोग विनाशनः ॥१७॥

जीवनीय गणका अर्क सब रोगोका दूर करने वाला है ॥१७॥

सुगन्धगण ।

कर्पूरो मृगनाभिश्च कस्तूरीलतिका तथा ।
गन्धमार्जारवीर्य्यंच श्री खण्डं पीतचन्दनम् ॥१८॥
शिलाजिद्रक्तकाष्ठं पतङ्ग मगुरुद्वयम् ।
देवदारुश्च सरलस्तगरं पद्मकं पुरः ॥१९॥
सर्जनिर्यासकोरालं कुन्दरुश्च शिलारसः ।
सिह्लकश्च लवङ्गश्च जातीपत्रीफलं तथा ।

एलाद्वयदारुचीनी त्वक्पत्रं नागकेशरम् ।
बालकं वीरणं मासी कुंकुमंरोचनानखः ॥२१॥
सुगन्ध वीरणं बाला जटामांसी मुराघनः ।
शटीकर्चूर एकाङ्गी सुगन्धोऽयंगणोत्तमः ॥ २२ ॥

कपूर, कस्तूरी, कस्तूरी लतिका, गन्धमार्जार, चोरपुष्पी, सफेद चन्दन, पीतचन्दन, शिलाजीत, लालचन्दन, पतङ्ग अगर, काला अगर, देवदारु, सरल, तगर, पद्माख, गूगल, सरलका गोंद, राल, कुन्दरु, शिलारस, सिल्हक, (लोवान) लोंग, जावित्री, जायफल, छोटी इलायची, बडा इलायची, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, नेत्रवाला, वीरण, (खस) बालछड, केशर, गोरोचन, नख, सुगन्धवीरण, नेत्रवाला, जटामांसी, कपूर कचरी, नागरमोथा, आमाहल्दी, कचूर और एकाङ्गा ये सुगन्धगुण है, सब गुणोमे उत्तम है १८,२२

सुगन्धगण के अर्क के गुण ।

विधिनिष्का सितोयोऽर्कोरुच्यः पाचनदीपनः ।
मुखदौर्गन्ध्यहृन्नेत्र्योलेपान्मेदश्रमापहः ॥ २३ ॥

इस गणका बिधि पूर्वक निकाला हुआ अर्क रुचि कर्ता, पाचन, दीपन, मुखकी दुर्गन्धिको दूर करने वाला और नेत्रोंको हितकारी है तथा इसका लेप करने से मेद रोग और श्रम दूर होता है ॥२३॥

वीरण ।

कुशः कासश्चदर्भश्चकतृणं भूतृणं तथा ।
श्वेतदूर्वानीलदूर्वागंडदूर्वेतिवीरणम् ॥ २४ ॥

कुश, कास; दर्भ, (डाभ) कत्तृण (रोहिस), भूतृण (गंधतृण) सफेद दूव, नीली दूव, और गाडर इन द्रव्योंकी वीरण सज्ञा है ॥ २४ ॥

वीरण द्रव्यो के अर्क केगुण ।

वीरणार्को हरच्छूलं सन्धुक्षयति चानलम् ।
क्षतसन्धानकृद्वृष्योबलंकुर्य्यादनेकधा ॥२५॥

वीरण संज्ञक द्रव्यो का अर्क शूल को दूर करताहै, जठराग्नि को वढाता है, घाव को भरता है, वीर्य को वढाता है और अनेक प्रकार के बल वढाता है ॥२५॥

दुग्धकन्द गण ।

अश्वगन्धा च मुशली विदारी च शतावरी ।
क्षीरवाराहिका चेति दुग्धकन्दगणस्त्वयम् ॥२६॥

असगन्ध, मूसली, विदारीकन्द, सतावर, और क्षीर वाराही इन्द्र यह दुग्धकन्द गण है ॥२६॥

दुग्धकन्द गण के अर्क के गुण ।

बालको वर्द्धते वीर्य्य रिंसुर्बलयासह ।
एतदर्कस्य पानेन कुर्य्यात्षोडशवार्षिकीम् ॥२७॥

इसका अर्क बाल के बल को बढाता है, वाला स्त्री के सग रमण करने की इच्छा करने वालों के वीर्य को बढाता है और इस का पान करने से वृद्धा स्त्री भी सोलह वरस की युवती समान होजाती है ॥ २७ ॥

दन्तीआदिके अर्कके गुण ।

लघुदन्ती वृहद्दन्ती इन्द्रवारुणिनीलिका ।
वासयेच्च सुगन्धेन राजयोग्यं विरेचनम् ॥२८॥

लघुदन्ती, वृहद्दन्ती, इन्द्रायण, और नील इनका अर्क सुगध से सुवासित करले यह राजाओं के योग्य विरेचन है ॥ २८ ॥

बडके फलोके अर्क के गुण ।

दुग्धमिश्रैर्वटफलैः कमलानां पिधानकः ।
जातोऽर्कः शीतलो ग्राही वर्ण्योभगसुगन्धकृत्॥२९॥

बड के फलो को दूध मे भिगोदे फिर कमलके फूलो का पिधान देकर अर्क निकाले यहअर्क शीतल,ग्राही,शरीरके वर्णको सुन्दर करनेवाला और भग को सुगन्धित करनेवाला है ॥ २९ ॥

पीपलके फलोके अर्क के गुण ।

मूलनालदलोत्फुल्लफलैर्युक्ता हि पद्मिनी ।
तत्पिधानं पिप्पलस्य फलानां योनिदोषनुत्॥३०॥

पद्मिनीकी जड़, नाल, पत्रे, फूल, और फल इनका पिधान देकर पीपल के फलो का अर्क निकाले यह अर्क योनिदोषो को दूर करने वाला है ॥ ३० ॥

आम की गुठली के अर्कके गुण ।

चूतकमण्डलवीजं स्थलपद्मिनिपत्रपिहितं च ।
उद्धृत्य सम्यगर्कं मण्डलमेकं समाश्नीयात्॥३१॥
ऋतुदिनतोया ललनापिवति कुचस्तम्भनं कुर्यात् ।

गर्भस्य भीतिरहिता रमयति पुनःकलप्रसूतापि ॥३२॥

आम की गुठली की मिंगी निकालकर स्थल पद्मिनी के पत्तों का पिधान देकर अर्क निकालले, इस अर्क को यदि कोई स्त्री नियमपूर्वक एक मण्डल (कोई मण्डल पन्द्रह दिन का बताते हैं और कोई अडतालीस दिन का) पर्य्यन्त ऋतुकाल मे प्रारम्भ करके पीवै तौ उसके कुच कठोर होजाय, गर्भ का भय जाता रहै और प्रसूता स्त्री भी बारम्बार रमण करै ॥३१॥३२॥

प्रसव में सुखदायक अर्क।

बलयश्चक्षुष्करस्तिन्दु पिहितः कुमुदैः स च ।
उपोदकी तदर्कस्य पानात्सूते विवेदनम् ॥३३॥

तिन्दुका वृक्ष बलकारक और नेत्रों को हितकारी होता है इस का कमलो का पिधान देकर अर्क निकालले, यह अर्क पान करने से प्रथम प्रसूता स्त्री भी सुखपूर्वक सन्तान प्रसव करतीहै ॥३३॥

क्षीरिवृक्षों के अर्क के गुण ।

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारिसप्लक्षपादपाः ।
पञ्चैते क्षीरिणो वृक्षास्तेषामर्को व्रणणुत् ॥३४॥
मेदाघ्नः स्नानतो लेपाद्विसर्पामयनाशनः ।
शोथघ्नस्तस्य सेकेन भग्नसन्धानको भवेत् ॥३५॥

बड, पीपल गूलर, पारसपीपल, और पाकर ये पाच दूध वाले वृक्ष है, इनका अर्क घाव को दूर करता है ॥ ३४ ॥ इससे स्नान करनेसे मेदरोग दूर होता है इसका लेप करनेसे विसर्परोग

दूर होता है और इससे सेक करने से सूजन दूर होती है तथा टूटी हुई हड्डी जुड जाती है ॥३५॥

पुष्पों के अर्क के गुण।

सेवती शतपत्री च वासन्तीगुलदावदी ।
चम्बेलीयूथिका चम्पा वकुलश्च कदंबकाः ॥३६॥
छादयेत्केतकीपत्रैर्ग्राह्योऽर्को गुरुमार्गतः ।
पुष्पार्क इति विख्यातो मरिचैः सहितं पिबेत् ।
वर्षाधिकं तु यक्ष्माणं हन्याच्छ्रेष्ठो मृगाङ्कतः॥३८॥

सेवती, गुलाब, माधवी, गुलदाऊदी, चमेली, जुही, चम्पा वकुल और कदम्ब ॥ ३६ ॥ इनके फूलो को केतकी के पत्तों से ढककर गुरु के बताये हुए मार्ग द्वारा अर्क निकालले, इसका नाम पुष्पार्क है, इसे मिरचों के साथ पीवे ॥ ३७ ॥ जो इसको एक मण्डल नामक अवधि पर्य्यन्त पीवै तौ नपुसक भी पुरुष होजाता है और एक वर्ष पर्य्यन्त इसका सेवन करने से राजयक्ष्मा रोग दूर होजाता है, यह मृगाक से भी श्रेष्ठ है ॥३८॥

विषों के अर्क के गुण।

वत्सनाभश्च हारिद्रः सौतिकश्च प्रदीपनः ।
सौराष्ट्रिकः शङ्खकश्च कालकूटहलाहलाः ॥३९॥
ब्रह्मपुत्रस्त्वमी ख्याता विषभेदास्तदर्कतः ॥
लेपेन गण्डमालाद्या वातरोगा श्शमन्ति च ॥४०॥

वत्सनाभ (बचनाग) हारिद्र, मौतिक प्रदीपन सौराष्ट्रिक शंखक,

कालकूठ, हलाहल और ब्रह्मपुत्र ये नौ विष के भेद है,इनके लेप करनेसे गंडमाला आदि और वातरोगोंका नाश होता है ॥

शालिधान्योंके अर्क के गुण ।

रक्तशालिः सकलमः पाण्डुकः शकुनाहतः ।
सुगन्धकः कर्दमकोमहाशालिरदूषकः ॥ ४१ ॥
पुष्पाण्डकः पुण्डरीकस्तथा माहिषमस्तकः ।
दीर्घशूकः काञ्चनको हायनो लोध्र पुष्पकः॥ ४२ ॥
इत्याद्याः शालयः सन्ति बहवोबहुदेशजाः ।
तासां पिष्टंयथालाभं क्षिपेदष्टगुणे जले ॥ ४३ ॥
यावज्जीवसमुत्पत्तिर्जीवानां विलयस्तथा ।
ततोदत्त्वार्कयन्त्रे तन्मद्यं निष्काशयेत्सुधीः ॥४४॥
स्वाद्वी मृद्वीग्राहणी च बलदा ज्वरहारिणी ॥
नानादुःखहरा स्निग्धाचात्युन्मादत्रिदोषजित् ॥४५॥

रक्तशालि, सकलम, पाण्डुक, शकुनाहत, सुगन्धक, कर्दमक, महाशालि, अदूषक ॥४१॥ पुष्पाण्डक पुण्डरीक, माहिषमस्तक,दीर्घशूक, काचनक, हायन और लोध्रपुष्पक ॥ ४२ ॥ इत्यादि अनेक देशोमें अनेक प्रकारके शालि धान्य उत्पन्न होते है, इनमेसे जितने प्रकारके मिलसके उनको पीसकर अठगुने जलमें डालदे ॥ ४३ ॥ और जबतक उसमें कीडे न पडजाय तबतक उसको रखखा रहने दे फिर उसको अर्कके यंत्रमें डालकर मद्य निकालले यह मद्य स्वादुवाली, मृदु, ग्राही, बलकारक, ज्वरका नाश करनेवाली- अनेक प्रकारके

दुःखोको दूर करनेवाली, स्निग्ध, उन्माद, और त्रिदोष को दूर करनेवाली है ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

शिम्बी धान्योके अर्क के गुण ।

मुद्गमाषोराजमाषोनिष्पावश्चमकुष्टकः ।
चणकाढकिमांगुल्यातृणकण्कलापकाः ॥ ४६ ॥
द्विदलीकृत्य विदुषा ततश्चूर्णी कृत पुनः।
पूर्ववत्साधयेन्मद्यं तुषधान्यसमुद्भवम् ॥४७॥
मासाधा त्कुरुतेदोषंनियमात्सगुणश्चतान् ।
भूमिस्थमयनादूर्द्धतनुतेगुणसन्ततिम् ॥ ४८ ॥
बिण्मूत्ररोधमाध्यानं त्रिदोषोन्मत्तारुजम् ।
शिरोजठरजङ्घासु पिटिका नपिनाशयेत् ॥ ४९ ॥
ईषन्मदकरःस्निग्धो हरेत्पूर्वोदितान् गदान् ।
संवासयेत्पंचवाणमुद्दीपय तिचानलम् ॥ ५० ॥

मूंग, उरद, राजमाष, निष्पाव, मोंठ, चना, अडहर, मसूर, खेसारी और मटर ॥ ४६ ॥ इनकी दाल करके फिर उस दालको पीसले और पूर्वोक्त रीतिके अनुसार अर्क निकालले, तुस धान्य से बना हुआ यह मद्य ॥ ४७ ॥ महीनेमे या आगे महीनेमें या तौ विकार करै या नियमसे गुणवाला होजाता है जो यह छः महीने तक भूमिमें गड़ा रहै तौ गुणोंका विस्तार करता है ॥ ४८ ॥ यह विष्ठा और मलका अवरोध, आध्मान, त्रिदोषज, उन्माद, सिर पेट और जंघाके फोडों को दूर करनेवाला है ॥ ४९ ॥ कुछ मद करता

स्निग्ध है और पहिले कहे हुए रोगो को दूर करता है कामदेवको प्रबल करता है और जठराग्निको बढाता है ॥ ॥५०॥

तैल धान्यों के अर्क के गुण ।

तिलातसी च तोरी च त्रिविधःचापिसर्षपः ।
द्विधा राजी खसं चैव बीजं कौसुंभसंभवम् ॥५१॥
एतानि तैलधान्यानि शटितानि च पूर्ववत् ।
ततो निष्काशयेदर्कं गन्धपाषाणवासितम् ॥५२॥
मुहुर्विलेपतो रोगान्नरकुञ्जरवाजिनाम् ।
हरत्येव न सन्देहः स्वर्जिक्षार समन्वितम् ॥५३॥
सर्व्वेषु कर्णरोगेषु बाधिर्ये कर्णपूरणम् ।
अनेनघर्षयेच्छङ्खंनयनाञ्जनमाचरेत् ॥५४॥
कण्डूपुष्पंजलस्रावं पक्ष्मरोगं व्यपोहति ।
अभ्यङ्गादीमिदं चैवबल्यंत्वंक्यश्चकेशकृत् ॥५५॥

तिल, अलसी, अडहर, तीनो तरह की सरसों दोनो प्रकार की राई, खस, और कुसुम के बीज, ॥ ५१ ॥ ये सब तैल धान्य है इनको पूर्ववत छानकर और गध पासाण की वासना देकर विधिपूर्वक यंत्रद्वारा अर्क खीचले ॥ ५२ ॥ इस अर्क मे सज्जीखार मिलाकर लेप करने से मनुष्य हाथी और घोडे सबके रोग दूर होते हैं इसमे सन्देह नहीं है ॥ ५३ ॥ सब प्रकार के कर्ण रोगो मे, बधिरता मे इसको कानो में भरदे । और इसमें शंख को घिसकर

आखो में अंजन करे ॥ ५४ ॥ तो इससे खुजली, फूला, आखो से जल गिरना, और पलकों के सब रोग दूर होते है इसका शरीर पर मर्दन करने से कान्ति बढती है तथा यह बलकारक, त्वचा को हितकारी और केशों को बढाने वाला है ॥ ५५ ॥

मधुजाति नाम ।

माक्षिकं भ्रामरं क्षौद्रंयौतीकं छात्रमित्यपि ।
दार्ढ्य मौद्दालकं दालमित्यष्टौ मधुजातयः ॥५६॥

माक्षिक (मक्खी का), भ्रमर, (भौंरेका), क्षौद्र यौतीक, छात्र, दार्ढ्य, औद्दालक और दाल ये आठ शहदकी जाति है ५६

ईखकी जाति ।

पौण्ड्रको भीरुकश्चापि वंशकः शतपोटकः ।
कान्तारस्तापसेक्षुश्च काष्ठेक्षुः शुचिपत्रकः ॥५७॥
नैपालोदीर्घपत्रश्च नीलपो रोथकोश कृत् ।
एताद्वादश संख्याता इक्षूणां जातयः स्मृताः॥५८॥

पौंड्रक, भीरुक, वंशक, शतपोटक (किसी पुस्तक में शतपोरक), कान्तार, तापसेक्षु, काष्ठेक्षु, शुचिपत्रक (पाठान्तर शतपत्रक), ॥ ५७ ॥ नैपाल, दीर्घपत्र, नीलपोर और कोशकृत् ये बारह जाति ईख की कही है ॥ ५८ ॥

ईख के विकार ।

फाणितंचैवमत्स्यण्डी गुडखण्डकमेवच ।
सिता सितोपला चैतेषड्भेदा इक्षुजामताः ॥५९॥

फाणित, मत्स्यण्डी, गुड, खांड, सिता और सितोपला ये ६
ईख के विकार हैं ॥ ५९ ॥

अम्लवर्ग के अर्क के गुण।

आम्र आम्रातको धात्री लकुचं च कपित्थकम् ।
नारङ्गं द्विविधा जम्बूः करमर्द्द पियालकम् ॥६०॥
बीजपूरं च जम्बीरं निम्बवम्ली काम्लवेतसम् ।
दाडिमं पर्वतद्राक्षा द्विधा बदरतुन्दकम् ॥ ६१ ॥
वृक्षाम्लं हरमन्थं च चाङ्गेरीत्वम्लवर्गकः ।
शुण्ठी कणा कणामूलं यवानीमरिचानि च ॥६२॥
तुल्यान्येतानि मर्द्दाणि एभ्यो द्विदलोल्मजोरस. ।
प्रोक्तान्नवर्गतदिकान्नं स्वादुमरूयानयोग्मिता ॥६३॥
सर्व्वेभ्यो द्विगुणं कार्य्यं स्थापयेन्मामपात्रकम् ।
कुर्य्यादष्टप्रहरकं प्रत्यहं च ततः पुनः ॥६४॥
ततो निष्कामयेदर्कं सुरेयं राजवारुणी ।
मांसं भूमौ निखानव्या तन ऊर्द्ध्वं भक्षयेत् ॥६५ ।
मयामहेश्वर मुखाच्छ्रुत्वा तस्यै समर्पिता ।
तेन दत्ता भैरवेभ्यो लोलजिह्वाः पिबन्ति तं ॥६६॥
इयं शीता लघुस्वाद्वी स्निग्धग्राही विलेखनी ।
चक्षुष्या दीपनी स्वर्या व्रणशोधनरोपणी ॥६७॥
सौत्रमार्दवकरा सूक्ष्मा परंस्रोतोविशोधनी ।

कषायातु रसाह्लादिप्रसादजनका परा ॥ ६८ ॥
वर्णमेधाकरी वृष्या विशदा रोचकतां हरेत् ।
कुष्ठार्शः कासपित्तासृक्कफमेहक्रमक्रमीन् ॥ ६९ ॥
मेदतृष्णान्वमिश्वासहिक्कातीसारविड्ग्रहान् ।
दाहक्षतक्षयायैव योग वाह्याम्लवातला ॥ ७० ॥

आम, अम्बाडा, आंवला, बडहर, कैथ, नारंगी दो प्रकार की जामन, करोंदा, चिरौंजी ॥ ६० ॥ बिजौरा, जंभीरी, इमली, अमलवेत, अनार, पहाडी दाख, मुनक्का, बेर सहतूत ॥ ६१ ॥ वृक्षाम्ल, हरिमन्थ और चांगेरी यह अम्लवर्ग है। सोंठ, पीपल, पीपलामूल, अजवायन और काली मिरच ॥ ६२ ॥ इन सबको समान भाग ले, इनसे दुगुना अम्लवर्ग का रस ले और आठ मधु जाति और बारह ईखजाति इन बीस द्रव्योको ।। ६३ ॥ सबसे दुगुना डाले, फिर सबको एक महीने तक रक्खा रहने दे प्रतिदिन आठों प्रहर उसकी उत्तम प्रकार से रक्षा करता रहै ॥ ६४ ॥ फिर उसको यंत्र में रखकर अर्क निकाल ले इसका नाम राजवारुणी सुरा है, इसको एक महीने तक पृथ्वी में गड़ी रहने दे फिर इसका सेवन करे ॥ ६५ ॥ यह मदिरा महादेवजी से मुझको प्राप्त हुई और इन्होंने ही इसे पार्वती जी को दिया और पार्वती ने भैरवोंको दिया जो चंचल जिव्हा से इसका पान करते हैं ॥ ६६ ॥ यह मदिरा, शीतल, लघु, सुस्वादु, स्निग्ध, ग्राही, विलेखन (मल को उखाडने वाली) नेत्रों को हितकारी, दीपन, स्वर को शुद्ध करने

वाली, व्रणको शुद्ध करनेवाली और भरनेवाली ॥ ६७ ॥ शरीरको सुन्दर करनेवाली, शरीरकी सूक्ष्म नसोंको शुद्ध करनेवाली, कुछ कषैली, रसको आनन्द बढानेवाली और प्रसन्नताको उत्पन्न करनेवाली॥६८॥ वर्णको सुन्दर करनेवाली, बुद्धिको बढानेवाली, वीर्य बढाने वाली अत्यन्त निर्मल, अरुचिको दूर करनेवाली, कुष्ठ, अर्श, खासी, रक्त, पित्त, कफ, प्रमेह थकावट और कृमि ॥ ६९ ॥ मेदरोग, तृष्णा, वमन, श्वास, हिचकी अतिसार, मलविबन्ध, दाह, क्षत और क्षय इन सब विकारोंको दूर करनेवाली है तथा योगवाही और अम्ल-वातकारक है ॥७०॥

तुष धान्यों का अर्क।

कंगुश्चणः कोद्रवश्च श्यामाको वन कोद्रवः ।
शणबीजं वंशबीजं गवेधुश्च प्रसाधिका ॥७१॥
यावन्त्येतानि चोक्तानि तुष धान्यानिवेधसः ।
सर्व्वेसं कुटच यत्नेन वितुषी कृत्यथत्नतः ॥७२॥
तक्रे वा क्वचिदम्ले वा आकीटंतद्विनिक्षिपेत् ।
ततोनिष्कासयेन्मद्यं भवेत्सा क्षुद्रवारुणी ॥७३॥

कागनी, चना, कोदों, समद वनकोदों, सनके बीज, वासकेबीज, गरहेडुआ और प्रसाधिका (नीवार) ॥ ७१ ॥ ये जो तुषधान्य कहे है इनको कूटकर भूसी अलग करदे ॥ ७२ ॥ और फिर तक्रमे अथवा किसी खटाईमें भिगोदे और जबतक कीडे न पडें तबतक रक्खा रहनेदे फिर यन्त्रमें भरकर मद्य खींचले इसका नाम क्षुद्र-वारुणी है ॥७३॥

तुष धान्यो के अर्क के गुण।

मण्डलोर्द्ध्वंतु भोक्तव्या बहुक्लेश करैर्नरैः ।
क्षुधा तृषा च चिन्ता च पर्व्वतारोहणादिकम्॥७४॥
एतत्संसेविनोनास्ति महा भारवहोपिवा ।
सूता समुपविष्टश्चेज्जयेत्प्रसव वेदनाम् ॥७५॥

यह तुष धान्योंका अर्क एक मडल में अधिक उस मनुष्यका सेवन करना चाहिये जो बहुत परिश्रम करता है इसके सेवन करनेसे क्षुधा, तृषा, चिन्ता, पर्वत आदिपर चढनेका परिश्रम ॥ ७४ ॥ और बहुत वोझा ले जानेके कारण उत्पन्न हुई थकावट तथा प्रसूतीकी प्रसव समयकी वेदना दूर होती है ॥७५॥

जाङ्गल पशुओं का अर्क।

हरिणै णकुरङ्गश्च पृषतन्यं कुशंम्बरः ।
राजीवोपि च मुण्डी चेत्याद्या जाङ्गल संज्ञकाः ७६
एषां मांसंतु कणशः कृत्वा पूर्व्वं द्रवेत्तपेत् ।
संस्थाप्य मण्डलं पश्चादर्कं निष्काशयेत्ततः ॥७७॥
एव सर्व्वत्र मांसस्य वारुणी करणक्रिया ।
पित्तश्लेष्महरीकश्चिद्वातला बलवर्द्धिनी ॥७८॥

हिरण, कालाहरिण, कुरंग, पृषत (श्वेतबिन्दु युक्त मृग), न्यंकु [मृग विशेष], शम्बर [मृगविशेष], राजीव और मुण्डी आदि मृगोंकी जाङ्गल सज्ञा है ॥७६॥ इसके मांसके टुकडे २ कर उनको तक्र अथवा किसी खटाई मे डालकर एक मंडल तक रक्खारहने

दे फिर विधि पूर्वक अर्क निकालले ॥७७ ॥ इसी प्रकार सर्वत्र मास की वारुणी बनावे कोई वारुणी पित्त और कफको दूर करनेवाली होती है और कोई वातकारक तथा बलवर्धक होती है ॥ ७८ ॥

बिलेशयों के मांस का अर्क ।

गोधाशश भुजङ्गाश्च वृश्चिकाद्याविलेशयाः ।
एतत्सुरा वातहरा बृंहणाबद्ध मूत्रविट् ॥७९॥

गोह, खरगोश, सर्प, मूंसा और बिच्छू आदि बिलेशय (बिल में रहनेवाले जीव) हैं इनके मासका मद्य बातको दूर करनेवाला, शरीरको पुष्ट करनेवाला, और मलमूत्रको अवरोध करनेवाला है ॥७९

गुहाशयों के मांस का अर्क ।

सिंह व्याघ्र वृका ऋक्षतरक्षुद्वीपिनस्तथा ।
बभ्रु जम्बुक मार्ज्जार इत्याद्याः स्युर्गुहाशयाः ८०
स्निग्धो बल्योहितो नित्यंनेत्रंगुह्यविकारिणाम् ।

सिंह, व्याघ्र, (बघेरा) भेडिया, रीछ, गैंडा, न्यौला गीदड और बिल्ली आदि गुहाशय (गुफामें रहनेवाले) जीव हैं ॥८०॥ इनके मासका अर्क स्निग्ध, बलकर्त्ता, और नेत्र तथा गुह्यस्थानकी पीडावाले मनुष्यों के लिये हितकारी है ।

पर्णमृगों के मांस का अर्क ।

वानराबृक्षामार्ज्जारोवृक्षमर्कटकादयः ॥८१॥
एतेपर्णमृगाश्चार्कोवृष्योनेत्र्यश्चशोषिणाम् ।
श्वासार्शः कासशमनोत्सृष्टमूत्रपुरीषकः॥८२॥

बानर (बन्दर) वृत्तमार्जार और वृत्तमर्कट आदि ॥ ८१ ॥ जीवोंको पर्णमृग कहते हैं इनके मांसका अर्क वीर्यका वढानेवाला नेत्रोंको हितकारी, शोषरोगियोंको लाभदायक, श्वास, ववासीर और खांसी को करने वाला मलमूत्रको निकालनेवाला है ॥ ८२ ॥

विष्किर जीवों के मांस का अर्क।

वर्त्तिका लाव गिरिका कपिञ्जल कतित्तिरः ।
कुलिंग कुलटाद्याश्च विष्किरारसमुदहृताः ॥८३॥
वन्यो वृष्यो त्रिदोषघ्न एतदर्कस्तु पथ्यलः ।

वतक, लवा, गिरिका कपिंजल, तीतर, कुलिंग और मुर्गा आदि पत्ती विष्किर कहलाते है ॥ ८३ ॥ इनके मासका अर्क बल-कारक वीर्यवर्द्धक, त्रिदोष को दूर करनेवाला और पथ्य है ।

प्रतुदजीवों के मांस का अर्क।

हारीतो धवलःपाण्डुश्चित्रपुच्छो वृहच्छुकः ॥८४॥
पारावातः खंजरीटः पिकाद्याः प्रतुदास्मृताः ।
कफपित्त हरोग्राही बद्ध विण्मूत्रको भवेत् ॥८५॥

हरित (पत्तीविशेष) धवल (हंस वगुला आदि) पाण्डु, चित्रपुच्छ वृहच्छुक ॥ ८४ ॥ कबूतर, खंजरीट (खंजन) और कोयल आदि पत्तियों की प्रतुद संज्ञा है, प्रतुद पत्तियों के मांस का अर्क कफ और पित्त को दूर करने वाला और मलमूत्र का अवरोध करने वाला है ॥८५॥

प्रसहोजीवों के मांस का अर्क।

काको गृध्र उलूकश्च चिल्लः शशघातकः ।

चाषो भासश्च कुकुर इत्याद्याः प्रसहाः स्मृताः॥८६॥
एतत्सुरा भस्मकरा तस्मान्मेदस्विनो हिता ।

काक, गिद्ध, उल्लू, चील, राज, शशघातक, चाष, भाष, और कुकुर आदि पक्षियोकी प्रसह संज्ञा है ॥ ८६ ॥ इनका मद्य भस्म कारक है इस लिये मेद रोगियो को हितकारी है ।

ग्राम्यपशुओंका अर्क ।

कालीयछागगोमेषा हयाद्या ग्राम्यसंज्ञकाः ॥ ८७ ॥
दीपनो वातहृत्पैत्तो बृंहणो बलवर्द्धनः ।

कालीय, बकरा, गाय (अथवा बैल), मेंढा और घोडा आदि पशुओं को ग्राम्य (ग्राममें रहनवाल) पशु कहते है ॥ ८७ ॥ इनके मासका अर्क अग्निका दीप्त करनेवाला, वातनाशक, पित्तकर्त्ता, बृहण और बल बढ़ाने वाला है ।

कूलेचरजीवोंका अर्क ।

लुलायगण्डवाराहचमरीवारणादयः ॥ ८८ ॥
कूलेचरा एतदर्को वृष्यः श्लेष्मविवर्द्धनः ।

भैसा, गेडा, सूअर, चमरी (सुरागाय), और हाथी आदि पशुओको कूलेचर अर्थात् जलके किनारे पर बिचरनेवाले पशु कहते है ॥ ८८ ॥ इनके मासका अर्क वीर्यको बढानेवाला और कफको बढाने वाला है ।

सवजीवोका अर्क ।

हंससारसकाकाद्दचक्रक्रौञ्चशरारिका ॥ ८९ ॥

नन्दीमुखसकादंबा बलाकाद्याः प्लवाः स्मृताः ।
एतन्मद्यं शुक्रकरं बल्यं स्निग्धं त्रिदोषनुत् ॥ ९० ॥

हस, सारस, काकाक्ष, चकवा, क्रौंच, शरारि ॥ ८८ ॥ नन्दीमुख, कादंव, और वालाका इन पक्षियो का प्लव (उछल कर उडनेवाले) संज्ञा है, इनका मद्य वीर्यको उत्पन्न करनेवाला, वसकर्त्ता स्निग्ध और त्रिदोषको दूर करनेवालाहै ।९०।

कोशस्थितोके अर्कके गुण ।

शङ्खश्चशङ्खकश्चापि शुक्तिः शम्बूककर्कटौ ।
एते कोशस्थिताश्चार्को बृंहणो बलवर्द्धनः ॥ ९१ ॥

शङ्ख, छोटा शङ्ख, सीपी, शम्बूक (घोंघा) और केकर्ट (केकडा) ये कोशास्थित अर्थात् कोथलीमे रहनेवाले जीव है, इनका अर्क बृहण और बलको बढानेवाला है ॥ ९१ ॥

पादि जीवोंके अर्कके गुण ।

कुम्भीरकूर्मनक्राश्च गोधामकरशङ्कवः ।
घटिकः शिशुमारश्च इत्याद्याः पाहिनः स्मृताः॥९२॥
यदिजाता सुरा वातहन्त्री स्निग्धा विशेषताः ।

कुम्भारी, कछुआ, नक्र [ग्राह] गोधा, मगर, शंकु, घडियाल, और सूस इन जीवोकी पादा [यादी] संज्ञा है है ॥ ९२ ॥ जो इनके मांसका मद्य बनाया जाय तौ वह वातको दूर करता है, और स्निग्ध करने वाला है।

मत्स्यो मीनो विसारश्च झषो वैसारणोण्डजः ॥९३॥

शकली पृथुरोमा च रोहितश्च सुदर्शनः ।
एते मत्स्या एतदर्को रोचको बलवर्द्धनः ॥९४॥

मत्स्य, मीन, विसार, भुष, वैसारी, अण्डज ॥९३॥ शकली, पृथुरोमा, रोहित और सुदर्शन इतने भेद मछलियोंके हैं, इनका अर्क रुचिकर्त्ता और बल बढ़ानेवाला है ॥ ९४ ॥

नृमत्स्योंके मांसार्कका गुण ।

नृमत्स्यार्कस्तु निष्कायनाना पुष्पैः सुवासितैः ।
यः सेवयेन्मासषट्कं वलीपलितवर्ज्जितः ॥ ९५ ॥

नृमत्स्यों [पुरुषजातिके मच्छों] का अर्क अनेक प्रकारके पुष्पों से सुबासित करके निकालले, इस अर्कको जो मनुष्य छः मासतक सेवन करता है, उसके वलीपालित रोग नहीं होता है ।

मनुष्यके मांसार्कके गुण ।

मनुष्यमांसजर्कन्तु मासषट्कं तु सेवयेत् ।
न क्रामते शरीरस्य सर्पादीनां विषं कचित् ॥९६॥

यदि कोई मनुष्यके मांसका अर्क छः महीनेतक सेवन करै तौ उसको सर्प आदिके विषका भय नही होता ॥ ९६ ॥

अण्डोंके अर्कके गुण ।

त्वचैलामरिचं चन्द्रो लवङ्ग जातिपत्रकम् ।
दत्त्वाण्डानामुपरितो घृतं विंशतिभागिकम् ॥ ९७॥
अण्डार्कोयं स्यगुणकृत्वृष्यो वातघ्नशुक्रजः ।

अण्डोंका अर्क निकालनेके यन्त्रमें रखकर उसके ऊपर तज,

इलायची, कालीमिरच, कपूर, लौंग, जावित्री और इन सबका बीसवां भाग घी रखकर अर्क निकालले ।। ९७ ।। जिस अण्डेका अर्क निकाला जायगा उस अर्कका गुण उसहीके समान होगा और विशेष करके सब अण्डोंका अर्क बल बढानेवाला, बातनाशक और वीर्यका उत्पन्न करनेवाला है ।।

प्रत्येक ऋतुके योग्य अर्क ।

निम्बाम्रांकुरसम्भूतो वसन्ते ग्रीष्म केपुनः।।९८।।
सेवतीशतपत्रीजो वर्षायां त्रिफलाभवः ।
पारिजातककाश्मीरीजातोऽर्कः शरदिस्मृतः ।। ९९ ।।
यवानी गुलदावद्यो हेमन्ते शिशिरे पुनः ।
यवानी जन्तुयः सेवे त्तस्य रोगभयं कुतः।। १०० ।।

इतिलंकानाथकृतोऽर्कचिकित्सानानौ
षधिविधानर्थशतकंचतुर्थम् ।।४।।

वसन्तऋतुमें नीम और आमके अंकुरोंका अर्क सेवन करना हितकारीहै। ग्रीष्मऋतुमें सेवती और गुलावका अर्क सेवन करना चाहिये वर्षाऋतुमे त्रिफलाका अर्क सेवन करै और शरदऋतुमें कुम्भेरका अर्क सेवन करना लाभदायक है ।। ९८ ।। ९९ हेमन्तऋतुमें अजवायन और गुलदाऊदीका अर्क सेवन करै और शिशिरऋतुमें अजवायनका अर्क सेवन करै तौ फिर रोग होनेका भय नही रहता ।। १०० ।।

इतिश्री रावणकृतार्कप्रकाशे मथुरानिवासि कृष्णलालकृत भाषाटीकान्वितं चतुर्थशतकम् समाप्तम्

पंचम शतक प्रारम्भ ।

ज्वर स्तंभन प्रयोग ।

ज्वरागमनवेलायां घृतार्कं मरिचान्वितम् ।
पलद्वयंपिबेद्यस्तुज्वरः संस्तम्भितोभवेत् ॥ १ ॥

जो ज्वर आने के समय घीका अर्क दो पलले उसमें काली-मिरच मिलाकर पीवै तो ज्वर रुक जाता है ॥१॥

शीतज्वर पर प्रयोग ॥

एकविंशतिवाराणि कदल्यर्केणभावितम् ।
चूर्णं तालंमुद्गमितं दिनाच्छीतज्वरं हरेत् ॥ २ ॥

हरताल के चूर्णमें केलाके अर्क की इक्कीस भावना दे फिर उसमे से एक मूग के प्रमाण रोगी को दे तो पहिले ही दिन शीत, ज्वर रुक जाता है ॥२॥

शीतज्वर पर अन्य प्रयोग ॥

मेथीवनाढ्यातुलसीकालामललवङ्गकैः ।
भूनिम्बेनार्क उत्पन्नो निर्वापो मौक्तिका क्षयोः॥ ३॥
मारि तस्य प्रवालस्य भस्मनोज्वरनाशनः ।

मेथी, वनमेथी, तुलसी, कालेआवले और लौंग इनका चिरा-यतेके साथ अर्क निकालकर उसमे मोती और कोडी गरम करके बुझावे ॥३॥ फिर मूंगेकी भस्म मिलाकर सेवन करै तो शीतज्वर दूर हो ॥

विषम ज्वर पर प्रयोग ।

सुराजीर्णगुडासाज्या निहंति विषमज्वरान् ॥४॥

पुराने गुडकी मदिरामे घी मिलाकर सेवन करे तो विषमज्वर दूर होता है ॥ ४ ॥

सन्निपात नाशक अर्क ।

अर्कस्तु दशमूलानां लवंगमरिचान्वितः ।
सन्निपातं हरेत्तूर्ण पलस्यैकस्य सेवनात् ॥५ ॥

दशमूल के अर्कमें लोग और कालीमिरच मिलाकर एक पलके प्रमाण सेवन करै तौ सन्निपात शीघ्र दूर होता है ।

आमातिसार नाशक अर्क ।

शृंगवेरं नागरं च मग्नमेरडजे द्रवे ।
पर्पटानिर्गतार्कस्तु हरेदामातिसारकम् ॥ ६ ॥

अदरख और सोठ इनको कुछ कालतक अरण्डके रसमें भिगोवे फिर पित्तपापडे के साथ उनका अर्क निकालकर सेवन करै तौ आमातिसार दूरहो ॥६॥

पक्वातिसार नाशक अर्क ।

धातक्याम्रा स्थिबिल्वानि लोधेन्द्र यवतोयदान् ।
निधाय माहिषतक्रे तदर्कः पक्वसारहा ॥ ७ ॥

धायके फूल, आमकी गुठली, बेलगिरी, लोध, इन्द्रजौ और नागरमोथा इनको भेंस के मठामें भिगोदे फिर अर्क निकालकर सेवन करै तो पक्वातिसार का नाश होता है ॥७॥

रक्तातिसार नाशक अर्क।

वत्सदाडिमत्वचोस्तु साधितोमधुनान्वितः ।
दधिभक्ताशिनं कार्य रक्तातीसारनाशनः ॥८॥

कुडाकी छाल और अनारकी छाल इन दोनों का अर्क शहद मिलाकर सेवन करै और दूध भातका भोजन करै तो रक्तातिसार दूर हो ॥ ८ ॥

प्रवाहिका के ऊपर अर्क।

धातकीवदरीपत्रकपित्थरसमाक्षिकम् ।
लोध्रं दधिप्लुतं चार्कः प्रवाहीनाशनः परः ॥९॥

धायके फूल, वेरके पत्ता, कैथका रस, शहद और लोध इनमें दही मिलाकर अर्क निकाल ले, यह अर्क प्रवाहिका रोगका नाश करने वाला है ॥ ९ ॥

संग्रहणी नाशक अर्क।

तक्रनिर्वापिता मुद्गास्तदर्को धान्यजीरकैः ।
सैन्धवेन समायुक्तो हन्यात्संग्रहणीगदम् ॥१०॥

मूंगको प्रथम तक्र में भिगोले फिर उसका अर्क निकालकर धनिया, जीरा और सेंधानमक मिलाकर सेवन करै तौ संग्रहणी रोग दूर होता है ॥ १० ॥

वालग्रह नाशक धूप।

एकविंशतिवाराणि गैरिकंचूर्णं भावितम् ।
छिक्कन्यार्केण तधूमा न्महारोग क्षयेभवेत् ॥११॥

नकछिकनीके अर्ककी गेरूके चूर्णमें इक्कीस भावनादे फिर उस चूर्णकी धूपदे तौ बालकों के बडे बडे रोगों का नाश होजाता है ११

उक्त धूप के गुण ।

ग्रहभूतपिशाचाद्याः पूतनामातृकादयः ।
धूपेनानेन सर्वेऽपिन स्पृशन्तीह बालकम् ॥१२॥
कंकरः कोणकश्चैव सकोणःकठिनस्तथा ।
एतेषां नो भयंभूयाद्यदि धूपः प्रधूपितः ॥१३॥
वेणी येणी च संयुक्ता कुक्कुरा रक्तसारिका ।
प्रभूता स्वरितारात्रि र्न स्पृशन्ति इमाः शिशुम् ॥१४॥
जीवन्ति ते वर्षशतं धूपस्याऽस्य प्रभावतः ।
इमां विद्यां न यच्छन्ति ते नरा ब्रह्मघातिनः॥१५॥

इतिबालग्रहशांतिधूपः ॥

ग्रह, भूत और पिशाच आदि पूतना और माता आदि कोई भी ग्रह इस धूपके देने पर बालकों का स्पर्श नहीं करते ॥ १२ ॥ ककर, कोण, सकोण और कठिन (मेवाल ग्रहों के नाम हैं) इन बाल ग्रहों का इस धूप के देने से भय नहीं होता ॥ १३ ॥ जिस बालकको यह धूप दी जाती है उसको वेणी, येणी कुक्कुरा, रक्त-सारिका, प्रभूता, स्वरिता और रात्रि ये सात बालमातृका उस बालक का स्पर्श नहीं करते हैं ॥१४॥ इस धूपके प्रभाव से बालकों की आयु सौ वर्षकी होजाती है और जो मनुष्य इस विद्या (धूप) को प्रगट नहीं करते हैं उनको ब्रह्मघाती समझना चाहिये ॥१५॥

मन्दाग्नि नाशक अर्क ।

शुण्ठी पथ्या दाडिमत्वक्सगुडा वारुणी कृता ।
शोषणी सा द्विपलिका प्रोक्ता मन्दाग्निनाशिनी ॥१६॥

सोंठ, हरड और अनार की छाल इनका गुडके साथ मद्य बनाले, यह मद्य दो पलके प्रमाण सेवन करने से मन्दाग्नि का नाश करता है ॥ १६ ॥

विषूचिका नाशक अर्क ।

पञ्चकोल शिवा जाजी मरिचं चाम्लभावितम् ।
तदर्को हरति क्षिप्रं दुर्निवार विषूचिकाम् ॥१७॥

पंचकोल (पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ) हरड, जीरा और कालीमिरच इनको अम्लरसकी भावना देकर फिर अर्क निकाले, यह अर्क दुर्निवार (दूर न होने योग्य) विसूचिका अर्थात हैजा दूर होजाता है ॥ १७ ॥

अजीर्ण नाशक अर्क ।

यवान्यर्को मुस्तयुक्तः कट्वाम्लाभ्यां विलोडितः ।
गन्धपाषाणधूपेन वासितोऽजीर्णनाशनः ॥१८॥

मोथा के साथ अजवायन का अर्क निकालकर उसमें कटु और अम्लरस मिलाकर गन्धक की वासना देकर प्रयोग करै तो अजीर्ण दूर होता है ॥ १८ ॥

विषमाग्नि नाशक अर्क ।

शुण्ठी कुलिंजन चाम्लभावितं तस्यचार्कतः ।

पटुयुक्तं हरेच्छीघ्रं विषमाग्नि न संशयः ॥१६॥

सोंठ और कुलीजन दोनों को खटाई मे भिगोकर अर्क निकालले फिर उस अर्क में नमक मिलाकर सेवन करै तो विषमाग्नि शीघ्रही नष्ट होजाती है ॥ १६ ॥

भारी अन्न का पचाने वाला अर्क।

दुग्धं दधि घृतं मूत्रं पललं महिषोद्भवम्।
भुंक्ते तदर्कों भुञ्जीत गुर्वन्नभस्मकाग्निहृत् ॥२०॥

भैस का दूध, दही, घी, मूत्र और मास इनका अर्क भारी अन्नको भस्म करता है और दाहको दूर करता है ॥ २० ॥

मन्दाग्नि नाशक अर्क।

खुरासानी यवानी च कुबेराक्षो विडङ्गकम्।
व्योषश्चैषां कृतोह्यर्क स्त्वग्निमन्दरुजंहरेत् ॥२१॥

खुरासानी, अजवायन, पाढल, वायविडंग और त्रिकुटा इनका अर्क मन्दाग्नि रोगको दूर करता है ॥ २१ ॥

जूं और लीखों को दूर करने वाला अर्क।

रसेन्द्रेण समायुक्तश्चार्को धत्तूरपत्रजः।
नागवल्लीभवो वापि यूकालिक्षाविनाशनः ॥२२॥

धतूरे के पत्रोंके अर्कमे शुद्ध पारा मिलाकर अथवा पानके अर्क में पारा मिलाकर बालोमें लगाने से जूं और लीख मर जाते है २२

खटमल, मच्छर आदि को दूर करने वाला अर्क।

खट्वायां वा गृहेवापि हरितालार्कलेपनात्।

मत्कुणा मक्षिकाः सर्पा मसका यांति तत्क्षणात् ॥२३॥

खाट अथवा घरमें हरिताल के अर्क का लेप करने से मच्छर, मक्खी, खटमल सर्प उसी समय भाग जाते हैं ॥ २३ ॥

कफ और कृमिनाशक अर्क ।

तक्रे दत्त्वा पलाशस्य बीजान्यर्क समादिशेत् ।
तदर्कपानात्कफहृत्कृमिनां नाशनं भवेत् ॥२४॥

पलाश के बीजों को मठा में भिगोकर उनका अर्क निकाले फिर उस अर्कको पीवे तो कफ और कीडोंका नाश होता है ॥२४॥

रक्तजकृमिनाशक अर्क ।

रुधिरस्थेषु कृमिषु गन्धकार्कं पिबेत्तु यः ।
रात्रौ जागरणं कुर्य्यात् रक्तकृमिनिवर्त्तते ॥२५॥

जिसके शरीर में रुधिर के कीडे जिनको जमजूआं कहते ह पड गये हों तो वह गन्धक का अर्क पीवै और रातभर जागै तो सब कीड़े मर जाते हैं ॥ २५ ॥

पांडुरोग नाशक अर्क ।

लोहचूर्णं वापिलोहंकिट्टचूर्णं पृथक्पृथक् ।
फलत्रिकाथव्योषार्कभावितंपाण्डुनाशनम् ॥२६॥

लोह का चूर्ण अथवा लोहकीटीका चूर्ण इनको पृथक पृथक् त्रिफला और त्रिकुटा के अर्क में भिगोकर सेवन करे तो पाडुरोग का नाश होता है ॥ २६ ॥

कामलारोगनाशक अर्क ।

त्रिफलार्को गुडूच्यार्को समंदेयं तु माक्षिकम् ।
दद्यात्प्रातः कामलाहृद्द्रोणपुष्परसाञ्जनात् ॥२७॥

त्रिफला का अर्क और गिलोय का अर्क इनमें समान भाग शहद मिलाकर प्रातःकाल पान करने से कामला रोग दूर होजाता है अथवा नेत्रो मे गोमा के रसका अंजन लगावै तो कामला रोग दूर होता है ॥ २७ ॥

मृद्भक्षणजन्य पांडुरोग पर अर्क ।

हरीतकी गुडूची च पर्यायतक्रभाविता ।
तदर्को नाशयत्येव पाण्डु मृद्भक्षणोद्भवम् ॥२८॥

हरड और गिलोय को कई वार तक्र (मठा) में भिगोकर फिर इनका अर्क निकालले, यह अर्क मृत्तिका भक्षण करने से उत्पन्न हुए पाण्डु रोगको निश्चय नष्ट कर देता है ॥ २८ ॥

कुम्भकामलारोगनाशक अर्क ।

गोमूत्रे भावयेद्धीमान्पर्यायेणाशिलाजतुम् ।
निष्कासितस्तदर्कस्तु कुम्भकामलिकापहः ॥२९॥

प्रथम शिलाजीत को कई वार गोमूत्र की भावना देवे फिर उसका अर्क निकालकर सेवन करे तो कुम्भकामला अर्थात् वहुत विगडा हुआ पाण्डुरोग दूर होजाता है ॥ २९ ॥

हलीमकरोगनाशक अर्क ।

लौहचूर्णंघनार्केण भावयेच्छतवारकम् ।
पिवेत्तुखादिरार्केण हलीमकनिकृन्तनम् ॥३०॥

लोह के चूर्ण को प्रथम नागरमोथा के रस में सौ भावना दे फिर उसको खैर के अर्क के साथ सेवन करे तो हलीमक (पाण्डु रोग भेद) रोग दूर होता है ॥ ३० ॥

रक्तपित्तनाशक अर्क ।

अट्टरूपकमृद्वीकापथ्यार्कश्च सशर्करः ।
वृषार्कोऽयं समधुकोरक्तपित्तनिवारणः ॥३१॥

अडूसा, दाख और हरड इन तीनों के अर्क मे खाड मिलाकर सेवन करे अथवा वृषा (कोच या मूसाकानी किम्वा अडूसा) का अर्क मधुका महुआ, किम्वा शहद मिलाकर सेवन करे तो रक्तपित्त रोग दूर होता है ॥ ३१ ॥

रक्तपित्तनाशक अन्य अर्क ।

लोध्रप्रियंगुमृद्वीकाचन्दनार्को सितान्वितः ।
वासाया क्षौद्रसंयुक्तो वन्ध्याया रक्तपित्तहृत्॥३२॥

लोध, प्रियंगु, दाख, और चन्दन का अर्क मिश्री मिलाकर पीवे, अथवा अडूसाका अर्क शहद डालकर पीवे अथवा वध्या (वांझ ककोडी) का अर्क पीवे तो रक्तपित्त रोगका नाश होता है ॥३२॥

नकसीर पर अर्क ।

अर्को दाडिमपुष्पोत्थो मृद्वीकासम्भवोऽपि वा ।
पानान्नस्याद्धरेन्नासारक्तमाम्रास्थिजोपिवा ॥३३॥

अनार के फूलों का अर्क अथवा दाख का अर्क अथवा आम की गुठली का अर्क इनको पीने से और नस्य देने से नाक से रुधिर गिरना वन्द होजाता है ॥ ३३ ॥

कण्ठ दाह और पित्त कफनाशक प्रयोग ।

द्राक्षाभया पिप्पली नामर्कश्च सितयायुतः ।
मधुना कण्ठ दाहघ्नः पित्तश्लेष्महरः परः ॥३४॥

दाख, हरड और पीपल इनके अर्कमे मिश्री और शहद मिलाकर सेवन करने से कण्ठकी जलन और कफ का नाश होता है ३४

अम्लपित्तनाशक अर्क ।

छिन्नोद्भवानिम्बपत्रपटोलदलसम्भवः ।
अर्कः क्षौद्रान्वितो हन्यादम्लपित्तं सुदारुणम् ॥३५॥

गिलोय, नीम के पत्ता और परवल के पत्ता इन तीनों का अर्क निकालकर उसमें शहद मिलाकर सेवन करे तो दारुण अम्लपित्तरोग दूर होजाता है ॥ ३५ ॥

राजयक्ष्मानाशक अर्क ।

ऊर्ध्वमूर्ध्वद्विगुणितात्वगेलापिप्पलीतुगा ।
सितोपलार्कः सक्षौद्रः सघृतो राजयक्ष्मनुत् ॥३६॥

तज, इलायची, पीपल, वंशलोचन और मिश्री इनको उत्तरोत्तर एक दूसरे से दुगुनी ले अर्थात् तज से दुगुनी इलायची, इलायची से दुगुनी पीपल इत्यादि, इन सबको मिलाकर अर्क निकालले, फिर उस अर्क में घी और शहद मिलाकर सेवन करे तो राजयक्ष्मारोग का नाश होता है ॥ ३६ ॥

शोष और क्षयनाशक अर्क ।

अजस्य हृदयार्कस्तु तन्मातृदुग्धसाधितः ।

जीवनीयकषायंतु पिबेच्छोषक्षयप्रणुत् ॥ ३७ ॥

बकरेके कलेजके मासका अर्क अथवा जीवनीय गणका क्वाथ इनमें बकरीका दूध मिलाकर पीवै तौ शोष और क्षयरोग दूर होता है ॥ ३७ ॥

अध्वशोषनाशक अर्क ।

चन्दनो शीरसेवन्ती शतपत्राब्दसम्भवः ।
अर्को हरेदध्वशोषं दिवा सुप्तम्यवेगतः ॥ ३८ ॥

चन्दन, खस, सेवती, गुलाब और नागरमोथा इन सबका अर्क निकालकर पीवै तौ अध्वशोष दूर होता है और दिनमें सोनेकी हरारत मिट जाती है ॥ ३८ ॥

व्रणशोथपर अर्क ।

दुग्ध संस्थापित कटुत्रयादर्कं समाहरेत् ।
ससितंव्रणशोथघ्नं यूषमांस रसाशिनः ॥ ३९ ॥

त्रिकुटाको दूधमे भिगोकर उसका अर्क निकालले और फिर उसमें मिश्री मिलाकर सेवन करै और मासरसका पथ्य करै तौ व्रणशोथ दूर होता है ॥ ३९ ॥

उरःक्षतनाशक अर्क ।

बला श्वगन्धा कम्भारी वटपत्रीपुनर्नवा ।
दुग्धानिर्वापितोवार्कः उरः क्षतनिवारणः ॥ ४० ॥

खरैटी, असगंध, कुम्भेर, वटपत्री और साठ इनको दूधमे भिगोकर अर्क निकालले, यह अर्क उरःक्षतरोगको दूर करता है ॥ ४०

कफनाशक अर्क ।

धूर्तबीज त्रिकटुकयवान्यर्क विभावितम् ॥
लवणं शतवारंच कफहन्यात्सुदारुणम् ॥ ४१ ॥

धतूरेके बीज, त्रिकुटा और अजवायन इन तीनोंके अर्कको सेधानमकमें सौ भावना दे फिर उस नमकका सेवन करै तौ दारुण कफ शान्त होजाता है ॥ ४१ ॥

खांसीपर अर्क।

कण्टकारी जटार्कस्तु सकृष्णः सर्वकासहा ।

कटेरीकी जडका अर्क निकालकर उसमे पीपलका चूर्ण मिलाकर सेवन करै तो सब प्रकारकी खासी दूर होती है ॥

क्षयरोग नाशक अर्क।

ककुभस्यत्वचा चूर्णं वासकेणविभावितम् ॥४३॥
सितोपला घृतमधुसंयुक्तः क्षयकासहृत् ।

अर्जुन वृक्षकी छालके चूर्णको अडूसाके अर्ककी भावना देकर ॥ ४२ ॥ मिश्री, घी और शहद मिलाकर खाय तौ क्षय और खासी दूर होती है ॥

सूखी खांसीके लिये अर्क।

कण्टकारी युग्द्राक्षावासा कर्चूरनागरैः ॥४२॥
पिप्पलीखाखसैरर्कः शर्करामधुसंयुतः ।
शुष्ककासहरश्चैषो महादेवेन भाषिताः ॥ ४४ ॥

छोटी कटेरी, बडी कटेरी, दाख, अडूसा, कचूर, सोठ, पीपल और खशखशके दाने इनका अर्क निकालकर मिश्री और

शहद मिलाकर सेवन करै तौ सूखी खासी दूर होती है, यह अर्क महादेवने कहा है ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥

श्वास रोगपर अर्क ।

कूष्माण्डकशिफार्कस्तु कोष्णः श्वासंक्षणाद्धरेत् ।
आर्द्रकार्को माक्षिकेन युक्तः श्वासनिवारणः ॥४५॥

पेठेकी जडका अर्क कुछ २ गरम पीवै तौ तत्काल श्वास रोग दूर होता है । अथवा अदरखके अर्कमें शहद मिलाकर पीवै तो श्वासरोग दूर होता है ।

हिक्का नाशक अर्क ।

स्विन्ना दुग्धेतु या शुंठीतदर्कस्त त्क्षणाद्धरेत् ।
गुडद्रवेण वा सिद्धोहन्याद्धिक्कां न संशयः ॥४६॥

दूधमे सोठको भिगोकर उसका अर्क निकालकर पीवै तो हिक्का रोग दूर होता है, अथवा गुडके शरबतके साथ सिद्ध किया हुआ सोंठका अर्क निश्चय हिचकीको दूर करता है ॥ ४६ ॥

स्वरभंग नाशक अर्क ।

अर्को वा पञ्चकोलानां शृङ्गवेररसान्वितः ।
गोघृतक्षौद्रसंयुक्तः स्वरभेदविनाशनः ॥ ४७ ॥

पंचकोल अर्थात् पीपल, पीपलामूल, चव्य चित्रक और सोंठ इन पाचोके अर्कमे अदरखका रस, गाय का घी और शहद मिलाकर सेवन करै तौ स्वरभंग रोग दूर होता है ॥ ४७ ॥

स्वरको उत्तम करनेवाला अर्क।

निम्बूरसेन मधुना मरिचैरवधूलितम् ।
कुलिञ्जनार्कं पिवति राक्षसः किन्नरायते ॥ ४८ ॥

कुलींजनके अर्कमें नीबू का रस, शहद और काली मिरच डालकर पीवै तौ राक्षसभी किन्नरके समान उत्तम स्वरवाला होजाता है ॥ ४८ ॥

अरुचि नाशक अर्क।

मूलपत्रं यवानी च तितिडिरससंयुतः ।
सटिनो हन्ति गण्डूषादर्कः सर्व्वमरोचकम् ॥ ४९ ॥

अजवायनकी जड और पत्तोके अर्कमें इमलीका रस मिलाकर कुरलाकरै तौ सब प्रकारका अरोचक रोग दूर होता है ॥ ४९ ॥

वमन रोग नाशक अर्क।

अश्वत्थत्वग्भवो वापि कमलाक्षोद्भवस्तथा ।
माक्षिकाविट्समुत्थो वा दूर्वाजो वा हरेद्वमीन् ॥५०॥

पीपलकी छालका अर्क, कमल गट्टाका अर्क अथवा सोना-माखीका अर्क वमन रोगको दूर करता है ॥ ५० ॥

तृषा रोग नाशक अर्क।

मुस्तपर्प्पटकोदीच्यधान्यचन्दनवालकैः ।
एतपदर्को हरेदाशु सर्वतृष्णां न संशयः ॥ ५१ ॥

नागरमोथा, पित्तपापडी, हाऊबेर, धनिया, चन्दन और नेत्र

वाला इन सबका अर्क निकालकर सेवन करनेसे शीघ्रही सबप्रकारकी तृषा निस्सन्देह शान्त होती है ॥ ५१ ॥

मुखशोष नाशक अर्क ।

अमलं कमलं कुष्टं लाजाश्ववटरोहकम् ।
अर्कीकृतं मधुयुतं मुखशोषनिवारणम् ॥ ५२ ॥

आवला, कमलगट्टा, कूठ, धानकीखील, और वडकी जटा इन सबका अर्क निकालकर शहद डालकर सेवन करने से मुखशोष दूर होता है ॥ ५२ ॥

क्षय और तृषा नाशक अर्क ।

मध्वर्को वाथ दुग्धार्को हिंसेत्कोपं क्षयोद्भवम् ।
तृष्णां हरेच्च रक्तार्को हृतक्षतसमुद्भवाम् ॥ ५३ ॥

शहदका अर्क अथवा दूधका अर्क सेवन करनेसे क्षयरोग दूर होता है और रुधिरका अर्क सेवन करनेसे तृषा और हृदयकी चोट में लाभ पहुँचाता है ॥ ५३ ॥

आमनाशक अर्क ।

षडूषणवचाविल्वजातोऽर्कस्त्वामसम्भवाम् ।

षडूषण (पहिले कहचुके है) वच, और बेलगिरी इन आठोंका अर्क आमका नाश करता है ।

तृषा और वमनपर अर्क ।

मदनार्कः समाहन्यात्तृष्णांगुर्वन्नजांवमिम् ॥ ५४ ॥

मैनफलका अर्क भारी अन्नके भोजनसे उत्पन्न हुई तृषा और वमनको शान्त करता है ॥ ५४ ॥

दुर्बल मनुष्यों की तृषा दूर करने वाला अर्क ।

दुग्धस्यार्कः सितायुक्तः शतपत्रीसुवासितः ।
अतिरुग्णां दुर्बलानां देयं तृष्णानिवृत्तये ॥५५॥

दूध के अर्क में मिश्री मिलाकर और उसे गुलाब से सुवासित करके बहुत दिन के रोगियो को जो अत्यन्त दुर्बल हो गये हैं देवे तो उनकी तृषा शान्त होजाती है ॥५५॥

मूर्च्छा नाशक अर्क ।

कोमलज्जोषणोशीरकेशरैः पुष्पवासितैः ।
निष्कासितोऽर्कः ससितोमूर्च्छां जयतिदुस्तराम् ॥५६॥

वेरकी मीगी, कालीमिरच खस और केशर इनका अर्क निकाल कर उसे सुगन्धित पुष्पों से सुवासित करके मिश्री मिलाकर सेवन करै तो भयंकर मूर्च्छा रोग दूर होता है ॥५६॥

चैतन्यता कारक अर्क ।

मधूकसारसिन्धूत्थ व चोषणकणैः समः।
आसामर्कस्यनस्यं स्याच्छीघ्रं सञ्ज्ञाप्रबोधकृत् ॥५७॥

महुए का सार, सेंधा नमक, बच कालीमिरच और पीपल इन सबको समान भाग लेकर अर्क निकाल ले, इस अर्क की नस्य देने से मूर्छित मनुष्य शीघ्र ही चैतन्य हो जाता है ॥५८॥

विष को दूर करने वाला अर्क ।

निर्विष्यार्को मत्स्या पित्ता युक्तो विषभवां जयेत् ।
मद्यु जन्तुपिबेन्मद्यं सुगन्धद्रव्यवासितम् ॥५८॥

निर्विषीका अर्क कुटकी मिलाकर पीवै तो विष दूर होता है और मद्य को सुगन्धित द्रव्यों से सुवासित करके पीवै तौ उत्तम है ॥५८॥

आम नाशक अर्क।

पिबेद् राज भाजार्कं सघृतं चामशान्तये।

जवासे के अर्क मे घी मिलाकर पीवे तो आम दूर होता है।

तन्द्रानाशक अर्क।

ऊषणार्कोऽगस्तिरसैः कृतोनश्येच्चतन्द्रिकाम् ॥५९॥

कालीमिरच का अर्क अगस्तियाका रस मिलाकर पीवे तौ तन्द्रा का नाश होता है ॥५९॥

निद्रा नाशक अर्क।

सैन्धव श्वेत मरिचं सर्षपा कुष्ठ मेवच।
वत्समूत्रेण जातार्क स्तुस्यान्निद्रा निवारणः ॥६०॥

सेंधा नमक, सफेद मिरच, सरसों और कूठ इन सब का बछड़ा के मूत्र के साथ अर्क निकाल ले यह अर्क निद्रा का नाश करता है ॥५९॥

मदात्ययरोग नाशक अर्क।

मद्यं खर्जूरि मृद्वीका परूष करसैर्युतम्।
सदाडिमरसैः पीतं सर्वमद्यात्ययंजयेत् ॥६१॥

खिजूर के मद्य में दाख, फालसे और अनारका रस मिलाकर पीने से सब प्रकार का मदात्यय रोग दूर होता है।

अन्य अर्क ।

कूष्माण्डार्कोगुडयुतः कोद्रवोत्थमदात्यये ।
दुग्धार्कः सितया युक्तो धूर्त्तजेतुमदात्यये॥६२॥

पेठेके अर्क मे गुड मिलाकर पीने से कोदों का मदात्यय दूर होता है और दूधका अर्क मिश्री मिलाकर पीने से धतूरेका मदात्यय दूर होता है ॥६२॥

अन्य अर्क ।

जलार्कश्शीत लोहन्ति छर्दि मूर्च्छातिसारजम् ।
ताम्बूलोत्थश्चचूर्णार्कि श्शर्क शर्कस्तु पूगजम् ॥६३॥

जल (नेत्रवाला) का अर्क शीतल है, यह मूर्च्छा वमन और अतिसार से उत्पन्न मदात्यय का नाश करता है, चूने का अर्क पान के मदात्ययको और शक्कर का अर्क सुपारी के मदात्ययको दूर करता है ।

अन्य अर्क ।

जाती फलोत्थम्पथ्यार्कोऽम्लजोभंगा समुद्भवम् ।
शीनतोयावगाहोत्थं शर्करा दाधिजोऽर्कक्रः ॥६४॥

हरड़ का अर्क जायफल के मदात्ययको दूर करता है, खटाई का अर्क भाग के मदात्ययको दूर करता है और शक्कर और दही का अर्क शीतल जल में बहुत स्नान करने से उत्पन्न हुए मदात्यय को दूर करता है ।

अन्य अर्क ।

अयमेवविभातोत्थं खाखसोत्थन्तदुद्भवः ।
निम्बार्कश्चाहिफेनोत्थं हरेत्पानात्ययम्प्रिये ॥६५॥

हे प्रिये ! यही अर्थात् शक्कर दहीका अर्क बहेडेके मदात्यय को दूर करताहै, खसका अर्क खसके मदात्ययको दूर करता है और नीमका अर्क अफीमके पानात्ययको दूर करता है ॥ ६५ ॥

अन्य अर्क।

कोलामलसंयुक्तो धान्यार्क सर्वदाहनुत् ।
छादयेत्तस्य सर्वाङ्गन्तदर्काक्तेनवाससा ॥ ६६ ॥

वेर, आवला और धनिया इन तीनोंका अर्क सब प्रकारके दाहको दूर करता है जिसके सब शरीरमें दाह हो उसके शरीरको इसी अर्कमें कपडा भिगोकर उससे ढकदे ॥ ६६ ॥

स्वेदनाशक अर्क ।

सर्वाङ्गार्द्धाङ्गक स्वेदोवृन्ता वयर्कप्रलेपनात् ।
हस्तपादभवः स्वेदो मर्द्दनाद्गच्छतिप्रशम ॥ ६७ ॥

वृन्ताक (बेगन) का अर्क लेप करनेसे सब अंग और आधे अंगका स्वेद (पसीना) नष्ट होता है तथा इसी अर्कका मर्दन करनेसे हाथ पावका पसीना नष्ट होता है ॥ ६७ ॥

उन्मादनाशक अर्क।

शंखपुष्पी भवोवापि कूष्माण्ड फलसम्भवः ।
मधुकुष्ठान्वितश्चार्कः सर्वोन्माद विनाशकः ॥ ६८ ॥

शंखाहूलीका अर्क अथवा पेठेका अर्क शहद और कूट मिलाकर सेवन करनेसे सब प्रकारका उन्माद रोग दूर होता है ॥६८ ॥

भूतोन्मादक अर्क।

उग्रा ग्रामरिचजार्कस्य पानान्नस्याद्विलेपनात् ।

अञ्जनात्संक्षयं यान्ति भूतोन्मादक्षयः क्षणात्॥६६॥

लालमिरचका अर्क पीनेसे नाकमें टपकानेसे, शरीर पर लेप करनेसे और नेत्रोंमे लगानेसे भूतोन्माद तथा क्षयरोग दूर होता है।

अपस्मारनाशक अर्क।

कतकस्यफलस्यार्को नस्यात्कर्णप्रपूरणात्।
पानादञ्जनतो हन्यादपस्मारन्न संशयः॥७०॥

निर्मलीके फलका अर्क नस्य कानोंमें भरना, पान करना और अंजन करना इन सब उपायोंसे निस्सन्देह अपस्मार रोगको नष्ट करता है॥ ७० ॥

बधिरत्वनाशक अर्क।

वचात्वक्पिप्पली शुण्ठी हरिद्रायष्टिसैन्धवम्।
अजमोदाजाजिजोऽर्कः कुर्य्याच्छ्रुतिधरन्नरम्॥७१॥

बच, तज, पीपल, सोंठ, हल्दी, मुलहटी, सेंधानमक, अजमोद और कालाजीरा इनका अर्क सेवन करनेसे मनुष्य श्रुतिधर होजाता है॥ ७१ ॥

बाहुशोषहर अर्क।

बाहुशोषेबला मूल कृतार्कः सैन्धवान्वितः।

खरैटीकी जडका अर्क सेंधानमक मिलाकर पान करनेसे बाहुशोष रोग दूर होता है॥

आध्माननाशक अर्क।

आध्मानेचौद्र खण्डाद्यै स्त्रिवृता पिप्पलीभवः॥७२॥

निसोथ और पीपलका अर्क शहद और खांड मिलाकर सेवन करे तो आध्मान (अफरा) दूर होता है ॥ ७२ ॥

गृध्रसीरोग नाशक अर्क।

अतिस्विन्नन्तुगो मूत्रे बीज मेरण्डजन्ततः ।
कृतार्कः पलमात्रस्तु पेयोगृध्रसि नाशनः ॥ ७३ ॥

गोमूत्रमें अरण्डके बीजोंको अच्छी तरह भिगोकर फिर उनका अर्क निकालले, यह अर्क गृध्रसी वातका नाश करता है ॥७३॥

कोष्ठशीर्षरोग अर्क।

गुडूची त्रिफलाम्भोभि र्भावितंगुग्गुलुं बहु ।
क्षारेणै रण्डतैलेन तदर्कः कोष्ठशीर्षहा ॥ ७४ ॥

गिलोय, और त्रिफला, इनके रससे गूगलको बहुत भावना देकर उसका अर्क निकालले, फिर उस अर्कको दूध और अरण्डका तेल मिलाकर सेवन करै तौ कोष्ठ शोष रोग दूर होता है ॥ ७४ ॥

वातरोग नाशक अर्क।

शेफाल्ये रण्डसे हुण्ड धत्तूराकोंऽश्वमारकैः ।
वक्रीकृत शिवामांस विषैस्सहसमीरहा ॥ ७५ ॥

निर्गुण्डी, अरण्ड, सेहुंड, धतूरा, कनेर, मुलहटी शृगाल का मास और विष इन सबका अर्क निकालकर सेवन करनेसे वात. रोगोंका नाश होता है ॥ ७५ ॥

वातरक्त नाशक अर्क।

गुडूच्यार्कःशुंठियुक्तो वातरक्तहरः परः ।

वत्सदन्युद्भवार्को वापीतोगुग्गुलु संयुतः ॥ ७६ ॥

गिलोयका अर्क सोठ मिलाकर पीनेसे वातरक्त रोग दूर होता है और वत्सादनी (गिलोय) का अर्क गूगल मिलाकर पीवै तौ भी वातरक्त रोग दूर होता है ॥ ७६ ॥

ऊरुस्तम्भरोग नाशक अर्क ।

त्रिफला ग्रन्थिकव्योषभवमर्कं समाक्षिकम् ।
ऊरुस्तम्भ विनाशाय समूत्रंवापुरार्ककम् ॥ ७७ ॥

त्रिफला, पीपलामूल, और त्रिकुटा इन सबका अर्क निकालकर शहद मिलाकर पीनेसे ऊरुस्तम्भरोगका नाश होता है अथवा गूगलका अर्क गौमूत्र मिलाकर देनेसे उक्त गुण करता है ॥

आमवात नाशक अर्क ।

सटीशुंठीशिवासोग्रा देवाव्हा तिविषास्मृता ।
आसामर्कं पिबेदाम वाते रूक्षे च भक्षयेत् ॥ ७८ ॥

कचूर, सोंठ, हरड, वच, देवदारु और अतीस इनका अर्क निकालकर सेवन करनेसे आमवात और शरीरका रूखापन दूर होता है ॥ ७८ ॥

पित्तरोगों पर अर्क ।

अर्कस्तु शतपत्र्या वा सेवंत्याद्राक्षजोऽपिवा ।
चन्दनो शीरजोवापिहन्या त्पित्तभवान्गदान्॥ ७९ ॥

गुलाबका अर्क, सेवन्तीका अर्क, दाखका अर्क चन्दनका अर्क और खसका अर्क ये सब पित्तजन्य रोगोको दूर करते हैं ॥ ७९ ॥

वमनादि रोग नाशक अर्क ।

वाचार्कोवमनं हन्ति त्रिवृदर्को विरेचनम् ।
तुम्बुरार्कः पाचनेन कफ रोगान्न संशयः ॥ ८० ॥

बचका अर्क वमनको दूर करता है, निसोथका अर्क दस्तोंको करता है, और धनियाका अर्क गरम करके सेवन करनेमें कफके रोगों को निश्चय दूर करता है ॥८०॥

शूल नाशक अर्क ।

अश्वविष्ठा भवश्चार्को मृष्टहिंगुसमन्वितः ।
तत्कालं हरतेशूलं साध्यासाध्यान्न संशयः ॥ ८१ ॥

घोडेकी लीदका अर्क निकालकर उसमें भुनी हुई हींग डाल कर पीवै तौ शूल चाहे साध्य हो और चाहे असाध्य हो तत्काल नष्ट होताहै इसमे सन्देह नहीं है ॥ ८१ ॥

विरेचक और पंक्तिशूल नाशक अर्क ।

त्रिवृदेरण्डदन्ती नामर्केणैव विरेचनम् ।
निम्बार्कः कटुतुम्ब्यर्कः पंक्तिशूलहरास्त्रयः ॥ ८२ ॥

निसोथ, एरण्ड, और जमालगोटा इनका अर्क पीनेसे विरेचन होता है और यह अर्क, नीमका अर्क और कडवी तुम्बीका अर्क ये तीनों पंक्तिशूलका नाश करते हैं । ८२ ॥

उदावर्त्त नाशक अर्क ।

सव्योषं पिप्पलीमूलं वृहन्ती च चित्रकम् ।
एतदर्कसहगुडैरुदवर्त्त विनाशनम् ॥ ८३ ॥

त्रिकुटा, पीपलामूल, निसोथ, दन्ती और चीता इनका

अर्क निकालकर उसमें गुड मिलाकर पीनेसे उदावर्त्त रोग नाश होता है ॥ ८३ ॥

अध्मान नाशक अर्क ।

त्रिवृत्कृष्णाहरीतक्यो द्विचतुः पंचभागिकाः।
गुडयुक्तश्चैतदर्को हन्त्याध्मानन्न संशयः॥ ८४ ॥

निसोथ, पीपल, और हरड इनका क्रमसे दो चार और पाच भाग लेकर इनका अर्क निकालले, फिर उसको गुड मिलाकर सेवन करै तौ आध्मान अफरा निश्चय दूर होता है ॥ ८४ ॥

हृद्रोग नाशक अर्क।

हरीतकी वचाशस्त्रा पिप्पली नागरोद्भवः ।
सटीपुष्करमूलोत्थश्चार्को हृद्रोगनाशनः ॥ ८५॥

हरड, वच, पीपल और सोठ इनका अर्क अथवा कचूर और पोहकरमूलका अर्क हृदयरोगको दूर करता है ॥ ८५ ॥

गुल्म रोग नाशक अर्क।

कुमारिकार्कः सरसः सर्वगुल्मविनाशनः ॥
दुग्धशुक्तिभवर्के वा भक्षयेद्वा गुडान्वितम् ॥ ८६ ॥

ग्वारपाठेके अर्कमें पारा मिलाकर सेवन करनेसे सब प्रकारका गुल्मरोग दूर होता है अथवा दूध और सीपके अर्कमें गुड मिलाकर सेवन करनेसे भी यही गुण होता है ॥८६॥

रक्तगुल्म नाशक अर्क ।

पलासवज्राशिखरीचिंचार्क तिलनालजाः ।

यवज सर्जिका चेति क्षारार्को रक्तगुल्मनुत् ॥८७॥

ढाक, सेहुंड, ओंगा, इमली, आक, तिलकीफली जवाखार और सज्जीखार इनका अर्क रक्तगुल्मका नाश करता है ॥८७॥

सीहानाशक अर्क ।

समुद्रशुक्तिजार्को वा पिप्पल्यर्कः सदुग्धकः ।
अर्कार्को वा सलवणः प्लीहरोग विनाशनः ॥ ८८ ॥

समुद्र की सीपी का अर्क अथवा पीपल का अर्क इन को दूधमें मिलाकर देने से और आक का अर्क नमक मिलाकर देने से प्लीहारोग नाश करता है ॥८८॥

यकृच्छूल नाशक अर्क ।

कृष्णाब्दाभ्यां समुद्भूतस्त्वार्कः क्षारान्वितोपिवा ।
पूतीकरंजजोर्को वा यकृच्छूलविनाशनः ॥ ८९ ॥

पीपल और नागरमोथाका च्यारूका अर्क क्षार मिलाकर सेवन करनस और पूतिकरंजका अर्क सेवन करनेसे यकृत् रोगका नाश होता है ॥ ८९ ॥

शोथ नाशक अर्क ।

पुनर्नवा सातला च हरिद्रा च कुमारिका ।
एषामर्केण कोष्णोन स्वेदः पातंचशोथहृत ॥ ९० ॥

साठ, सातला, हल्दी और ग्वारपाठा इनका अर्क निकालकर पीनेसे अथवा गरम गरमसे भपारा देनेसे शोथरोग दूर होताहै

मूत्रकृच्छ्रनाशक अर्क।

आरग्वधो दर्भकासपथ्याधात्रीत्रिकण्टकः।
यवासगिरिभेदार्कः सक्षौद्रो मूत्रकृच्छ्रहा ॥९१॥

अमलतास, दाभ, कास, हरड, आवला, गोखरू, जवासा और पाषाणभेद इनका अर्क निकालकर शहद मिलाकर सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र दूर होती है ॥९१॥

मूत्राघात रोग नाशक अर्क।

कुशकाशबलामूलनलेक्ष्वर्कः सितायुतः।
धान्यागोक्षुरजोऽर्को वा ससितो मूत्रघातहा ॥९२॥

कुशा, कास, खरैटी की जड, नरसल और ईख, इन सबका अर्क मिश्री मिलाकर सेवन करने से अथवा धनिया और गोखरू इनका अर्क मिश्री मिलाकर सेवन करै तौ मूत्राघातरोग दूर होता है ॥

अश्मरी और शर्करारोग पर अर्क।

कूष्माण्डार्कोयवक्षारोहिंगुयुक्चाश्मरीमणुत्।
शरपुंखाक्षारमूत्रभवोऽर्कः शर्करां हरेत् ॥९३॥

पेठे के अर्क में जवाखार और हींग मिलाकर सेवन करने से अश्मरी अर्थात् पथरी का रोग दूर होता है और सरफोका के खारका गोमूत्र के साथ अर्क निकालकर सेवन करै तौ शर्करारोग दूर होता है ॥

प्रमेहरोग नाशक अर्क।

गुडूच्यर्कः सितायुक्तो गोक्षुरार्कोऽथवा हरेत्।

स्तम्भिन्यर्कोऽथवा मेहं मण्डलाद्दुग्धसेविनः॥ ९४॥

गिलोयका अर्क गोखरूका अर्क और स्तम्भनी (औषधि विशेष) का अर्क मिश्री मिलाकर सेवन करनेसे प्रमेहरोग दूर होता है परन्तु एक मंडल पर्य्यंत दूध पीना चाहिये ॥

मेहरोग नाशक अर्क ।

पिप्पल्यर्को मधुयुतो महामेह विनाशनः ।

पीपलका अर्क शहद मिलाकर सेवन करनेसे महामेह रोगका नाश करता है ।

देहदौर्गन्ध्यनाशक अर्क ।

बिल्वपत्रभवोऽर्कश्च देहदौर्गंध्यनाशनः ॥ ९५ ॥

वेलपत्रका अर्क देहकी दुर्गन्धिको नाश करता है ॥ ९५ ॥

स्थूलता कारक अर्क ।

हयगंधासगोक्षूरास त्वचावट काण्डकैः ।
निष्कासितो वा तन्मांसैरर्कः स्थौल्यकरः परः॥ ९६ ॥

असगन्ध, गोखरू, तज और वडकी जटाका अर्क अथवा पहिली तीनों औषधी और मास इनका अर्क अत्यन्त स्थूलता करने वाला है ॥ ९६ ॥

कुष्ठरोग नाशक अर्क ।

मंजिष्ठा त्रिफला तिक्ता वचादारुनिशामृता ।
निम्बएभिः कृतोऽर्कस्तु पातात्कुष्ठं विनाशयेत् ९७॥

मजीठ, त्रिफला कुटकी, बच, देवदारु, हल्दी, गिलोय और नीम इनका अर्क निकालकर पीनेसे कुष्ठरोग दूर होता है ॥९७॥

सिध्मकुष्ठ नाशक अर्क।

सर्षपा रजनीकुष्ठं मूलवीजं प्रियङ्गवः।
काश्मीरीचैत दर्कस्तुपरि सिध्मं विनाशयेत् ॥ ९८ ॥

सरसो, हल्दी, कूट, मूलीके बीज प्रियंगु और खम्भारी इनका अर्क सिध्मकुष्टका नाश करता है ॥ ९८ ॥

पामारोग नाशक अर्क।

मंजिष्ठा त्रिफलालाक्षालांगली रात्रिगंधका:।
सर्वैस्तिलैश्च गोधूमैर्हरेत्पामां महद्रुजम् ॥९९॥

मजीठ, त्रिफला, लाख, कालिहारी, हल्दी और गन्धक तथा इन सबके बराबर तिल और गेंहू इन सबका अर्क निकालकर सेवन करनेसे पामा रोगका नाश होता है ॥ ९९ ॥

दादपर लेप।

कुष्ठ कृमिघ्न दद्रुघ्न निशासैन्धवसर्षपः।
आम्रास्थि चैतदर्कोऽयं लेपाद्दद्रुं विनाशयेत्॥१००॥

इतिलंकानाथकृतार्कचिकित्सानानारोग
निवारणार्थंशतकम्पञ्चमम् ॥५॥

कूठ, वायविडंग, पमार, हल्दी, सेधानमक, सरसों और आमकी गुठली इनका अर्क निकालकर लेप करनेसे दाद दूर होता है ॥ १०० ॥

इति श्रीरावण विरचितेऽर्कप्रकाशे मथुरानिवासि
कृष्णलालकृत भाषाटीका विभूषितं पंचमं
शतकं समाप्तं ॥५॥

शष्ठ शतक ।



गलगण्ड नाशक अर्क ।

श्वेतापराजितामूलजातोऽर्कः सर्पिषा सह ।
गलगण्ड हरेदेव मण्डलात्पथ्यभोजनः ॥ १ ॥

रावण मन्दोदरी से कहने लगा कि हे प्रिये ! श्वेत अपराजित का अर्क घी के साथ एक मण्डल पर्य्यन्त सेवन करे तौ गलगण्ड रोग दूर होता है पथ्य भोजन करना चाहिये ॥१॥

गण्डमाला नाशक अर्क ।

काञ्चनारत्वचोऽर्कस्तु शुण्ठीचूर्णन संयुतः ।
माक्षिकाढयो गण्डमालां बहुकालोद्भवामपि ॥२॥

कचनार की छालका अर्क निकाल कर उसमें सोंठ का चूर्ण और शहद मिलाकर पीवै तो गण्डमाला रोग दूर होता है ॥ २ ॥

ग्रन्थि नाशक अर्क ।

सर्जिकामूलकक्षारजातः शंखस्य चूर्णयुक् ।
कृतस्तेन प्रलेपश्चे द्ग्रंथि हति न संशयः ॥३॥

सज्जी और मूली के खार का अर्क निकाल कर उसमे शख का चूर्ण मिलाकर लेप करै तौ निस्सन्देह ग्रन्थि रोग दूर होता है ॥ ३ ॥

अर्बुदरोग नाशक अर्क ।

हरिद्रा लोध्र पतंग गृहधूममनशिला: ।
मधुपगाढश्चार्कस्तु मेदोर्बुदहर: पर: ॥४॥

हल्दी, लोध, पतंग, घरका धुंआ और मैनासिल इनका अर्क निकालकर उसमें शहद मिलाकर सेवन करने से मेद अर्बुद रोग का नाश होता है ॥४॥

अर्बुद नाशक अन्य लेप ।

वटदुग्धप्रागढे च सप्ताहं कुष्टरोमके ।
तदर्कस्य प्रलेपेन हरेदस्यार्बुदं त्वणात् ॥५॥

कूठ और सांभर नमक को एक सप्ताह तक बड़ के दूध मे भिगोकर अर्क निकाल ले, इस अर्क का लेप करने से अर्बुद रोग तत्काल दूर होता है ॥५॥

श्लीपद रोग नाशक अर्क ।

धत्तूरैरण्ड निर्गुण्डी वर्षाभू शिग्रुमूलजै: ।
अर्कै:पिष्टास्सर्षपास्तु प्रलेपाच्छ्लीपदापह: ॥६॥

धतूरा, अरण्ड,, सम्भालू साठ और सहजना इन सबकी जडो का अर्क निकालकर उसमे सरसों पीसकर लेप करने से श्लीपद रोग दूर होता है ॥ ६ ॥

विद्रधि नाशक अर्क ।

यवगोधूममुद्गानां पिष्टं सम्यग्विलोडितम् ।
विषमुष्टिभवार्केण विलेपाद्विद्रधि प्रणुत् ॥७॥

जौ गेहूं, और मूंग इनकी पिठ्ठी को विषमुष्टि (डोडी) के अर्क में अच्छी तरह मिलाकर लेप करने से विद्रधिरोग का नाश होता है ॥ ७ ॥

विद्रधि पर अन्य अर्क ।

क्षौद्रजातेन मद्येन चालयेत्पक्वविद्रधिम् ।
अहिफेनाक्षफेनाभ्यां पूरणाद्विद्रधिं हरेत् ॥८॥

शहद के मद्य से पके हुए विद्रधी को धोवे, फिर उसमे अफीम अक्षफेन का अर्क भरकर विद्रधी का नाश करे ॥८॥

वातजशोथ नाशक अर्क ।

वातघ्नौशधजातार्कैस्तन्मांसार्कैस्तथा घृतैः ।
उष्णैः संसेचयेच्छोथं कांजिकार्केण वातजम् ॥९॥

वात नाशक अर्क, वात नाशक मासार्क, वातनाशक घृत अथवा काजी का अर्क इनको कुछ गरम करके तरडा दे तौ वातज सूजनका नाश होता है ॥९॥

पित्तरक्तजशोथ नाशक अर्क ।

पित्तरक्ताभिघातोत्थं शोथं सिञ्चेच्च शीतलैः ।
क्षीराज्य मधुखण्डेक्षुजातार्कैर्मालतीभवैः ॥१०॥

पित्त रक्त और अभिघात (चोट लगने) से उत्पन्न हुए शोथ (सूजन) पर दूध, घी, शहद, मिश्री और ईख इनके अर्क का अथवा चमेली के अर्क का शीतल २ सेचन करे तो शीघ्र आरोग्य हो ॥ १० ॥

कफज शोथ नाशक अर्क ।

कफघ्नौषधसंजातैरर्कैरुष्णैश्च सेचयेत् ॥
तैलदुग्धाम्बुमूत्रैर्वा शोथं श्लेष्मसमुद्भवम् ॥११॥

कफ जन्य सूजन में कफ नाशक औषधियो के अर्कका अथवा तेल, दूध, पानी और गोमूत्र इन सबको मिलाकर इनका तरडा दे तो सूजन का नाश होता है ॥११॥

व्रण शोथ नाशक अर्क ।

विषोपविषसंज्ञातैरर्कैः कोष्णैस्तु सेचयेत् ।
वारुण्या वा खाखसार्कैर्व्रणशोथः क्षयं व्रजेत् ॥१२॥

विष और उपविषो के अर्कको गरम करके उसमें सेचन करे अथवा, वारुणी मदिरा वा खसखस के अर्क से सेचन करे तो व्रण की सूजन दूर होती है ॥१२॥

कठिन शोथ पर प्रयोग ।

न प्रशाम्यति यः शोथः प्रलेपादिविधानतः ।
द्रव्याणि पाचनीयानि दद्यात्तत्रोपनाहके॥ १३ ॥

जो सूजन इन ऊपर कहे हुए लेप आदि क्रियाओं से नष्ट न हो उसमें पाचनीय द्रव्यो का उपनाह (बन्धन या लेप) करै ॥ १३ ॥

सूजन को पकाने वाला द्रव्य ।

शणमूलकशिग्रूणां मूलानि तिलसर्षपाः ।
अतसीसक्तवः किंचिदुष्णान्देयं च पाचनम् ॥१४॥

सन, मूली और सहजना इन तीनोंकी जड, तिल सरसों, और अलसी का सत्तू इनका गरम लेप करने से सूजन जल्दी पक जाती है ॥ ४१ ॥

भेदनके योग्य व्रण।

अन्तःपूयेषु वक्रेषु तथैवोत्सङ्गवत्स्वपि।
गतिमत्स्वपि रोगेषु भेदनं संप्रयुज्यते ॥ १५ ॥

जिनके भीतर मवाद भरगया हो किन्तु निकलता न हो, जिनका मुख टेढा हो जो ऊंचापन लिये हुए हो, और जो गतिमान हो (आठों पहर बहते रहते हो) ऐसे व्रणोंको चीरना ही उत्तम है ॥ १५ ॥

व्रणभेदनका सुगम उपाय।

बद्धमूलातिपङ्केन तुवरीछिद्रिकानली।
व्रणसंयोगिनीशङ्खद्रावः पूर्या त्तु यामकम् ॥ १६ ॥
तुवरीसदृशछिद्रं यामेनैकेन जायते।
विना शस्त्रं शस्त्रकर्मकरमेतदपीडनम् ॥ १७ ॥

जब व्रण पक जाय किन्तु फूटै नहीं तो उसमें नीचे लिखा हुआ उपाय करै, पहिले व्रणके चारों ओर गाढी २ पीली मिट्टी लपेट दे और फोडोके मुख पर अरहर की दालके समान छिद्र रहने दे फिर एक ताबेकी नली अरहर की दालके आकार वाली लेकर उसमें शंखद्राव भर कर उसे व्रणके

मुखपर रख दे और एक प्रहर तक रक्खी रहने दे ॥ ॥ १६ ॥ इस प्रकार एक पहर पश्चात् उस फोडेमें अरहर की दालके बराबर छेद हो जाता है, यह क्रिया बहुत ही उत्तम है विना शस्त्रके समान काम करती है और इससे कुछ पीडा नहीं होती है ॥ १७ ॥

व्रणको शुद्ध करनेवाला अर्क।

अविशुद्धव्रणस्य स्यादर्कः शुचिकरः परः।
पटोलनिम्बपत्रोत्थः सर्वत्रैव प्रयुज्यते ॥ १८ ॥

परवल और नीमके पत्तोंका अर्क अशुद्ध व्रणको शुद्धकर देता है, इसको सब प्रकार के अशुद्ध व्रणोंमें प्रयोग करना चाहिये ॥ १८ ॥

व्रण रोपण अर्क।

अश्वगंधाजहालोध्रकट्फलं मधुयष्टिका।
समंगाधातकीपुष्पजातोऽर्को व्रणरोपणः ॥ १९ ॥

असगन्ध, कोच, लोध कायफल, मुलहटी, समगा और धायके फूल इनका अर्क घावपर लगानेसे घाव भरजाता है ॥१९॥

शस्त्र व्रणपर प्रयोग।

खड्गादिच्छिन्नगात्रस्य मद्येनापूरितो व्रणः।
तथा नागबलार्केण तीव्रां वा वेदनां हरेत् ॥ २० ॥

तलवार आदिसे हुए घावमें शराब भरदे अथवा नागबालाका अर्क भरदे तो तीव्र वेदना शीघ्र दूर हो जाती है ॥ २० ॥

व्रण नाशक अर्क ।

जातीपटोलनिम्बानां नक्तमालस्य पल्लवाः ।
सिक्थं च मधुकं कुष्ठं द्वेनिशे कटुरोहिणी ॥ २१ ॥
मंजिष्ठा पद्मकं पथ्या लोध्रक न्नीलमुत्पलम् ।
नक्तमालफलं तुत्थमहिफेनं च सारिवा ॥ २२ ॥
एतानि समभागानि कल्कीकृत्य प्रयत्नतः ।
गोमूत्रेण तदर्कंतु दशाङ्गादिकवासितम् ॥ २३ ॥
विलेपनाद्भक्षणाच्च हरेत्सर्वव्रणानयम् ।
विषव्रणं च विस्फोट विसर्प्पकीटदंशितम् ॥ २४ ॥
दद्रुं शस्त्रप्रहार च दग्ध विद्धं व्रण न्तथा ।
नखदन्तक्षत हन्तिदुष्टमांसं च कर्षयेत् ॥ २५ ॥

चमेली परवल, नीम और करंजके पत्ते, मोम, मुलहटी, कूठ, हलदी, दारुहल्दी, कुटकी ॥ २१ ॥ मजीठ, पद्माख, हरड लोध. नोलकमल, कंजाका फल, नीलाथोथा अफीम, सारिवा ॥ २२ ॥ इन सबको समान भाग लेके कल्क बना ले और फिर गोमूत्र मिलाकर अर्क निकाल ले और उस अर्कको दशाङ्गादि धूपोंसे सुवासित करले ॥ २३ ॥ यह अर्क लेप करनेसे और भक्षण करनेसे सब प्रकारके व्रण दूर होते है, विषजन्य व्रण, विस्फोट किसी कीडेके काटने से उत्पन्न हुआ घाव ॥ २४ ॥ दाद शस्त्र की चोट लगने से उत्पन्न हुआ घाव, अग्नि से जलने के कारण भया हुआ घाव विद्धव्रण,

और नख तथा दात लगने से भया हुआ घाव ये सब इस अर्क से दूर होते हैं तथा गला हुआ मास इस अर्क के लगाने से गिरजाता है ॥ २५ ॥

अग्निदग्धव्रणपर अर्क।

कटुवल्ल्याः कुमार्य्या वा कोष्णेनार्केण सेचयेत् ।
अग्निदग्धव्रणांस्तस्मात्सर्वेचर्म्मप्ररोहणम् ॥ २६ ॥

गजपीपल अथवा ग्वारपाठे के अर्क को कुछ गरम करके उसे अग्निदग्ध व्रण पर लगाने से घावपर नई खाल आजाती है ॥ २६ ॥

सन्धिभग्नपर अर्क।

अस्थिसंहारकं लाक्षागोधूमार्जुनसाधितम् ।
पिबेदर्कं सन्धिभग्ने सघृतं वा यथोचितम् ॥ २७ ॥

हडसिंहार, लाख, गेंहूं और अर्जुनवृक्ष के पत्ते इनसे निकाला हुआ अर्क यथोचित रीतिसे घी मिलाकर पीवै सन्धिभग्न अर्थात् हडफूटन दूर होती है ॥ २७ ॥

मृतरक्तपर अर्क।

हरिद्राक्षौद्रतुवरीरक्तचन्दनदार्विकाः ।
गुडेन साधितं मद्यं मृतरक्तं व्यपोहति ॥ २८ ॥

हल्दी, शहद, अरहर, लालचन्दन और दारुहल्दी इनका गुडके साथ मद्य बनाकर सेवन करै तौ इससे दूषित रुधिर शुद्ध होता है ॥ २८ ॥

कोष्ठरोगपर अर्क ।

कुक्कुटं कृष्णवर्णंतु जलेऽष्टगुणिते पचेत् ।
सरस न्तं विपक्ष च दद्यात्कोष्टप्रशान्तये ॥ २९ ॥

कालेरंग के मुर्गाको अठगुने जलमें पकावै फिर उस मुर्गा के पंख दूर करके कोष्ठरोग की शान्ति के लिये रोगी को पिलावै ॥ २९ ॥

नाडीव्रणनाशक अर्क ।

स्नुह्यर्कदुग्धदार्वीभिःमद्यं क्षौद्रेण साधयेत् ।
वारं वारं भाविता च वर्ति नाडीव्रणान्तकृत् ॥ ३० ॥

थूहर और आक इनका दूध, तथा दारुहल्दी इनका शहदके साथ मद्य बनाले, फिर उसमें वारवार कपडेकी वर्त्तीको भिगोकर घावमे चढावै तो नाडीव्रण दूर होता है ॥ ३० ॥

भगन्दरनाशक अर्क ।

शुण्ठी च वटपत्राणि जातीपत्रामृता स्तथा ।
सैन्धव न्तक्रनिक्षिप्तं तदर्कस्तु भगन्दरे ॥ ३१ ॥

सोंठ बडके पत्ते, चमेली के पत्ता (अथवा जावित्री) गिलोय, सेंधानमक इनको तक्रमें डालकर अर्क निकालले यह अर्क भगन्दर रोगका का नाश करता है ॥ ३१ ॥

उपदंश नाशक अर्क ।

लोध्रजम्बूवराशिवार्जुनरात्रिसमुद्भवः ।
अर्कः पानादितो हन्यादुपदंश न्नरस्त्रियोः ॥ ३२ ॥

लोध, जामन, बडकी जटा, हरड, अर्जुनवृक्ष और हल्दी इनका अर्क निकालकर पीनेसे स्त्री और पुरुषों का उपदंश रोग दूर होता है ॥ ३२ ॥

शूकरोग नाशक अर्क ।

अश्वगन्धावरीकुष्ठमिसिसिंहीवलान्वितम् ।
संशोध्य दुग्धे नतदाअर्कः शूकगदापहः ॥ ३३ ॥

असगन्ध, सितावर, कूठ, सोंफ, वडी कटेरी और खिरैटी इन सबको दूधमें शुद्ध करके अर्क निकाल, इस अर्कके सेवन करने से शूकरोग दूर होता है ॥ ३३ ॥

विसर्प नाशक अर्क ।

यष्टी शिरीषतगर मांस्येला श्चन्दनं शिला ।
आज्यं च वालकं कुष्ठमर्कः सेकाद्विसर्प्पजित् ॥३४॥

मुलहटी, सिरस, तगर, जटामासी, इलायची, चन्दन, मैनासिल, घी, नेत्रवाला, और कूठ इनका, अर्क निकालकर सेवन करने से विसंप रोग दूर होता है ॥ ३४ ॥

स्नायुरोगनाशक अर्क ।

निगुंड्यर्को गव्यहव्ययुक्तो वा सुषवीभवः ।
शीतलार्को हरेच्छीघ्रं स्नायुरोगं न संशयः ॥ ३५ ॥

सम्हालूका अर्क गायका घी मिलाकर, अथवा सुषवी (जीरा) का अर्क शीतल करके सेवन करै तौ स्नायुरोग शीघ्र दूर होता है इसमें सन्देह नहीं है ॥ ३५ ॥

विस्फोटक नाशक अर्क।

सप्त घस्रं तण्डुलाम्बुविक्लन्नार्द्रेन्द्रयवस्यतु ।
विस्फोटकान्निहन्त्येव अर्कोऽयं लेपसेवितः ॥३६॥

सात दिन तक चावलो के जल में इन्द्र जो भिगोवै फिर उनका अर्क निकालले, यह अर्क लेप करने से विस्फोटक रोग को दूर करता है ॥३६॥

विस्फोटक दाह नाशक अर्क।

उत्पलं चन्दनं लोध्रमुशीरं सारिवाद्वयम् ।
एतदर्को धावनेन स्फोटदाहार्त्तिनाशनः ॥३७॥

कमल चन्दन, लोंध, खस और दोनो प्रकार की सारिवा इनका अर्क निकाल कर उससे धोने से विस्फोटक का दाह और वेदना दूर होती है ॥३७॥

फिरङ्ग रोग नाशक अर्क।

शंखद्रावार्कके क्षिप्तः पारदो भस्मतां व्रजेत् ।
वल्लं गुडयुतं खादेत्फिरङ्गविनिवृत्तये ॥३८॥

शंखद्राव मे पारा डालदे जिससे कि वह भस्म होजाय, फिर उसको एक २ रत्ती गुड के साथ सेवन करे तो फिरंग रोग दूर हो ॥३८॥

फिरङ्गपर अन्य अर्क।

अपक्वं पारदं भुक्त्वा द्रोणपुष्पार्कसेवनात् ।
लेपनात्समयात्येव फिरंगो नात्र संशयः ॥३९॥

कच्चे पारे को खाकर ऊपर से द्रोणपुष्पी का अर्क पीवै अथवा द्रोणपुष्पी के अर्क में पारा मिलाकर लेप करे तो फिरंग रोग दूर होवे इसमें सन्देह नहीं है ॥४०॥

अन्य अर्क ।

पलाशपत्रवृन्तानां सप्ता हन्तस्य सेवनात् ।
फिरंगो याति त्वरितं साध्यासाध्यो न संशयः॥४०॥

ढाक के पत्तों के डंठलो का अर्क सातदिन पर्य्यन्त सेवन करने से साध्य हो किंवा असाध्य हो फिरंग रोग शीघ्र दूर होता है, इसमे सन्देह नहीं है ॥४०॥

मसूरिका रोग पर अर्क ।

स्नुहिजहिलमोचिकार्कः समसूरिकः कौतुकेन पीतः ।
सकलं मसूरिकोपंगाढं जातं विनाशयेत्क्षिप्रम् ॥४१॥

थूहर, फूल प्रियगु, और हुलहुलका, अर्क मसूर के साथ निकालकर पीनेसे मसूरिका रोग का भारी कोप भी शीघ्र ही शान्त होजाता है ॥४१॥

अन्य अर्क ।

निम्बःपर्प्पटकः पाठा पटोलः कटुरोहिणी ।
चन्दने ह्युशीरं च धात्री नासा दुरालभा ॥४२॥
एतदर्कः सितायुक्तो मसूरीमात्रनाशनः ।
मुखे कण्ठे व्रणेजाते गण्डूषार्थं प्रयुज्यते ॥४३॥

नीम, पित्तपापडा, पाठा, परवल कुटकी, सफेद, चन्दन,

लाल चन्दन, खस, आंवला, अडूसा और जवासा ॥४२॥ इनका अर्क मिश्री मिलाकर पीने से मसूरिका रोग मात्र का नाश होता है, और जो मुख में अथवा कण्ठ में फोडा होगया हो तो इस अर्क के कुल्ले कराना बहुत लाभदायक होता है ॥४३॥

मसूरिका पर अन्य अर्क।

गोमयार्कस्य लेपेन मानेन विलयं व्रजेत् ।
गोक्षुरार्कं पिबेदाद्ये ज्वरे च दधिसर्पिषा ॥४४॥

गोमय (गोबर) के अर्क का लेप करने से अथवा पान करने से फुंसिया दूर होजाती है अथवा ज्वर के आदि मे गोखरू का अर्क घी मिलाकर पीवै ॥४४॥

रावण वाक्य।

भवितव्यता की उत्पत्ति।

आदौ कृतयुगे ब्रह्मा महेशं वाक्यमब्रवीत् ।
तवाज्ञया मया देव सृष्टा नानाविधाः प्रजाः ॥४५॥
समस्ता भूस्तुतैर्व्याप्ता भवन्त्यन्येऽपि तद्विधाः ।
कामेन यान्ति भार्यासु पुनः सृष्टः प्रवर्त्तते ॥४६॥
गजैरश्वैर्मनुष्याद्यैर्व्याप्तेयन्तु धराखिला ।
शीघ्रं यास्यति पाताले तत्रयत्नो विधीयताम् ॥४७॥
एवं ब्रह्मवचः श्रुत्वा शूलमैक्षन्महेश्वरः ।
ततो जज्ञे पुमानेको भीमो घोरपराक्रमः ॥४८॥

रक्तान्तलोचनः क्रोधी वडवग्निगृतो नरः ।
ऊर्ध्वकेशो ललज्जिह्व कृताक्रोशोऽजितेन्द्रियः ॥४९॥
तं दृष्ट्वा तु महादेवः पार्वतीं वाक्यमब्रवीत् ।
जात एव महाक्रूरः सर्वसंहारकारकः ॥ ५० ॥
एतस्य मोहनार्थाय देहि भार्यां यथोचिताम् ।
एवं शिववचः श्रुत्वा स्वक म्पृष्ठ न्ददर्श ह ॥ ५१ ॥
ततो देवी समुत्पन्ना योच्यते भवितव्यता ।
रूपलावण्यसम्पन्ना पीनोन्नतपयोधरा ॥ ५२ ॥
मारणास्त्रं मोहनास्त्र ङ्कराभ्या न्दधती शुभा ।
श्वेतवस्त्रपरधाना लज्जाभावृतलोचना ॥ ५३ ॥
सा प्रणम्य तदा देवीं शिवयोरग्रतः स्थिता ।
शस्त्रभारभराक्रान्तकालचित्तविमोहिनी ॥ ५४ ॥
दृष्ट्वा ता म्पार्वती प्राह ममाज्ञा क्रियतामिति ।
कालस्य भव पत्नी त्वमतश्चित्तं विमोहय ॥ ५५ ॥
याचयस्व वरं श्रेष्ठं कुरु कार्यं प्रजापतेः ।
ततः प्रीता तु सा प्राह देव्यग्रे प्रणता स्थिता ॥५६॥

रावण बोला कि सतयुग की आदि में ब्रह्मा ने महादेवजी से कहा कि हे देवेश ! मैंने आपकी आज्ञा के अनुसार कई प्रकार की प्रजा उत्पन्न की है ॥४५॥ सम्पूर्ण पृथ्वी इन इन प्रजाओं से व्याप्त होगई है तथा और भी वैसी ही प्रजा उत्पन्न होजाती है

और वे कामदेव से पीडित होकर स्त्रियों में रमण करते हैं जिससे फिर सृष्टिकी वृद्धि होती है ॥ ४६ ॥ हाथी, घोडा और मनुष्य आदिकोंसे वह सम्पूर्ण पृथ्वी व्याप्त होरही है जो भारके कारण शीघ्रही पातालको चली जांयगी, इसलिये इसका शीघ्र यत्न कीजिये ॥ ४७ ॥ इसप्रकार ब्रह्माके वचनको सुनकर शिवजीने अपने त्रिशूलकी ओर देखा तो उससे एक घोर पराक्रमवाला भयानक पुरुष उत्पन्न हुआ ॥ ४८ ॥ उस पुरुषके लाल २ नेत्र थे, महा क्रोधी था मानो वडवानलको साथ लियेहो उसके लम्बे २ केश थे, जिव्हा लपलपातीथी, भयानक शब्द कर रहाथा और वह अजितेंद्रिय था ॥ ४९ ॥ उसको देखकर महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! यह सबको सहार करनेवाला महाक्रूर स्वरूप मनुष्य होगया है ॥ ५० ॥ अब इसके मोहित करनेके लिये तुम इसके अनुरूप भार्या इसको दो ऐसे महादेवजीके वचन को सुनकर पार्वतीजीने अपनी पीठकी ओर देखा ॥ ५१ ॥ तो एक देवी उत्पन्न हुई जिसको भवितव्यता कहते हैं, वह रूप और लावण्यसे युक्तथी, उसके स्तन स्थूल और उन्नत थे ॥ ५२ ॥ वह दोनो हाथोंमें मारणास्त्र और मोहनास्त्र धारण कियेहुई थी, श्वेतवस्त्र धारण कर रहीथी और लज्जा के कारण उसके नेत्र नीचेको झुकेहुए थे ॥ ५३ ॥ ऐसी वह देवी प्रणाम करके शिव और पार्वतीजीके सन्मुख खडी होगई, तब शस्त्रो के भार से

पीडित कालके चित्त को मोहित करने वाली ॥ ५४ ॥ उस देवी से पार्वती बोली कि,--तुम मेरी आज्ञा को पालन करौ तुम इस कालरूप पुरुषकी स्त्री वनौ और इसके चित्तको मोहित करौ ॥ ५५ ॥ और इससे उत्तम वर मांगकर प्रजापति ब्रह्माका कार्य करौ तव तौ वह देवी प्रसन्न हो प्रणाम कर पार्वतीजी के सामने वैठगई और कहने लगी ॥ ५६ ॥

भवितव्यता का बचन ।

मयाधीनमिदं सर्वं ब्रह्माविष्णुशिवात्मकम् ।
कालश्चायं ममाधीनः कोऽपि मा न्न च वेत्स्यति ॥
आब्रह्मस्तम्बपर्यंतं विष्णौदेव्या ञ्च शूलिनि ।
दृष्टिर्मम समैवास्ति मत्स्वरूपाविदस्त्विमे ॥५८॥

भवितव्यता वोली कि हे पार्वतीजी ! यह ब्रह्मा; विष्णु, और शिवात्मक जगत् सब मेरे आधीन है, यह काल भी मेरे आधीन है परन्तु मुझको कोई नहीं जानता है ॥५७॥ ब्रह्मा से लेकर स्तंव पर्यन्त, विष्णु भगवान, पार्वती और शिवजी में मेरी समान दृष्टि है और ये सब मेरे स्वरूप को नहीं जानते है ॥५८॥

कालका विवाह ।

एवमुक्त्वा भवानी सा पाणिग्रहमचीकरत् ।
कृतकृत्योभवत्काल उद्वाह्य भवितव्यताम् ॥ ५९ ॥
कृतोद्वाह न्तु तं ज्ञात्वा विधाता वाक्यमब्रवीत् ।

शीघ्रमागम्यतां स्वामिन्सृष्टिः संहार्यतामिति ॥६०॥
ततस्तु भृत्याः कालेन रचिताः स्वस्य तेजसा ।
भवितव्यतया सार्द्धं ततः स्वस्वामितेजसा ॥ ६१ ॥
शोषो ज्वरः पाण्डुसारश्वासपानात्ययादिकाः ।
अभ्यन्तरा गिरिचराः शतशस्तेन निर्मिताः ॥६२॥
सर्प व्याघ्र वृकाः सिंह वृश्चिका राक्षसा गजाः ।
भूतप्रेतपिशाचाश्च बाह्यस्थाः परिचारकाः ॥६३॥
तस्याभ्यन्तरशक्त्या च कामिनीमोहिनीतृषा ।
लिप्साहङ्कृतिबुद्ध्यद्धिनिद्रास्पेर्ष्याभयादिकाः। ६४॥
ग्रहणीकामलासूचीछर्द्दिमूर्च्छाश्मरीतृषाः ।
डाकिनीशाकिनीघोरा इत्येता बाह्यहेतुकाः ॥६५॥

इस प्रकार पार्वतीजीसे कहकर भवितव्यताने कालसे विवाह करलिया और काल भवितव्यतासे विवाहकर अपनेको कृतज्ञ मानने लगा ॥ ५९ ॥ उसको विवाह किया जान ब्रह्माजीने कहा हे स्वामिन्! शीघ्र आइये और सृष्टि का संहार कीजिये ॥ ६० ॥ तब तो कालने अपने तेजसे भवितव्यताकी सहायतासे और अपने स्वामी के तेजके प्रभाव से बहुतसे भृत्य उत्पन्न किये ॥ शोष, ज्वर, पाण्डु रोग, अतिसार, श्वास और पानात्यय आदि भीतर और बाहर विचरने वाले अनेक रोगरूप भृत्य रचडाले ॥ ६२ ॥ सर्प, व्याघ्र भेडिया, सिंह, बिच्छू, राक्षस, हाथी, भूत, प्रेत और पिशाच आदि बाहर विचरनेवाले सेवक हैं ॥ ६३ ॥ उस कालकी भीतरी शक्ति

से कामिनी, मोहनी, तृषा, लिप्सा, अहङ्कार, बुद्धि, ऋद्धि, निन्दा, ईर्ष्या, और भयादिक उत्पन्न हुए ॥ ६४ ॥ संग्रहणी, कमला, विसूचिका, वमन, मूर्च्छा, अश्मरी, तृषा, डाकिनी, घोरा और हत्या ये बाहर की शक्ति से प्रगट हुई ॥६५॥

काल का विचार।

एवं परिवृत न्दृष्ट्वा स्वसैन्य मविचारयत् ।
मत्तः कोऽस्त्यधिको लोके न जाने भवितव्यताम् ॥
ब्रह्माविष्णुमहेशाद्या हननीया मयादितः ।
एवं विधाय मनसि महेशं हन्तुमुद्यतः ॥ ६७ ॥

इस प्रकार अपनी सेनाको एकत्रित देखकर काल अपने मनमें विचार करने लगा कि अब मुझसे बढ़कर कौन बलवान् है मैं भवितव्यताको भी कुछ नही समझता ॥६६॥ अब मुझको पहिलेहीसे ब्रह्मा, विष्णु और महादेव, आदिका वध करना योग्य है इस प्रकार मनमें निश्चय कर वह पहिले शिवजीके मारनेको उद्यत हुआ ॥ ६७ ॥

शिवजी का कालको व्यथित करना।

तन्दृष्ट्वा तु महेशेन शक्तिरेका प्रदर्शिता ।
अतिघोराविरूपाक्षा संकीर्णजघनोदरा ॥ ६८ ॥
दन्दह्यमानाकोपेन ज्वलयन्ती दिशो दश ।
तस्यास्तु दृष्टिपातेन कालः सर्वाङ्गपीडितः ॥६९॥
तामेवाविविशुः सर्वेकः प्रभुः कश्चसेवकः ।

बलिनः सर्वएवस्युः सेवकानिर्बलस्यन ॥ ७० ॥
नानास्फोटैः परिवृतो दह्यमानो रुषाग्निना ।
तस्येदृशीमवस्थान्तु दृष्ट्वा दाहादयो गदाः ॥७१॥
भग्नाहंकारकन्दृष्ट्वा तं कालं भवितव्यता ।
ईषद्विहस्य तं प्राह न ते साधुरहंकृतिः ॥ ७२ ॥
मदधीनञ्जगत्सर्वं मदाज्ञा क्रियता न्त्वया ।
त्वया स्वतन्त्रतारम्भः कृतस्तेनेदृशी गतिः ॥७३॥
एषामर्दंशसंभूता शीतला ताम्प्रसादय ।
अवश्य न्तव साहाय्यं करिष्यति त्वयादृता ॥७४॥

उस बालको अपने वध के लिये उद्यत देखकर शिवजीने एक घोर शक्ति उत्पन्न की जिसके नेत्र, अत्यन्त विरूप थे, जिसकी जांघे और उदर संकीर्ण अर्थात् मिले हुए थे, जो अपने क्रोधसे दशों दिशाओंको दग्ध कर रही थी, उसके दृष्टिपात करते ही कालके सब शरीर मे व्यथा उत्पन्न होगई ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ उसकी सब सेना उस शक्तीमें लीन होगई, सत्य है, कौन किसका स्वामी है, और कौन किसका सेवक है ? सब बलवान्के सेवक होते हैं, निर्बल का कोई सेवक नहीं होता ॥ ७० ॥ उसके सम्पूर्ण शरीरमें फोडे निकल आये और वह शिवजीके क्रोधाग्निसे जलने लगा उसकी यह अवस्था देखकर दाह आदि रोग उसको छोड कर भागगये ।।७१॥ इस प्रकार भवितव्यता मुसुकुराकर उससे कहने लगी कि हे काल !

यह तेरा अभिमान ठीक नहीं था ॥ ७२ ॥ क्योंकि यह सब जगत् मेरे आधीन है, इसलिये तुम मेरी आज्ञाका पालन करो तुमने स्वतंत्रतासे कार्य किया इसलिये तुम्हारी यह दशा हुई ॥ ७३ ॥ तुम मेरे अंशसे उत्पन्न हुई इस शीतलाको प्रसन्न करो, यदि तुम इसको आदर करोगे तो यह निस्सन्देह तुम्हारी सहायक होगी ॥ ७४ ॥

कालकृतशीतलाप्रार्थना ।

वन्देऽहं शीतला न्देवीं रासभस्था न्दिगम्बराम् ।
मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम् ॥ ७५ ॥
वन्देऽहं शीतला न्देवीं सर्वरोगभयापहाम् ।
यामासाद्य निवर्त्तेत विस्फोटकभयं महत् ॥ ७६ ॥
शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्दाहपीडितः ।
विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥ ७७ ॥

काल कहनेलगा कि गर्धभके ऊपर विराजमान दिशाओंके ही वस्त्र धारण किये हुए, अर्थात् नग्न, एक हाथमे बुहारी और एक हाथमें अमृतका कलश लिये और रूपसे शोभायमान मस्तकवाली शीतला देवीको नमस्कार करता हू ॥ मैं सम्पूर्ण रोगोके भयको दूर करनेवाली सीतला देवीको नमस्कार करता हू जिसको आप्त होनेसे बहुत भारी विस्फोटक रोगका भय दूर होजाता है ॥७६॥ जो मनुष्य विस्फोटकके दाहसे पीडितहै वह हे शीतले ! हे शीतले ! ऐसा कहे तौ घोर विस्फोटक रोगका भय उसके घरमें नहीं होता ॥७७।

शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगन्धगतस्य च ।
प्रणष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनौषधम् ॥७८॥
शीतले तनुजान्रोगान्नृणां हरसि दुस्तरान ।
विस्फोटकविशीर्णाना न्त्वमेकामृतवर्षिणी ॥ ७९ ॥
गलगण्डग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम् ।
त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यान्ति संक्षयम् ॥८०॥
न मन्त्र औषध न्तस्य पापरोगस्य विद्यते ।
त्वमेका शीतले धात्री नान्यां पश्यामि देवताम् ॥८१॥
मृणालतन्तुसदृशी नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् ।
यस्त्वां संचिन्तयेद्देवि तस्य मृत्युर्न जायते ॥८२॥

हे शीतले, जो मनुष्य ज्वरसे दग्ध होरहे जो दुर्गन्धिमें पडे हुए हैं और जिनके नेत्र नष्ट होगये है उनके तू जीवनकी औषधि है ॥ ७८ ॥ हे शीतले, तू मनुष्योंके शरीर में होनेवाले कठिन रोगोंको दूर कर देती है, जिनका शरीर बिस्फोटक रोगसे विशीर्ण होगया उनके लिये तुमही अमृत बरसाने वाली हो ॥ ७९ ॥ हे शीतले ! गलगण्ड और गलग्रह आदि बहुतसे भयङ्कर रोग जो मनुष्योंके उत्पन्न हो जाते है वह सब तेरे ध्यान मात्र से ही नष्ट होजाते है ॥८०॥ शीतले ! उस पाप रोगका न तो कोई मन्त्र है और न कोई औषधि है, केवल तूही सबका पोषण करनेवाली है, तुझसे व्यतिरिक्त मैं किसी अन्य देवताको नही जानता हूं ॥८१॥

कमलकी नालके सदृश नाभि और हृदयके मध्यमे विराजमान तेरा जो कोई चिन्तवन करता है उसकी मृत्यु नहीं होती ॥८२॥

शीतला का उत्तर ।

एवं स्तुता तदा देवी शीतला प्रीतमानसा ।
उवाच वाक्यं कालाय वरं वरय सत्वरम् ॥ ८३ ॥

जब कालने इस प्रकार प्रार्थनाकी तौ शीतला देवीने उससे प्रसन्न होकर कहा कि शीघ्र वर माग ॥८३॥

काल का वचन !

अहो चाद्भुतमहात्म्य न्तव दृष्टं मयाधुना ।
पीडा मपनय क्षिप्र म्प्रहर्षं कुरुमे सदा ॥ ८४ ॥

कालने कहा हे माता ! मैने आपका अद्भुत प्रभाव देखा अब आप मेरी सब पीडाको शीघ्र दूर करदीजिये और मुझको सदैव प्रसन्न रक्खो ॥८४॥

शीतला का उत्तर ।

एषा तव जगत्कर्त्री भार्यंयं भवितव्यता ।
आज्ञ यास्याः प्रवर्त्तते ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥८५॥
अहं त्वं च महेशाद्या स्ततोधन्यास्तु तेमताः ।
बुद्ध्याधी जायते साया यादृशी भवितव्यता ॥८६॥
सहायन्ते करिष्यामि हरिष्यामि इमा प्रजाः ।
उपाद्र्की तु यावद्देदादावुष्ण न्ततः परम् ॥८७॥
तं गर्भं भक्षयिष्यामि सापि चेद्दुष्टग्भवेत् ।

सन्तुष्टा शीतलेनाहं सदातत्सेवकेन च ॥ ८८ ॥
प्रत्यहं यासमश्नाति मालत्यर्कमुपोदकी ।
तस्या गर्भन्न स्पृशामि यावज्जीव न्न संशयः ॥ ८९॥
मम कोपेन संजात दाहो यस्तु नरोत्तमः ।
दधिभक्त म्ब्राह्मणेभ्य श्शीताद्भिः सम्पदाय च॥९०॥
स्वयमश्नाति सप्ताह न्तस्य पीडां हराम्यहम् ।
अष्टकं च ममैतद्धि यः पठेन्मानव स्सदा ॥ ९१ ॥
विस्फोटकभयं घोर कुले तस्य न जायते ।
श्रोतव्य म्पठितव्यं च नरैर्भक्तिसमन्वितैः ॥ ९२ ॥
उपसर्गभयन्तस्य कदापि नहि जायते ।
अष्टकं च ममैतद्धि पठितं भक्तितः सदा ॥ ९३ ॥
सर्व रोगविनाशाय परं स्वस्त्ययनमहत् ।
शीतलाष्टक मेतद्ध न देयं यस्य कस्यचित् ॥९४॥
दातव्यं सर्वदास्मै भक्तिश्रद्धान्वितोऽस्तियः ।
एवमुक्त्वाययुः सर्वे तथैव भवितव्यता ॥९५॥
तथालोका ञ्झिमां सन्तिकालस्य वशमागताः ।
अथवक्ष्ये शीतलादि चिकित्सार्क प्रभावतः ॥९६॥

यह जगत्के उत्पन्न करनेवाली भवितव्यता तेरी पत्नी है, ब्रह्मा, विष्णु और महादेव ये सब इसकी आज्ञासे प्रवृत होते हैं ॥ ८५ ॥ मै तू और महादेवजी सब उसीके आधीन है इसलिये धन्य हुए हैं बुद्धिसे जिस प्रकारकी मति होती है वही भवितव्यता

है ॥ ८६ ॥ मैं तेरी सहायता करूंगी और प्रजाका हरण करूंगी जो गर्भवती स्त्री पहिले गरम वस्तु खायगी और दुष्ट भोजन करैगी ॥ ८७ । उसके गर्भका मै भक्षण कर लुंगी मै शीतल पदार्थोंसे और उनके सेवन करनेवालोंसे सदा प्रसन्न रहती हूं ॥ ८८ ॥ जो गर्भवती स्त्री प्रतिदिन मालतीके अर्कका सेवन करती है, मैं उसके गर्भको जीवन पर्य्यंत स्पर्श नहीं करूंगी अर्थात् उसको कभी गर्भ-बाधा न होगी ॥ ८९ ॥ जिस पुरुषके शरीरमें मेरे कोपसे दाह उत्पन्न हुआ हो वह ब्राह्मणोंके लिये दही भात और शीतल जल का दान दे ॥ ९० ॥ और आप भी सात दिनतक वही भोजन करै तो मैं उसकी पीडाको दूर कर देती हूं जो मनुष्य मेरे इस अष्टकका नित्य पाठ करता है ॥ ९१ ॥ उसके कुलमे भयानक विस्फोटक रोगका भय नहीं होता है। मनुष्योंको भक्तिपूर्वक इस स्तोत्रका पाठ करना चाहिये और उसको सुनना चाहिये ॥ ९२ ॥ इसका पाठ करनेवालेको उपसर्ग भय कदापि नही होता, भक्तिपूर्वक पाठ करनेसे यह मेरा अष्टक सव रोगोका नाश करनेवाला और कल्याणका वडा भारी स्थान है ये शीतलाष्टक हर किसीको नही बताना चाहिये ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ यह अष्टक सदैव उसको देना चाहिये जो श्रद्धासे युक्त हो, रावण कहनेलगा कि प्रिये ! ऐसे कह-कर सव भवितव्यता आदि लोक अपने २ स्थानको चलेगये ॥९५॥ और ये सव कालके वशीभूत होकर लोकोकी हिंसा करते हैं हे

प्रिये ! अब मैं शीतला आदिकी चिकित्साके लिये अर्कोंका वर्णन करता हूं ॥ ९६ ॥

शीतलानाशक प्रयोग ।

जात्यर्कं वा कदल्यर्कं शतपत्रार्कमेव च ।
यो भुञ्ज्याद्दधिभक्ताभ्यां शीतला तन्न मारयेत् ॥९७॥
चन्दनं वासको मुस्तं गुडूची द्राक्षया सह ।
एषामर्कः शीतलाश्च शीतलाज्वरनाशनः ॥ ९८ ॥
तारोमायाशीतलेति चतुर्थ्यंतं हृदन्तकम् ।
मंत्रमुच्चार्य यो दद्याद्दधीनि शतसंख्यया ॥९९॥
सचन्दनेन शीतेन शतपत्रार्ककेण च ।
अवश्यमेव सप्ताहप्रयोगाद्व्रणनाशनः ॥१००॥

इतिलङ्कानाथकृतार्कचिकित्साविस्फोटक निवारणं शतकंषष्ठम् ॥ ६ ॥

चमेली का अर्क केला का अर्क, अथवा कमलका अर्क जो मनुष्य दही और भातके साथ खाता है उसको शीतला नहीं मारती है ९७ ॥ चन्दन, अडूसा, नागरमोथा, गिलोय और दाख इनका अर्क शीतल करके सेवन करनेसे शीतलाके ज्वरका नाश करता है ॥ ९८ ॥ शीतलाके मन्त्रका उद्धार यह है "ओम् ह्रीं शितला" इस चतुर्थ्यन्त मन्त्रको सौ बार पढकर चन्दन और शीतल कमलके अर्कके साथ दही एक सप्ताह पर्यन्त खाय तो व्रण अर्थात् शीतलाके दाग दूर होते हैं ॥ ९९ ॥१००॥

इति श्रीरावणविरचितेऽर्कप्रकाशे मथुरानिवासि कृष्णलालकृत भाषाविभूषितं षष्ठं शतकम् ॥६॥

❀ सप्तम शतक ❀

बाल काला करने वाला लेप ।

त्रिफला नीलिकापत्र म्भृङ्गराजा यसोमलम् ।
अविमूत्रेणसम्पिष्टं लेपात्कृष्णी करं परम् ॥१॥

त्रिफला, नीलके पत्ते, भागरा और लोहकीट इनको भेडके मूत्रमें पीसकर लेप करै तो सफेद बाल काले हो जाय अथवा इनका अर्क निकालकर उसका लेप करै ॥ १ ॥

इन्द्रलुप्त पर लेप ।

मषी तु गजदन्तस्य छागीक्षीरं रसांजनम् ।
वटप्ररोहकं पिष्टमिन्द्रलुप्तघ्नमौषधम् ॥ २ ॥

हाथी दातकी भस्म, बकरीका दूध, रसौत और बडकी जटा इनको पीसकर लेप करनेसे अथवा इनका अर्क निकालकर लेप करने से इन्द्रलुप्त (गंजरोग) दूर होता है ॥ २ ॥

दारुण रोगपर लेप ।

आम्रबीज न्तथा पथ्या द्वयंस्यान्मात्रया समम् ।
दुग्धेन पिष्टन्त ल्लेपो दारुणंहन्तिदारुणम ॥ ३ ॥

आमकी गुठली, और हरड इन दोनो को समान भाग लेकर दूधमें पीसकर लेप करै अथवा दूध के साथ इनका अर्क निकालकर लेप करे तौ दारुणक (जिसमें केशभूमि कर्कश तथा रूखी खुजली युक्त होती है) रोग दूर होता है ॥ ३ ॥

अरूंषिका रोगपर अर्क।

नीलोत्पलस्य किंजल्कमामलं मधुयष्टिका ।
विलन्नं गोमूत्रके चैव तदर्कोऽरूंपि नाशयेत् ॥४॥

नीलकमलकी केशर, आवला, और मुलहटी, इन सबको गोमूत्रमे भिगोकर अर्क निकालले इस अर्कका लेप करनेसे अरूंषिका रोग दूर होता है ॥४॥

मुहासों को दूर करने वाला अर्क।

केवलम्पयसा पिष्टास्तीक्ष्णाः शाल्मलिकण्टकाः।
तदर्कस्य त्र्यहं लेपान्मुखम्पद्मोपमम्भवेत् ॥ ५ ॥

समर के तीक्ष्ण कांटोको केवल पानी मे पीसकर उनका अर्क निकालले फिर उसका तीन दिन तक लेप करै तौ मुंहासे दूर होजाते हैं और मुख कमलके समान सुन्दर होजाता है ॥५॥

मुखव्यंग नाशक अर्क।

वटांकुरो मसूरश्च मञ्जिष्ठा क्षौद्रमेव च ।
जलक्लिन्नस्तदर्कस्तु मुखव्यङ्गविनाशनः ॥ ६ ॥

वडके अंकुर, मसूर, मजीठ और शहद इनको जलमें भिगोकर अर्क निकालले, इस अर्कका लेप करने से मुखव्यंग अर्थात् मुखकी झाई दूर होती है ॥६॥

अंगुलिवेष्टक रोगपर अर्क।

काश्मर्य्यर्केण कोष्णेन सिञ्चेदंगुलवेष्टकम् ।
कोमलैः सप्तभिस्तस्य पत्रैर्बद्धं हरेद्गदम् ॥७॥

खम्भारी का अर्क निकालकर गरम गरम ऊपर सींचै फिर उसीके कोमल २ सात पत्ते बाधदे तो अंगुलिवेष्टक रोग दूर होताहै।

लिंगोत्थपर अर्क ।

सर्जसैन्धवसिद्धार्थसिताकुष्ठार्कधावनात् ।
कपिकच्छ्वा शमगच्छेल्लिंगोत्थो नात्र संशयः ॥८॥

राल सेंधानमक, सरसों, मिश्री और कूट इनका अर्क कोंचके साथ निकालकर उससे लिंगको धोवै तौ लिंगोत्थ बालकका लिंग खडा रहगया हो तो आराम होता है ॥ ८ ।

गुदकण्डू रोगपर अर्क ।

शङ्खसौवीरयष्ट्यर्कैः प्रत्यहं क्षालयेद्गुदम् ।
गुदकण्डू न्बालकस्य योगो हन्ति न संशयः ॥९॥

शंख, कांजी और मुलहटी इनके अर्क से बालककी गुदाको प्रतिदिन धोवे तौ इससे बालककी गुदाकी खुजली निश्चय दूर हो ।

गुदनिःसरणपर अर्क ।

पद्मिनीमृदुपत्राणामर्कं यः सितया पिवेत् ।
गुदनिस्सरण न्तस्य नश्येन्मासान्नसंशयः ॥१०॥

पद्मनीके कोमल पत्तोंके अर्कमें मिश्री मिलाकर एक महीने भर सेवन करे तौ गुदनिःसरण (काच निकलना बन्द) हो ॥ १० ॥

सूर्यावर्त्तनाशक अर्क ।

भृंगराजरसार्को य स्तुल्यक्षीरेणतापितः ।
सूर्यावर्त्त न्निहन्त्याशु नस्यनैव प्रयोगराट् ॥११॥

भागरेके अर्कमें बराबरका दूध मिलाकर उसको धूपमें गरम करले और फिर इसकी नस्य ले तो सूर्यावर्त्तरोग दूर हो जाता है (सूर्यावर्त्त उस वेदनाका नाम है जो सूर्यके बढनेके साथ बढती है और सूर्यके घटनेके साथ घटती है) ॥ ११ ॥

अर्धावभेदकपर अर्क ।

विडंगतिलकृष्णानि सम्पिष्ट्वा प्रलेपयेत् ।
एतदर्कस्य नस्येन चार्द्धभेदो व्यपोह्यते ॥१२॥

वायविडंग, और काले तिल इनका पीसकर लेपकरै अथवा इनका अर्क निकालकर उसका नस्य दे तो अर्धावभेदक अर्थात् आधाशीशीका रोग दूर होता है ॥ १२ ॥

शिरोवेदना नाशक अर्क ।

पथ्याक्षधात्रीरजनी गुडभूनिम्बनिम्बकैः ।
गुडूच्यर्को हरेत्पीडां सर्वांमूर्द्ध समुद्भवाम् ॥१३॥

हरड, बहेडा, आवला, हल्दी गुड चिरायता, नीम और गिलोय इन सबका अर्क निकालकर प्रयोग करै तो सब प्रकारके मस्तक शूल दूर होते हैं ॥ १३ ॥

शङ्खपीडा नाशक अर्क ।

दार्वीहरिद्रामञ्जिष्ठासनिम्बोशीरपद्मकम् ।
मर्द्दनञ्चै तदर्कस्य शङ्खपीडापशान्तिकृत् ॥ १४ ॥

दारुहल्दी, मजीठ, नीम खस और पद्माख इन सबका अर्क निकाल कर उसको कनपटो पर मलनेसे कनपटीकी पीडा दूर होती है ॥ १४ ॥

अलसरोगनाशक अर्क ।

पादेसिक्थारनालेन लेपनन्त्वल सेहितम् ।
पटोलकुनटीनिम्बरोचनामिरचैस्तिलैः ॥ १५ ॥

कांजीमे मोम मिलाकर पावोंपर लेप करै अथवा परवल, मैनसिल, नीम, गोरोचन, कालीमिरच और तिल इनका अर्क पावोंपर लगावे तौ अलस (कीचड आदि लगनेसे पावोंकी अंगुलियोंमें गीलापन, दाह और खुजली होजाती है) रोगको दूर करता है ॥१५॥

अलसनाशक अन्य अर्क ।

केवलं भृंगराजार्क उष्णो दार्वी सुपेपिता ।
पादे बध्वाऽनयोः कल्कं दिनकेन च्चयो भवेत् ॥१६॥

केवल भागरेके अर्कमें दारुहल्दी पीसकर उसकी लुगदी बनाकर पांवमे बाधे तौ एक दिनमें अलस रोग दूर होता है ॥ १६ ॥

चर्मकील आदिपर उपाय ।

चर्मकीलं जतुमणिर्मशकस्तिलकालकः ।
उत्कृत्य शंखद्रावेण दग्धो नोत्पद्यते पुनः ॥ १७ ॥

चर्मकील, लहसन, मस्सा और तिल इनको उखाडकर वह स्थान शंखद्रावसे दग्ध कर दिया जाय तौ यह फिर नही उठते ॥१७

अभिष्यन्दरोग नाशक अर्क ।

अहिफेनार्कसम्पिष्टा त्रिफलाचूर्णपोटली ।
प्रतिसार्यं हिता नेत्रे सर्वाऽभिष्यन्दशान्तये ॥१८॥

अफीमके अर्कमें त्रिफलाको पीसकर उसकी पोटली बनाकर

नित्य सायकालको नेत्रोंपर लगावै तो निश्चय अभिष्यन्द रोग शांत होता है ।। १८ ।।

नेत्र रोग नाशक अर्क !

वातातपरजोहीनवेश्मन्युत्तानशायिनः ।
आधारौ माषचूर्णेन क्लिन्नेन परिमण्डलौ ॥ १९ ॥
समौ दृढौ सम म्बद्धौ कर्तव्यौ नेत्रकोशयोः ।
पूरयेन्नयने तेन तत उन्मीलयेच्छनैः ॥ २० ॥

पवन, धूप और धूलिरहित मकानमें नेत्ररोगीको चित्त शयन करावे और उरदके आटेको पानीमें गूंथकर उसकी दो टिकिया बनाकर नेत्रोंके कोशोपर लगावै, किन्तु वह टिकिया लम्बाई चौडाई मे नेत्रोके बराबर हो, पट्टी दृढ बाधे फिर धीरे २ नेत्र खोले तो आराम होवे ॥ १९ ॥ २० ॥

तर्पणके योग्य नेत्र ।

भिषग्भिरेषकथितः पुराणैस्तर्पणो विधिः ।
यद्रूक्ष म्परिशुष्क ञ्च नेत्रं कुटिलमाविलम् ॥२१॥
शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मीलनसंयुतम् ।
तिमिरार्जुनशुष्काद्यैरभिष्यन्दाधिमन्थकैः ॥२१॥
शुष्काक्षिपाकशोथाभ्यां युक्तं वातविपर्ययैः ।
तन्नेत्रन्तर्पणे योज्य न्नेत्रकर्मविशारदैः ॥२३॥

प्राचीन वैद्योने नेत्रोके तर्पणकी विधि कही है, जो नेत्र रूक्ष, परिशुष्क, कुटिल, आविल, शीर्णपक्ष्म, हो तथा जो शिरोत्पात,

कृच्छ्रोन्मीलन, तिमिर, अर्जुन, शुष्क, अभिष्यन्द, अधिमन्थ, शुष्काक्षिपाक, सूजन और वात विपर्य्यय इत्यादि रोगोंसे युक्त हो ऐसे नेत्रोंमें नेत्र चिकित्सामे निपुण वैद्य तर्पण कर्म करे ॥ २१ ॥

नेत्र रोग नाशक अर्क ।

धारयेद्वर्त्मरोगेषु वाङ्मात्राणां शतम्बुधः ॥

स्वस्थे कफे संधिरोगे वाचा म्पञ्च शतानि च ॥२४॥

कफे षट्कशतं कृष्णरोगे सप्तशतम्मतम् ।

दृष्टिरोगे शतान्यष्टावधिमन्थे सहस्रकम् ॥ २५ ॥

सहस्रं वातरोगेषु धार्य्यमेवं हितर्प्पणम् ।

वर्त्म रोगों अर्थात् पलकके रोगोंमें जितनी देरमे सौमात्राके वाक्योंको उच्चारण हो उतनी देर तक नेत्रोंमें औषधि भरी रहने दे, स्वस्थ और कफज सन्धिरोगमें जितनी देरमें पाच सौ मात्राके वाक्यो का उच्चारण हो उतनी देर तक रक्खे ॥ २४ ॥ कफ रोगमें छः सौ मात्राके उच्चारण कालतक, कृष्णरोगमें सातसौ मात्राके उचारण कालतक दृष्टिरोगमें आठसौ मात्रासे उच्चारण कालतक, और अधिमन्थमें एक हजार मात्राके वाक्योच्चारणमें जितनी देर लगे उतनी देर तक औषधि भरी रहने दे ॥ २५ ॥ बात रोगोंमें एक सहस्र मात्राके उचारण काल औषधि भरी रहनेदे, इस प्रकार तर्पण चिकित्सा करे.

नेत्ररोग नाशक अर्क ।

पुनर्नवा च तुवरी कुमारी त्रिफला निशा ॥२६॥

यष्टिगैरिकसिन्धूत्थदार्व्यञ्जन युगैः कृतः ।
अर्कस्तत्पूरणेनाशु नेत्ररोगाः शमं ययुः ॥२७॥

साठ. अडहर, ग्वारपाठा, त्रिफला हल्दी ॥ २६ ॥ मुलहटी गेरू, सेंधानमक, दारुहल्दी, और दोनों रसोत इनका अर्क निकाल कर उस अर्कको नेत्रोंमे भरे तौ नेत्ररोग शीघ्रही शान्त होते हैं ॥२७

रतौन्धको दूर करनेवाला अर्क ।

रसांजनं हरिद्रे द्वे मालतीनवपल्लवाः ।
गोमयार्कस्तु रात्र्यान्ध्य स्परितोहन्त्यसंशयम् ॥२८॥

रसौत, हल्दी, दारूहल्दी, मालतीके नये पत्ते और गायके गोबरका अर्क आखोंमे लगावे तौ रतौंधको दूर करता है ॥ २८ ॥

काच पटलादि नाशक अर्क ।

शङ्खनाभिर्विभीतस्य मज्जा पथ्या मनःशिला ।
पिप्पली मरिचं कुष्ठ वचादुग्धेनपेपितम् ॥२९॥
तदर्कः पूरणाद्धन्यात्काच स्पटलमर्बुदम् ।
तिमिरंमांसवृद्धि श्च वार्षिक स्पुष्पमेव च ॥ ३० ॥

शंखकी नाभि, बहेडेकी मिंगी, हरड, मैनसिल पीपल, काली मिरच, कूठ, बच इनको बकरीके दूधमें पीसकर अर्क निकालले और फिर उस अर्कको आखोंमे डाले तौ काच (उस नेत्ररोगका नाम है जिसमें सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि इत्यादि दिखाई दे और रोगके प्राचीन होनेपर ये भी दिखाई न दें), पटल, अर्बुद, तिमिर, मास वृद्धि और वर्ष दिनके पुराने पुष्प (फूला) रोगका नाश होता है.

कर्ण शूल नाशक अर्क।

कर्णशूले कर्णनादे बाधिर्ये क्ष्वेड एवच ।
चतुर्ष्वपि च रोगेषु सामान्यं भेषजंस्मृतम् ॥३१॥
शृङ्गवेरं सहमधुसैन्धव न्तैलमेवच ।
कदुष्णङ्कर्ण योर्धार्य मेत त्स्याद्वेदनापहम् ॥३२॥

कर्णशूल, कर्णनाद, बधिरता और क्ष्वेड (कर्णरोग विशेष) इन चारो रोगोंके लिये सामान्य औषधि कही है ॥ ३१ ॥ अदरख का रस, शहद सेंधानमक और मीठा तेल इनको कुछ गरम करके कानमें टपकावै तौ कानका दर्द दूर होता है ॥ ३२ ॥

कर्ण शूलपर अन्य प्रयोग।

तीव्रशूलातुरे कर्ण सशब्दे क्लेदवाहिनि ।
छागमूत्रम्प्रशंसन्ति कोष्णंसैसन्धवसंयुतम् ॥३३॥

जो कानमे दर्द बहुत होता हो, झनझन शब्द होता हो और मवाद भी बहता हो तो बकरेके मूत्रमें सेंधानमक मिलाकर कुछ गरम करके टपकावै ॥ ३३ ॥

पूतिकर्ण रोगपर तैल।

आम्रजम्बूप्रवालानि मधुकस्य वटस्य च ।
एभिस्तु साधितन्तैल म्पूतिकर्ण गदं हरेत् ॥३४॥

आम, जामन, महुआ, और बडके पत्तोंसे सिद्ध किया हुआ तेल कानमें डालनेसे पूतिकर्ण (जिसरोगमें कानसे दुर्गन्धि पीव बहै) रोग दूर होता है ॥ ३४ ॥

नेत्रों के फूले को दूर करने वाली वत्ती ।

गोमूत्रं हरितालं च तथा माहिषगुग्गुलुम् ।
सप्ताहं वादशाहं वा बहुषः परिभावितम् ॥३५॥
करञ्जबीज न्वद्वर्तिर्दृष्टेः पुष्पं विनाशयेत् ।

हरिताल, और भेसा गूगल इनको सात दिनतक अथवा दस दिन तक गोमूत्रकी भावना देकर ॥ ३५ ॥ फिर उसमे कंजाके बीज मिलाकर बत्ती बनाले, यह बत्ती आखके फूलेको दूर करती है ॥

प्रक्लिन्न वर्त्म पर अंजन ।

रसाञ्जनं सर्जरसो जातीपुष्पं मनःशिला ॥३६।
समुद्रफेनं लवणं गैरिकं मरिच न्तथा ।
एतत्समांशंमधुना पिष्टम्प्रक्लिन्नवर्त्मनि ॥३७॥
अंजनंक्लेदकण्डू घ्नम्पक्ष्मणाञ्चप्ररोहणम् ।

रसौत, राल, चमेलीके फूल, मैनसिल ॥ ३६ ॥ समुद्रफैन सेंधानमक, गेरू और कालीमिरच, इन सबको समान भाग ले कर शहदमें पीसकर प्रक्लिन्न वर्त्ममे अंजन करै ॥ ३७ ॥ तौ क्लेद (पलकोंकी खुजली) दूर होती है तथा पलकोंके बाल नवीन उग आते है ।

नेत्रस्राव पर अर्क ।

बब्बूलार्कः क्षौद्रयुक्तो नेत्रस्रावं हरेत्क्षणात् ॥३८॥

बबूलका अर्क आखो में ढालनेसे नेत्रोसे पानी गिरना बन्द होता है ॥ ३८ ॥

नेत्र रोग नाशक अर्क।

पुनर्नवायाः श्वेताया अर्को हन्याद् दृगामयान् ।
दुग्धेनकण्डूं क्षौद्रेणनेत्रस्रावं च सर्पिषा ॥ ३९ ॥
पुष्पं तैलेन तिमिरं काञ्जिकेन निशान्धताम् ।

सफेद सांठका अर्क दुधके साथ लगानेसे नेत्रोंकी खुजलीको दूर करता है, शहदमे मिलाकर लगानेसे नेत्रोंसे पानी गिरना बन्द होता है ।। ३९ ।। घीमें मिलाकर लगानेसे फूला, तेलमे मिलाकर लगानेसे तिमिररोग और काजीमें मिलाकर लगानेसे रतौंधका नाश होता है ॥

पीनसादि रोग नाशक अर्क ।

कट्फलं पौष्करं शृंगीव्योषंयासश्चकारवी ॥४० ॥
एतदर्कः शृङ्गवेर रसयुक्तो गदान्हरेत् ।
पीनसंस्वरभेदं च तमकंचहलीमकम् ॥ ४१ ॥
सन्निपातं कफं वातं श्वासं कासं विनाशयेत् ।

कायफल, पोहकर मूल, कांकडासिंगी, त्रिकुटा, जवासा काला-जीरा ॥ ४० ॥ इन सबका अर्क अदरखका रस मिलाकर सेवन करनेसे पीनस, स्वरभेद, तमकश्वास, हलीमक ॥ ४१ ॥ सन्निपात, कफ वात, श्वास, और खासी ये रोग दूर होते हैं ॥

पूर्तिनासा रोग नाशक अर्क ।

व्याघ्रीदन्तीवचाशिग्रुः सुरसाव्योषसैंधवैः ॥४२॥
सिद्धोऽर्कस्तुनसिक्षिप्तः पूतिनासागदापहः ।

वटेरी, दन्ती, बच सहजना, तुलसी त्रिकुटा, और सेंधानमक ॥ ४२॥ इनसे सिद्ध किया हुआ अर्क नाकमें डालनेसे पूतिनासा रोग दूर होता है।

छींक नाशक अर्क।

शुण्ठी कुष्ठ कणाविल्वद्राक्षार्कः क्षवथुं हरेत् ॥४३॥

सोंठ, कूठ, पीपला, और दाख इनका अर्क छींकको दूर करता है ॥ ४३ ॥

कफ नाशक अर्क।

मर्दयेत्कट्फलार्कं न्तु श्लेष्मनाशाय मस्तके ।

कायफलका मस्तकपर मर्दन करै तौ कफका नाश होता है ॥

नासार्श नाशक अर्क।

गृहधूमकणादारुनक्ताह्वासैन्धवैः समैः ॥४४॥
अपामार्गेण जातोऽर्को नासार्शोघ्नो दिनत्रयात् ।

घरका धूंआ, पीपल, देवदारु, कंजा, सेंधानमक ॥ ४४ ॥ और ओंगा इनका अर्क प्रयोग करनेसे नासार्श रोग तीन दिनमें दूर करता है ॥

निद्रा नाशक अर्क।

क्षौद्राश्वलालासंघृष्टैर्मरिचैर्नय नाञ्जनात् ॥४५॥
अतिनिद्रा शमं याति तमः सूर्योदये यथा ।

शहद और घोडाकी लार इन दोनोंमें कालीमिरच पीसकर आखोंमें अंजन करै ॥ ४५ ॥ तौ अत्यन्त निद्राका ऐसे नाश होजाता है जैसे सूर्योदयपर अंधकार मिट जाता है।

सब प्रकार के नेत्र रोगों पर अर्क ।

शिलायां रसकं पिष्ट्वा सम्यगाप्लाव्य वारिणा॥४६॥
गृह्णीया त्तज्जलं सर्वं त्यजेच्चूर्णमधोगतम् ।
शुष्कं च तज्जलं सर्वं पर्पटीसन्निभं भवेत् ॥४७॥
विचूर्ण्य भावयेत्सम्यक्त्रिफलार्कैः पुनः पुनः ।
कर्पूरस्य रजस्तत्र दशमांशेन निक्षिपेत् ॥ ४८ ॥
अंजयेन्नयने तेन नेत्राखिलगदच्छिदः ।

खपरियाको शिलापर पीसकर जलमें घोलदे ॥ ४६ ॥ फिर जब वह चूर्ण बैठ जाय तव धीरे २ जलको निकालले फिर उस जलको सुखावै, जब वह सूख जायगा तव पपडीके समान होजायगा ॥ ४७ ॥ तदनन्तर उस पपडीका चूर्णकर बारम्बार त्रिफलाके अर्क से भावना दे और उसमें दसवा भाग कपूर मिलाकर ॥ ४८ ॥ नेत्रो में अंजन करै तो सब प्रकारके नेत्ररोग दूर हों ॥

दांतों के कीडे दूर करने का उपाय ।

नील्यर्कः कटु तुंब्यर्कः काकजङ्घाभवोऽथवा ॥४९॥
मण्डूषकरणैर्हन्याद्दन्तानां कृमिजालकम् ।

नीलका अर्क, कटुतुम्बीका अर्क अथवा काकजंघाका अर्क ॥४९ ॥ इनसे कुल्ला करै तो दांतोंके कीडे मरजातेहै ॥

दांतों के दृढ़ करने का उपाय ।

त्रिफला स्वर्णमाक्षीकं तारमाक्षिकसैंधवम् ॥५०॥
खदिरो दग्धपूगं च लोहचूर्णं समांशकम् ।

वज्रदन्तीभवेचार्के भावयेद्दिवसत्रयम् ॥ ५१ ॥
लेप्याः सायन्तने दन्ताः सप्ताहाद्दृढवत्तराः ।

त्रिफला, सोनामाखी, रूपामाखी, सेंधानमक ॥ ५० ॥ खेर सार, जली हुई सुपारी और लोह चूर्ण इन सवको समान भाग लेकर वज्रदन्तीके अर्कमें तीन दिन तक भावना दे ॥ ५१ ॥ और फिर सन्ध्या के समय उसका दातोंपर लेप करै तौ दात दृढ होते हैं ॥

उपजिह्वा पर अर्क ।

व्योषक्षाराभयावन्हिचूर्ण मूर्वार्कभावितम् ॥५२॥
उपजिह्वाप्रशान्त्यर्थं पीडयेदुपजिह्विकाम् ।

त्रिकुटा, जवाखार हरड और चीता इन सवके चूर्णको मूर्वाके अर्ककी भावना देकर ॥ ५२ ॥ उपजिह्वापर रगडे तौ उपजिह्वा-रोग दूर हो ।

जिह्वा और दांतके रोगों को दूर करने का उपाय ।

कटुत्रयं शिवा धात्री यवानी जीरकद्वयम् ॥ ५३ ॥
चव्यमौषधवत्तुल्य भागयुग्मं च सैंधवम् ।
सप्तवारानम्लवर्गे द्विगुणैश्चित्रकार्ककैः ॥ ५४ ॥
भागयित्वा वटी कार्या जिह्वा दन्तरुजापहम् ।

त्रिकुटा, हरड, आवला, अजवायन, जीरा कालाजीरा ॥५३॥ और चव्य ये सब औषधि समान भागले और दुगना सेंधानमकले, इनको अम्लवर्गके रसकी सात और चीतेके रसकी चौदह भावना ॥

॥५४॥ देकर गोली बनाले, ये गोलियां जिव्हा और दांतके रोगोंको दूर करनेवाली है ॥

तालु रोगों पर अर्क ।

वचा चातिविषा पाठा रास्ना कटुकरोहिणी ॥५५॥
पिचुमर्दार्ककवलं तालुरोगविनाशनम् ।

वच, अतीस, पाठा, रास्ना और कुटकी ॥ ५५ ॥ इनका चूर्ण करके नीमके अर्कमें मिलाकर कवल बनाले फिर उस कवलको मुखमें धारण करै तो तालुरोग दूर हो ॥

कण्ठ रोग नाशक अर्क ।

गोमूत्रातिविषादारुपाठा विषकालिंगकाः ॥ ५६ ॥
कटुकार्कस्य पानेन कण्ठरोगविनाशनम् ।

गोमूत्र, अतीस, देवदारु, पाठा, अतीस, इन्द्रजौ ॥ ५६ और कुटकी इनका अर्क पान करनेसे कण्ठरोग दूर होते हैं ।

मुखपाक नाशक अर्क !

जाती पत्रामृता द्राक्षा यासदार्वी फलत्रिकैः ॥५७॥
अर्कः शीतः क्षौद्रयुक्तो गण्डूषोमुखपाकनुत् ।

चमेलीके पत्ता, गिलोय, दाख, जबासा, दारुहल्दी और त्रिफला ॥ ५७ ॥ इनका अर्क ठंडा करके उसमें शहद मिलाकर कुरला करै तो मुखपाक दूर होता है ॥

व्रणक्लेदपर अर्क ।

कृष्णजीरककुष्ठेन्द्रयवजार्कस्य सेवनात् ॥ ५८ ॥
त्रिदिनेन व्रणक्लेददौर्गन्ध्यमुपशाम्यति ।

कालाजीरा, कूठ और इन्द्रजौ, इनके अर्कका सेवन करने से ॥ ५८ ॥ तीन दिनमे व्रणका गीलापन और मुखकी दुर्गन्धि दूर होजाती है।

लालास्रावपर अर्क।

नीलोत्पलदलक्लिन्नं त्रिदिनं मधुनायुतम् ॥ ५९ ॥
अर्को गण्डूषहो हंति लालास्रावं न संशयः।

नीलकमलको तीन दिनतक शहद में भिगोवै ॥ ५९ ॥ फिर उसका अर्क निकालकर कुरला करै तो लार टपकना निश्चय वन्द होजाता है ॥

विषार्त को अर्क।

स्थवरेणविषेणार्त्तं मदनार्केण वामयेत् ॥ ६० ॥
शतपत्र्यादिकार्कैस्तु अभिषेकं समाचरेत्।
दद्याच्च मधुसर्पिभ्यां मरिचार्कं तु साम्लकम् ॥६१॥

स्थावर विषसे पीडित मनुष्यको मैनफल का अर्क निकालकर उससे वमन करावै ॥६०॥ और कमलनी आदिके अर्कसे अभिषेक करै तथा फिर शहत, घी और खटाई मिलाकर मिर्चोंका अर्क देवे।

विषहारक लेप।

हेमार्कसाधितैरर्कैः मर्दयेच्चाविरेचयेत्।
आदौसंस्नेहनं कृत्वा ततो लेपं समाचरेत् ॥ ६२ ॥
मूलत्वक्पत्र पुष्पाणि वीजञ्चेति शिरीषतः।
गवांमूत्रेण सम्पिष्टं लेपाद्विषहरम्परम् ॥ ६३ ॥

धतूरे और आकके अर्कका मर्दन करै, और उससे विरेचन करावे पहिले स्नेहन कर्म करके फिर लेप करै ॥६२॥ सिरसकी जड छाल, पत्ता, फूल और वीज इनको गोमुत्रमें पीसकर लेप करनेसे विष दूर होता है ॥ ६३ ॥

सर्प विष नाशक अर्क ।

पिपली धान्यकं मांसी लोध्रमेला सुवर्चला ।
स्थूलैला मरिचं वाल न्तथा कनकगौरिकम् ॥ ६४ ॥
मालत्यर्केण गुटिकां कर्षमात्रा न्तु भक्षयेत् ।
गरुड्यर्कस्य पान न्तु सर्प्पाणां विषनाशनम् ॥६५॥

पीपल, धनियां, जटामासी, लोध, इलायची, सज्जी, वडी इलायची, काली मिरच, नेत्रवाला और सोनागेरू ॥६४॥ इनकी मालतीके अर्कमें एक २ तोलेकी गोली बनाकर खाय और ऊपरसे छिरहटेका अर्क पीवै तो सर्पका विष दूरहो ॥५५॥

बृश्चिक विषनाशक अर्क ।

सूर्यावर्त्तार्कोगन्धस्तु बृश्चिकस्य विषं हरेत् ।

सूर्यावर्त्त अर्थात् हुलहुलके अर्क और गन्धकको मिलाकर लेप करै तौ विच्छू का विष दूरहो ।

कुत्ताके विषको दूर करने वाला अर्क ।

अपामार्गजटार्को वा धत्तूरार्कः सदुग्धकः ॥ ६६ ॥
अंकोलार्कोऽथ वंशार्क श्वविषघ्नः पृथकूपृथक् ॥

ओगाकी जडका अर्क अथवा धतूरेका अर्क दूधके साथ सेवन

करनेसे ॥ ६६ ॥ अथवा अकोलका अर्क और बांसका अर्क इनको अलग २ सेवन करनेसे कुत्तेका विष दूर होजाता है ॥

लूता विष नाशक लेप ।

रजनीयुग्मपत्तंग मंजिष्ठा नागकेशरम् ॥ ६७ ॥
गैरिकार्केण शीतेन लेपो लूताविनाशनः ।

हल्दी दारुहल्दी, पतंग, मजीठ और नागकेशर ॥ ६७ ॥ इनको गेरूके अर्कमे पीसकर ठंडा २ लेप करै तौ लूता (मकडी) का विष दूर होता है ।

मूषक विषनाशक अर्क ।

बिडालमांसयर्कलेपो मूषकानां विषापहः ॥ ६८ ॥

विलावके मांसके अर्कका लेप करनेसे मूषकका विष दूर होता है ॥ ६८ ॥

कनखिजूरा विष दूर करनेवाला अर्क ।

तिक्ताजाजीनागरया अर्केण सह पेपिता ॥
शतावरीहरेत्सद्योशतपद्युद्भवंविषम् ॥ ६९ ॥

कुटकी, जीरा और सोंठ इनके अर्कमे सितावरको पीसकर लेप करै तौ कनखिजूराका विष निश्चय दूर होता है ॥ ६९ ॥

चीटीका विष दूर करनेवाला अर्क ।

पिपीलिकाविषं हन्याच्छुण्ठयर्कस्तत्र मर्दितः ।

काटनेके स्थानपर सोठका अर्क लगानेसे चींटीका विष दूर होताहै

प्रदरनाशक अर्क ।

सितादुग्धेन संयुक्तमाषार्कस्य पलद्वयम् ॥७०॥

घृतदुग्धाशिनी नारी प्रदरात्परिमुच्यते ।

उरदके दो पल अर्कमे मिश्री और दूध मिलाकर पीवै ॥७०॥ तौ स्त्री प्रदररोगसे मुक्त होती है परन्तु घी और दूधका पथ्य करना चाहिये ।

अन्य अर्क ।

अशोकवल्कलार्कश्च घृतंदुग्धं च शीतलम् ॥७१॥
यथाबलंपिबेत्प्रात स्त्रीब्रासृग्दरनाशनम् ।

अशोककी छालके अर्कमें घी और दूध मिलाकर शीतल करके ॥७१॥ बलके अनुसार पीवे तौ स्त्रीका तीव्र रक्तप्रदररोग दूर होताहै

अन्य अर्क ।

दार्वी रसाञ्जनं वासा किरातश्चार्कपुष्पकम् ॥७२॥
रक्तचन्दनविल्वार्कः सक्षौद्रोऽसृग्दरंहरेत ॥

दारुहल्दी, रसौत, अडूसा, चिरायता, आकके फूल ॥ ७२ ॥ लालचन्दन और बेलगिरी इन सबका अर्क निकालकर उसमे शहद डालकर पीवै तौ प्रदररोग दूर होता है ॥

सोमरोग नाशक अर्क ।

कदलीनां फलं पक्वान्धात्रीफलरसं मधु ॥७३॥
शर्कराभिः कृतं मद्यं सोमरोग विनाशनम् ।

केलाके पके फल, आंवलेका रस और शहद ॥७३॥ इनका खांडके साथ सिद्ध किया हुआ अर्क सोमरोगको दूर करता है ॥

बहु मूत्र नाशक अर्क ।

चक्रमर्दकमूल न्तु सम्पिष्ट न्तण्डुलाम्बुना ॥७४॥

प्रभात समये पीतस्तदर्को बहुमूत्रजित् ॥

पवाड़की जडको चावलोके जलमें पीसकर ॥७४॥ उसका अर्क निकालले और प्रातःकाल पीवै बहुमूत्रता रोग दूर होता है ।

रजः प्रवर्त्तक अर्क ।

ज्योतिष्मतीघनवचाकृष्णिकानिम्बजोऽर्कः ॥७५॥
शीतलः पयसा पीतो नारीणाम्पुष्पकारकः ।

मालकागनी, नागरमोथा, वच, राई और नीम इनका अर्क ॥७५॥ ठण्डा करके दूधके साथ पीनेसे स्त्रियोंको रजोदर्शन कराताहै।

गर्भ धारण कराने वाला अर्क ।

अश्वगन्धाभवार्केण सिद्धन्दुग्धं घृतान्वितम् ।
ऋतुस्नातांगना प्रातः पीत्वा गर्भं दधातिहि ।७६॥

असगन्धके अर्कके साथ दूध औटाकर उसमें घृत मिलाकर ऋतुस्नान के पश्चात् स्त्री प्रातःकाल पीवे तौ वह गर्भ धारण करतीहै।

गर्भ निवारक अर्क ।

आरनालपरिपेषित न्त्र्यह या जपाकुसुममत्तिपुष्पिणी
सापुराणगुडमुष्टिसेविनी सा दधाति नहि गर्भमङ्गना ॥

गुडहलके फूलोको काजीके पानीमे पीसकर उसमे पुराना गुड मिलाकर चार २ तोलेके प्रमाण से ऋतुमती स्त्री तीन दिन तक खाय तौ उसको फिर गर्भ नही रहता ॥७७॥

विलुप्ता योनि पर तैल ।

नतंवार्त्ताकिनीकुष्ठसैन्धवामरदारुभिः ।

तिल तैल म्पचे न्नारि पिचुमस्यविधारयेत् ॥७८॥
विप्लुतायां मदायोनौ व्यथातेन प्रशाम्यति ।

तगर, कटेरी का फल, कूठ, सेंधानमक और देवदारु इनके साथ्य तैल सिद्ध करके उसमे रुई भिगोकर योनिमें रक्खै ॥ ७८ ॥ तौ विलुता योनीकी व्यथा शान्त होती है ।

अन्ययोनियो पर उपाय ।

वातलां कर्कशां स्तब्धा मल्पस्पर्शा न्तथैव च ॥७९॥
कुम्भीस्वेदैरुपचरेदन्तर्वेश्मनि संवृते ।
धारयेद्वापिचुं योनौ तिल तैलस्यमा सदा ॥ ८० ॥

वातल, कर्कश, स्तब्ध, और अल्प स्पर्श योनि वाली स्त्रीको मकानके भीतर जहा हवा न आती हो वहा कुम्भी स्वेद देवे, अथवा सदैव तिलके तेलका फाया योनिमें रक्खै ॥७९॥८०॥

स्कन्दापस्मारपर अर्क ।

बिल्वं शिरीषस्तुलसीयुग्मपाठा च राजिका ।
श्वेतदूर्वा मरुवको भार्गीकह्लारभूस्तृणम् ॥ ८१ ॥
श्वेतवर्वरिका कृष्णावर्वरी कासमर्दकः ।
महानिम्बः कट्फल न्तु निर्गुण्डीचापिशल्लकी॥८२॥
उदुम्बरो वारिवाहो विडङ्ग काकमाचिका ।
बला एलाजटामांसीर्दद्यान्मूत्रष्टिके व्यहम् ॥ ८३ ॥
गोऽजाविमहिषाश्वानां खरोष्ट्र करिणा न्तथा ।
नष्कासयेत्ततश्चार्कं शांभवं कवचं जपन् ॥ ८४ ॥

पक्षमेकं प्रयोक्तव्यं स्कन्दापस्मारशांतये ।
जातमात्रस्य बालस्य वल्लार्कं तु प्रदापयेत् ॥८५॥
तज्जनन्याः पलं देयमजादेर्द्विगुणादिकम् ।

बेलगिरी, सिरस, तुलसी, दो प्रकारका पाठा, राई, सफेद दूव, मरुआ, भारंगी, कनज, रोहिषतृण ॥ ८१ ॥ सफेद वन तुलसी, काली बनतुलसी, कसोदी, बकायन, कायफल, निर्गुंडी, शालाई वृक्ष, ॥ ८२ ॥ गूलर, नागरमोथा, बायविडंग, मकोय. खेरटी, इलायची, और जटामासी, इन सबको गाय, बकरी. भेड, भेस, कुत्ता, गधा, ऊँठ और हाथी इन आठोंके मूत्रमें तीन दिनतक भिगोवे, फिर शिवकवचका पाठ करता हुआ इनका अर्क निकालले ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ और स्कन्दापस्मारकी शान्तिके लिये पन्द्रह दिन तक प्रयोग करे शीघ्रही उत्पन्न हुए बालकको तीन रत्तीकी मात्रा दे ॥ ८५ ॥ और उस बालककी माताको एक पल दे और बकरी आदि पशुओको दुगनी मात्रा देवै ॥

बालरोग नाशक अर्क ।

घनकृष्णारुणाशृंगीजातोर्कः क्षौद्रसंयुतः ॥८६॥
शिशोर्ज्वरातीसारघ्नः कासंश्वासंवमिंहरेत् ।

नागरमोथा, पीपल अतीस और काकडासिगी इनका अर्क शहद मिलाकर देवै तौ ॥ ८६ ॥ बालकका ज्वरातिसार खासी, श्वास, और वमन दूर होवै ॥

वालकके अतिसार पर अर्क ।

विडंगान्यजमोदा च पिप्पली तंडुलानि च ॥ ८७ ॥
एषामर्कः सुखोष्णस्तु वालस्यामातिसारजित् ।

वायविडंग, अजमोद, पीपल और चावल ॥८७॥ इनका अर्क कुछ गरम २ पिलावे तौ बालकका आमजन्य अतिसार दूर होवे ।

बालरोग नाशक अर्क ।

रजनी सरलो दारु बृहती गजपिप्पली ॥८८॥
पृष्ठपर्णी शताह्वा च जातोऽर्को मधुसर्पिषा ।
दीपनो ग्रहणीं हन्ति मारुतार्तिं सकामलाम् ॥८९॥
ज्वारातीसारपाण्डुघ्नो बालानां सर्वरोगनुत् ॥९०॥

हल्दी, सरलकाष्ठ, देवदारु, कटेरी गजपीपल, ॥ ८८ ॥ पृष्ठपर्णी और सोफ इनका अर्क निकालकर शहद और घीके साथ बालकको देवै तौ उनकी जठराग्नि वढती है, और संग्रहणी, बातरोग, कामला, ज्वर अतिसार, और पाण्डुरोग आदि बालकोके सब रोग दूर होते हैं ॥ ८९ ॥ ९० ॥

बालकोके मूत्रग्रह पर अर्क ।

कणोषणासिताक्षौद्रसूक्ष्मैलासैंधवैः कृतः ।
मूत्रग्रहे प्रयोक्तव्यः शिशूनामर्क उत्तमः ॥ ९१ ॥

पीपल, काली मिरच, मिश्री, शहद, छोटी इलायची और सेधानमक इनका अर्क बालको का मूत्र रुकजाय तौ उसके लिये बहुत उत्तम है ॥ ९१ ॥

वाजीकरण प्रयोग।

स्वर्णमाक्षिकलोहं च पारदश्च शिलाजतु।
पथ्याविडङ्गधत्तूरविजयाजाति पत्रिका ॥ ९२ ॥
अश्वगधा गोक्षुराणामर्कैर्भाव्यं पृथक्पृथक्।
सप्तघस्रं तु वल्लैकं माध्वाज्याभ्यां लिहेत्ततः ॥९३॥

सोनामाखी, लोहा, पारा, शिलाजीत, हरड, वायविडंग, धतूरा, भाग और जावित्री ॥ ९२ ॥ इनको अलग अलग असगंध और गोखरूके रसकी भावना दे फिर उस चूर्णको घी और शहदमें मिलाकर सात दिन तक खाय, यह बाजीकरण प्रयोग है ॥ ९३ ॥

अन्य प्रयोग।

गवां विरूढवत्सानां सिद्धं पयसि पायसम् ॥
गोधूमचूर्णं च तथा सितामधुघृतान्वितम् ॥ ९४ ॥
भुक्त्वा हृष्यति जीर्णोपि दशदारान्व्रजत्यपि।
ब्रह्मचर्यं प्रकर्त्तव्य मेकविंशदिनावधि ॥ ९५ ॥

बहुत दिनकी व्याही हुई उत्तम बछडेवाली गायके दूधमे गेहूं का चून, मिश्री, शहद और घी मिलाकर खीर बनाकर खाय तौ बुड्ढा मनुष्य भी हृष्ट होकर दस स्त्रियोंसे रमण करता है परन्तु इक्कीस दिनतक ब्रह्मचर्यसे रहे अर्थात् इस अवधिमे स्त्री प्रसंग न करे

अन्य प्रयोग।

अपर्णाबीजसंयुक्त मुग्रबीज प्रकल्पयेत्।
तुल्यमुन्मत्तबीजञ्च तदर्केणैव भावितम् ॥ ९६ ॥

सतैलं भावित म्पश्चादस्य वल्लयुगन्नरः ॥
ससितं भक्षयन्कामादमणीं रमतेध्रुवम् ॥ ६७ ॥

अपर्णाके बीज, सहजनेके बीज और धतूरेके बीज इन सबको समान भाग लेकर इन्हीं वृक्षोंके रसकी भावना देकर तेल निकालले इस तेलको छ रत्तीके प्रमाण मिश्री मिलाकर खाय तौ मनुष्य निश्चय कामान्ध होकर स्त्रीसे रमण करै ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

वर्यस्तम्भन योनिदृढीकरण ।

स्वच्छवल्कं बबूलस्य निम्बूरसविभावितम् ॥
श्यामं वेदांगुल न्दुग्धे क्षाल्य न्दुग्धम्पिबेत्ततः ॥ ६८ ॥
वीर्यस्तभो भवेल्लेपाद्योनिर्गाढा प्रजायते ।

बबूलकी उत्तम छाल लेकर उसको नीबूके रसकी भावना दे फिर उसमेंसे चार अंगुलका टुकडा लेकर उसे अपने पीनेके दूधमे डालकर धोले फिर उस दूधको पीवै ॥ ६८ ॥ तौ बीर्यस्तम्भन हो और लेप करै तौ योनि दृढ हो ।

वीर्यस्तम्भन ।

बब्बलर्कं सलवणं पीत्वा तद्वेगरोधनात् ॥ ६९ ॥

बबूला का अर्क नमक डालकर पीवे और उसके वेगको रोकै तौ वीर्यस्तम्भन हो ॥ ६९ ॥

योनि सुगन्धी करण ।

वेतवयर्केण बहुशो गन्धः पाषाणधूपितो दशधा ।

तद्भुक्तालिंगभोगाद्योनिर्लिङ्गः सुगंधिः स्यात् ॥१००॥
इतिलङ्कानाथकृतार्कचिकित्सायां क्षुद्ररोगादि
निवारणं शतकंसमाप्तम् ॥७॥

केतकीके अर्क और दशाङ्ग धूपसे सुवासित किये हुए गंधकको लिङ्ग पर लेपकर मैथुनमें प्रवृति हो तो लिङ्ग और योनि दोनों सुगन्धित होजाते है ॥ १०० ॥

इति श्रीरावण- विरचितेऽर्कप्रकाशे मथुरानिवासि-
श्रीकृष्ण-लालकृत-भाषाटीकयालंकृत
सप्तमं शतकं समाप्तम् ॥७॥

अष्टमं शतकम् ।

आकर्षण विधि ।

हंसपदी जटारं गोरोचना टंकमेव च ।
स्वार्कक्लिन्नस्तदर्कस्तु नार्य्या वै सारिवा तथा ॥१॥
भोज्ये पाने प्रदातव्य उन्माद्यो भूतगन्धया ।
भोज्ये पाने येन दत्तः प्रेष्ठस्तेनवशीकृतः ॥ २ ॥
खवल्लिदलपुष्पजार्कः सप्तहं वासितः स्त्रियै देयः ।
एं विधिना हितया पुंसैदत्तो जगद्वशकृत् ॥ ३ ॥
सार्द्धं मरण्यरजन्या तिभुंक्तः स्वान्तसाधितोविजने ।

सकृज्जमहीमुग्ल्लनावशीकरं नागतुल्ये मे ॥४॥
प्रस्थापिता पितृस्थाने एनमर्कम्पवेत्तु या ।
ससेवितोनखाहे न वशीकरणसिद्धिदः ॥ ५ ॥
वामिनो र्पिथुनं ग्राह्यं वियोगन्तस्य कारयेत् ।
स्मरनेत्राग्निना दाह्यगापीडं दृढवन्धनम् ॥
एवन्तम्पुरुषन्नत्वा तस्यै नार्य्यै समर्पयेत् ।
ब्रह्मासन ङ्कृतो वापि तत्त्यक्त्वास्याः प्रियो भवेत्॥७।
आधेयोऽर्कस्तु साध्योऽसावाधारोऽर्कश्च साधकः ।
पीत्वा कर्षयने घस्त्रै स्चतुर्भिश्चतुरां स्त्रियम् ॥ ८ ॥
ओंतागाय कृष्णाय त्रिनेत्रायईन्नताय ।
आन्ध्याय नम ष्ठ ठः स्वाहा इति मन्त्र ॥ ९ ॥
मंत्रो ह्ययं समुच्चार्यो जपसंख्याक्रमेण वै ।
पञ्चसंख्याप्रजापेन समाकर्षयते ध्रुवम् ॥ १० ॥

रावण कहने लगाकि हे प्रिये ! हंसपादी की जड़ लालचन्दन, गोरोचन और सुहागा इन सबको इनहींके रसमे भिगोकर अर्क निकालै और फिर उस अर्कको अनन्त मूलके साथ स्त्रीको खाने पोने मे दे और यह उन्मत्त रस भूतगन्धा (कपूर कचरी के साथ जिसने भोजन और पानमे अपने पतिको दिया उसने निश्चय उसको अपने वशीभूत कर लिया ॥ १ ॥ २ ॥ और इसी भूतगन्धाको आकाश वेलके पत्रों और फूलोंके अर्कमे सात दिनतक भिगोकर जिस स्त्रीको पुरुषने पिलाया अथवा इसी प्रकार स्त्रीने पुरुषको पिलाया तो उन

दोनोंने जगत् को बशीभूत कर लिया ॥ और जो कोई एकान्तस्थान इस उनमाद्य अर्कको बनाकर तीन दिन तक वन हल्दीके साथ खाता है, हे नागतुल्ये ! वह सम्पूर्ण पृथ्वी के राजा और रानीको बशीभूत कर लेता है ॥ ४ ॥ जो स्त्री अपने पिताके स्थान पर जाकर इस उन्माद्य अर्कको बीस दिन तक नियम पूर्वक पीती है वह सबको बशमें कर सकती है क्योंकि यह अर्क बशीकरणका सिद्ध करनेवाला है ॥ ५ ॥ मदिरा पान करनेवाले स्त्री पुरुषोंके जोडका वियोग कराकर उनको एक दूसरेके सामने इस प्रकार बिठावे कि एक दूसरेको देखकर उनकी कामाग्नि भडका करे, और जबतक उनकी कामाग्नि अधिक न भडके तब तक उनको बन्धनमें रक्खे ॥ ६ ॥ फिर उस पुरुषको उस स्त्रीको सोप देवै तौ इस प्रयोगके समाप्त होने पर यदि ब्रह्मासन पर बैठा हो तो उसको भी छोडकर उसीके बशीभूत हो जाय ॥ ७ ॥ साध्य अर्क आधेय है और जो साधक अर्क है वह आधार है, इस अर्कको यदि कोई नियमपूर्वक चार दिन तक पीवै तौ परम चतुर स्त्रीको बशमें करले ॥ ८ ॥ ओकृष्णाय ताराय इत्यादि मूलमें लिखे हुए मन्त्रका पाच सहस्र जप करै तौ निश्चय आकर्षण होता है ॥ ९ ॥ १० ॥

विद्वेषण विधि ।

अहोरात्र्यन्धपंगूनां केशांस्तद्वाहनस्य वा ।
निखनेन्निर्गमद्वारि तदर्क दिक्षुविन्यसेत् ॥ ११ ॥
वक्ष्यमाण महामन्त्रं जपेत्पूर्वविधानतः ।

विद्वेषस्तु प्रजायेत त्रिदिनान्नात्र संशयः ॥१२ ॥
हयारिहथयो रक्तघृतैर्निर्माय कज्जलम् ।
अञ्जित्वा नयनेतेन यम्पश्येद्द्वेषणो भवेत् ॥ १३ ॥
तारोहं डामरायेति ईश्वरायामुकेन च ।
सहद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा ठष्टो ह्ययम्मनुः ॥ १४ ॥
आभ्यन्तरबहिः शुद्धिर्ब्रह्मचर्य्यं यथोदितम् ।
अल्पाहारश्चाल्पनिद्रा नियमः सर्वसिद्धिषु ॥ १५ ॥
महादेवाभरणकन्तत्सुतांश्च लघीयसः ।
क्षिप्त्वा चाहिवरच्छिद्रे मासमात्रं समुद्धरेत् ॥ १६ ॥
साध्यस्य निखनेद्द्वारि किंचिच्चैवं तथा पुनः ।
अग्निकोणाद्वायुकोणे क्षिपेदेतत्समुच्चरेत् ॥ १७ ॥
बलिं गृह्णन्त्विमेभूताः स्थानस्थाः सर्व एव हि ।
उच्चाटयन्तु सर्वेऽपि रिपुमेतमहात्रिकात् ॥ १८ ॥
तारो नमो भगवते डामरेश्वर मूर्त्तये ।
उच्चाटयेति मंत्रेण कार्य्यसिद्धिरुदाहृता ॥ १९ ॥
ब्रह्मचर्य्यादिनियमानुधारयेद्विधिपूर्वकम् ।
जपेच्च गुरुमार्गेण दीक्षतो मन्त्र सिद्धिदम् ॥ २० ॥

उल्लू रात्र्यंध (जिसको रात्रिमे न दीखता हो) और पगू (पागला) इनके बाल अथवा उसके बाहन (सवारी) अश्व आदिकी खोपडीके बाल साध्यके निकलनेके द्वारमें गाढ़ देवै और उनमाद्य अर्क जिसको ऊपर लिख चुके है उसके चारो ओर छिडक

दे ॥ ११ ॥ यदि कोई मनुष्य वद्यमाण (जो आगे कहा जायगा) मंत्रको पहले कही हुई विधिसे जपै तो तीन दिनमें विद्वेष होजाता है इसमें सन्देह नहीं है ॥ १२ ॥ घोड़ा और भैंसाके रुधिरमें घी मिलाकर गीदडकी खोपडीपर काजल पारे, उस काजलको नेत्रोंमें आजकर जिसकी ओर देखे वही विद्वेषी हो ॥१३॥ उसका उद्धार इस प्रकार है. ओं नमो डामराय ईश्वरायामुकेन सह द्वेषं कुरु ठः ठ स्वाहा ॥ १४ ॥ योगमार्गकी रीतिसे हृदयके भीतर वाहरकी शुद्धि, धर्मशास्त्रकी विधिसे कहा हुआ यथावत् ब्रह्मचर्य्य धर्म और लघु भोजन, लघु निद्रा. इस नियम पूर्ण विधान होनेपर भी गुरुमुखसे हुआ मंत्र जाप जय तप ईश्वरकी इच्छासे कार्य सिद्धि हो ॥ १५ ॥ शिवभूषण (साप) और उनके बच्चे इनको शत्रुके लिये मारकर सर्प्प ही के विलमें गाडदे, फिर उसमे से एकको निकालै ॥ १६ ॥ फिर उसको कुछतो साध्य के निकलनेके द्वारेमे गाडदे और उसमें से कुछ लेकर अग्निकोणसे वायव्य कोणकी ओर वगेलै और उस समय मुखसे यह वचन कहै ॥१७॥ इस स्थानके रहने वाले भूतो ! तुम सव इस बलिदानको ग्रहण करो और इस मेरे शत्रुको तीनही दिनमें उच्चाटन करो ॥१८॥ मन्त्रका उद्धार इस प्रकार है, 'ओं नमो भगवते डामरेश्वरमूर्तये, अमुकमुचाटयोच्चाटय, इस मन्त्रसे यहा कार्य सिद्ध करे ॥ १९ ॥ स्मृतिकी रीतिसे कहे हुए ब्रह्मचर्य्यादि नियमोंको विधि पूर्वक धारण करे. गुरुमार्गकी रीतिसे मन्त्रको सीखकर जपे इतने पर भी जब दैवानुकूल होय तो मन्त्रकी सिद्धि वने है ॥२०॥

स्तम्भनविधि ।

अग्निपराण्डवल्ली शिखरी सिद्धार्थमार्कवञ्चैव ।
श्वेतावर्चैषामर्कं पीत्वा तेनैव घर्षं येल्लोहम् ॥२१॥
पात्रे तच्चन्दनसमं द्विदिनान्ते समुद्धरेत् ।
तिलके सर्वशत्रूणां बुद्धिस्तम्भकरम्परम् ॥२२ ॥
तारो नमः भगवते विश्वामित्राय वै नमः ।
चतुर्दशाक्षरो मन्त्र सिद्धोऽस्मिन्कर्म्मणिस्मृतः ॥२३॥
यवना कस्तु संदिनश्च हरितालेन वेष्ठयेत् ।
ताम्रपात्रे पुनर्वेष्टंच मुखस्थं सर्वशत्रुहृत् ॥ २४ ॥
पीत्वादा कृकलासार्कयों चामुण्डे भवेति च ।
जायत वारुणो मन्त्रों चतुरे कादशाक्षरः ॥ २५ ॥

पुरानी आकाशवेल, चिरचिट, सरसों, भागरा, श्वेतत्वच इन सबका अर्क निकालकर पहिले आप पिये, फिर उसी रसमे लोहेको विसे ॥ २१ ॥ जब वह चन्दनकी सदृश होजाय तब दो दिन उपरान्त उसको पात्रमे उतारले उसका तिलक माथेपर लगानेसे सम्पूर्ण शत्रुओंकी बुद्धिका स्तम्भन होजाता है ॥२२॥ तार अर्थात् मन्त्रका उद्धार इस प्रकार है, 'ओ नमो भगवते विश्वामित्राय नम.' इस चौदह अक्षरके मन्त्रकी इस अर्कमें सिद्धि है इस मन्त्रको एकाग्रचित्त से पढै तो यह अर्क पूर्ण स्तम्भन करने वाला है ॥ २३ ॥ अथवा मूल सहित प्याज वा लहसनका अर्क हरितालके साथ ताबेके बरतन में घिसकर उसको मुखमे रक्खै तो सारे शत्रुओं को पराजय करै ॥

॥२४॥ परन्तु प्रथम कुकला (पीपल) का अर्क पीकर फिर "ओं नमः चामुण्डाय नमोनमः भवाय" इस प्रकार यह एकादशाक्षर वा आरुण मन्त्र होता है ॥२५॥

अथ कौतुक विधि ।

भैंसेका रूप दीखना ।

लिखेत्पद्मन वच्चित्र महिषक्षतजेन च ।
दर्पणे तेन सम्मृष्टेऽवलोकेन्महिषा कृतिम् ॥ २६ ॥

भैंसाके रक्तसे कोई पुष्पाकार चित्र दर्पणपर लिखै और फिर उसी रक्तसे दर्पणको स्वच्छ करके अपना मुख देखे तो भैंसेकी सूरत दिखाई देती है ॥२६॥

गधा घोडा आदिका रूप दीखना ।

ज्वालामुख्य म्लयोरर्कैर्महिषक्षतजेन च ।
सम्मार्ज्य दर्पणम्पश्येत् खराश्वोस्ट्र स्वरूपकम् ॥२७॥

ज्वालामुखी और अमलवेतके अर्क और भैंसेके रुधिरसे दर्पण को माजकर मनुष्य उसमें अपना मुख देखे तौ गधा घोडा और ऊँटका सा स्वरूप दिखलाई देगा ॥२७॥

पूर्वजन्मका रूप दीखना ।

गोदुग्ध्यर्कैञ्जनम्पुष्पे सेन्द्रजोलिककज्जलैः ।
दर्पणे दृश्यते रूपं पूर्वजन्ममसमुद्भवम् ॥ २८ ॥

दूधीके अर्कमें फूल भिगोकर इनके इन्द्रजाल रूपी कज्जल से दर्पणको माजकर मनुष्य अपना मुख देखेतौ उसे अपने पूर्वजन्मका स्वरूप दिखलाई देगा ॥२८॥

नार्या जरायु धूपेन चित्रमुक्तम्परोहति ।
पुनर्माहिषधूपेन योगात्स्वस्थम्भवेद्ध्रुवम् ॥ २९ ॥
नस्येञ्जने तदातेन कृतभ्रान्ति निवारणम् ।
तत्तुल्या गर्भशय्यायां धूपद्भिन्ना न दृश्यते ॥३०॥
प्रकटत्वमणायाति स्वर्णमाहिषधूपतः ॥ ३१ ॥

स्त्रीके जरायु (नाल) को धूप देनेसे पहिले कहा हुआ चित्र प्ररोहण नाम उठे अर्थात् हंसने लगे फिर भैंसे की धूप स्वस्थ होवै अर्थात् जैसे का तैसा होजाय ॥ २९ ॥ उसीको सूघनेसे अथवा ऑजने से की हुई भ्राति मिटती है और उसीकी गर्भशय्यापर धूप देवै तो स्त्री पुरुप मिले हुए दिखलाई देते हैं ॥३०॥ फिर स्वर्ण माहिष धूपके देनेसे दोनों स्त्री पुरुष अलग अलग दिखलाई देते हैं॥

इति कौतुक बिधि ।

मारण विधि ।

हलाहलं वत्सनाभं लांगली चित्रमूलकम् ॥
श्वादजां चोर्णनाभिं च श्वेता च गृहगोधिका ॥ ३२ ॥
एतदर्केण वस्त्राणि लिप्त्वा यः परिधारयेत् ।
विमुक्तर्णतथैवंवैजायतेऽसौ यमातिथिः ॥३३॥
गोपालादस्योरसस्तुयत्नादर्कं समुद्धरेत् ।
पुनर्हालाहलार्केण भावितं तच्च मेलयेत् ॥ ३४ ॥
महारसश्च देयोऽसौ मालत्यर्कानुपानतः ।
पथ्र्यासि मेकं रमते रमणीभिर्भुनक्ति च ॥ ३५ ॥

कृष्णभोरस्त्राद्भावितस्य धूपो यस्मै प्रदीयते ।
सम्मोहन मवाप्नोति नरो वा नरवाहनः ॥ ४३ ॥
धत्तूरकस्य बीजानामर्कैणैव विभावितम् ।
हरितालकन्तु दशधा भक्षणात्सर्वमोहकृत ॥ ४४ ॥
गुरुहेली कामफली काकोदुम्बरि भूफली ।
कन्याकुमारमूत्रेण सप्तवारेण भावयेत् ॥ ४५ ॥
शोषयित्वातत: पिष्ट्वा धत्तूरार्केण गोलिकाम् ।
विधायतिलकनैव मोहयेद्भुवनत्रयम ॥ ४६ ॥

काले धतूरे का पचाङ्ग अर्थात् जड, छाल बीज फूल, और पत्ते तथा कालासर्प इनका धूप जिसको दीजाय वह मनुष्य हो अथवा उसका वाहनहो मोहितहो जाता है ॥४२॥ ४३॥ धतूरेके बीजो के अर्कमे हरतालको दसवार भावना देकर उसे जिसको खिलावै वही मोहितहो जाय ॥ ४४ ॥ गुरुहेली, कामफली (ये दोनों अप्रसिद्ध है) काकोदुम्बरि (कठूमर), और भूफली इनको अविवाहित लडका और लडकी के मूत्रकी सात भावना दे । ।४५।। और फिर इसको सुखाकर धतूरे के अर्कमें पीसकर गोली बनाले और उस गोलीको घिसकर जो मनुष्य मस्तक पर तिलक लगावै वह तीनो लोकों को मोहित करले ॥४६॥

इति मोहनम् ।

अग्निस्तम्भन विधि ।

रक्तपामेकशाशिजपाटलार्को जलरुग्रले ।

कृत्वाऽथ पातयेत्तैलं यथोक्तविधिना ततः ॥४७॥
एतत्तैलस्य यो लेपं कारयेत्करपादयोः ।
अङ्गाराणामुपरि च नरो भ्रमति भूमिवत् ॥४८॥
सरव्येक्षुभव पीत्वा चर्वयेत्तगरं वचाम् ।
तप्त लोहं लिहेत्पश्चात्काचिद्धानिर्न जायते॥ ४९ ॥
उच्चटाया रसेनैव सर्वाङ्गे लेपमाचरेत् ।
अङ्गाराग्नि मध्ये तु भ्रममाणो न पीड्यते॥ ५० ॥
तारश्च वज्रकस्यान्ते अमृतं कुरुयुग्मकम् ।
स्वाहान्तस्थित वर्णोऽयमग्निस्तम्भेनियोजयेत् ॥५१॥

जोक, मेंढक, कुमोदिनी और पाढल इनके अर्कसे नीचे जलका पात्र रखकर इसका तेल यन्त्र द्वारा विधि पूर्वक निकालले ॥ ४७ ॥ इस तेलका हाथ पावमें लेप करै तौ मनुष्य अगारों पर ऐसे घूमसकता है मानो भूमिपर चलता है ।४८॥ अथवा घीके साथ ईख का रस पीकर ऊपरसे तगर और बच चबाले फिर गरम लोहको चाटै तौ कुछभी हानि नहीं होती ॥४९॥ अथवा उटङ्गनके रससे सब शरीर लेपकर, अग्निमें भ्रमण करै तो भी उसको कुछ पीडा नहीं होती है। ५०॥ मन्त्रका उद्धार इस प्रकार है, "ओ तारकेश्वर वज्रस्य अमृतं कुरु२ स्वाहा" इस पन्द्रह अक्षरके मन्त्रका अग्निस्तम्भन कर्ममें विनियोग करे ॥ ५१ ॥

॥ इत्यग्निस्तम्भनम् ॥

अथ जल स्तम्भनम् ।

सर्पाक्ष्यास्यस्य रक्तन्तु सूर्य्ये चन्द्रातपेधृतम् ।

सुखेन जलमध्येऽसौ पर्यटेन्निजगेहवत् ॥५२॥
श्वेता मूलं कुसुम्भस्य रसेन परिपेषितम् ।
तेनैव रञ्जयेद्वस्त्रन्तेनाङ्गम्परिवेष्टयेत् ॥५३॥
गम्भीरजलमध्येऽपि यावदिच्छं स तिष्ठतु ।
जलस्तम्भस्य सिद्धिस्तु भवेन्मत्स्यार्कभक्षणात् ॥
भैरवीयकपालस्य चूर्णश्लेष्मान्तकम्फनम् ।
पिष्ट्वा तेनाजिनं लिप्त्वा घनन्द्व्यंगुलमानतः॥५५॥
तच्छुष्कन्निक्षिपेत्तोये तडागे वा नदी तटे ।
तस्योपरि स्थितो योऽसौ न कदाचिन्निमज्जति॥५६॥

सर्पके नेत्र और मुखके रुधिरको सूर्यकी धूप और चन्द्रमाकी चादनीमे रक्खै जब वह सूख जाय तब उसको अपने पास रखकर जलमे घरकी समान सुखपूर्वक फिरा करै ॥५२॥ सफेद चिरमिटीके जडको कुसूमके रसमें पीसकर उसमें कपडेको रंगे, फिर उस कपडे से शरीरको ढकै ॥५३॥ तौ वह महागम्भीर जलमें भी जबतक चाहै ठहर सक्ता है, और जलस्तम्भनकी सिद्धि तौ मछली के अर्क भक्षणसे ही होसकती है ॥५४॥ मनुष्यकी खोपडी का चूरा, और ल्हिसौडा इनको पीसकर चमडेके ऊपर दो अंगुल मोटा लेप करै ॥ ५५ ॥ फिर उसको सुखाकर तालाब अथवा नदीके जलमे डालदे और उसपर बैठकर पानीके ऊपर फिरता रहै कभी नहीं डूबेगा॥५६

इति जलस्तम्भनम् ।

अथ उन्मत्त करणम् ।

ऊर्णनाभिश्च षड्बिन्दुः समांगः कृष्णकण्टकी ।

भावयेदेतदर्केण शत्रु गात्रे विनिक्षिपेत् ॥५७॥
स्फोटा भवन्ति सप्ताहान्म्रियते च तया रुजा ।
इन्दीवरमयूराणां पिच्छलेपात्सुखी भवेत् ॥५८॥
याम्यभौमे मृतोयस्तु तद्भस्मादाय रञ्जयेत् ॥
वैरिवर्चस्कसंयुक्तं शरावैः सम्पुटी कृतम् ॥५९॥
मृतकेशैस्तदावेष्ट्य शून्यागारे परित्यजेत् ।
यावच्छुष्यति सा विष्ठा तावच्छत्रुर्म्मृतो भवेत् ॥६०
तारो नमो भगवते ॐ डामरेश्वराय च ।
अमुकम्मारय २ ठ ठ एनम्मन्त्रमुदीरयेत् ॥६१॥
भावितान्धूर्त्तजार्केण भक्ष्ये पाने प्रदीयते ।
उन्मत्तो जायते स्वस्थः सितागोदुग्धपानतः ॥६२॥
लवङ्गुखी रुद्राहारः कण्टकी कण्टकैः समम् ।
वृकविष्ठांसमादाय दाक्षिणांशासमुद्भवाम् ॥६३॥
विसृजेच्छयने यस्य सद्यश्शत्रोरपस्मृतिः ।
क्षीरसंघृष्टमुण्डस्य शय्यात्यागेऽप्यपस्मृतिः ॥ ६४ ॥

ऊर्णनाभि (मकड़ी) और षड्बिन्दु (बिच्छु) इनको बराबरले काली कटेरीके अर्कमें भिगोवै, फिर उसे शत्रुके शरीर पर छिडकदे ॥५७॥ तौ शत्रुके शरीरमें सातवेंदिन फोडे निकल आवेगे जिनकी वेदना से वह मरजायगा और जो नीले कमल और पंखो का लेप करदे तौ उसको आराम होजायगा ॥ ५८ ॥ जो भरणी

नक्षत्रमें मंगलवारको मराहो उसकी भस्म लाकर यत्नपूर्वक रक्खे और उसमें बैरी की विष्ठा मिलाकर शराव सम्पुट कर ॥ ५८ ॥ ऊपर से मृतक के बालों से लपेट दे और किसी निर्जन मकान में उसको रखदे जबतक विष्ठा सूखैगी तबतक शत्रु मरजावैगा ॥ ६० ॥ " ओ नमो भगवते डामरेश्वराय तारायामुक मारय मारय ठः ठः" इस मन्त्रका इस कार्यमें यथोचित रीति से जप करै ॥ ६१ ॥ और उस भस्मको धतूरेके अर्कमें भिगोकर खान पान में दे तो उन्मत्त होजाय और मिश्री और गायका दूध पिलावै तौ स्वस्थ होजाय ॥६२॥ नागदौन,रुद्रहार और कटेरी कांटों सहित इनको जमाल गोटे के अर्क में भिगावै और उसमें हरताल भिगोवे और फिर इनसे धूप देवै तौ शत्रु उन्मत्त होजाय और फिर कालो जीरी के धूएँ से सुखी होवे ॥६३॥ दक्षिण दिशामें पडी हुई भेडियाकी विष्ठा लेकर शत्रुके सैनेके स्थान में डाल देवे तो तत्काल शत्रुको अपस्मृति हो और जो खोपडी को दूधमें घिसकर शय्यापर डाल देवै तौ भी अपस्मृति हो ॥६५॥

इति उन्मत्तकरणम् ।

दूर देश गमनम् ।

शरपुंखी कोकिलाक्षः काकजङ्घा च भृंगकः ।
एतदर्कश्चित्रकेण पुष्येऽर्के ज्येष्ठयोद्धरेत् ॥ ६५॥
पीत्वा तदर्कमेतेषां मूलैस्तु कटिबन्धनम् ।

वायुवद्भ्रमते पृथ्वीम्प्रयासेनविवर्जितः ॥६६॥
विशदाकाक जङ्घा च तथा कामफलानि च ।
कृष्णायाः सुरभेर्दुग्धं पत्रवृक्षस्य वल्कलम् ॥६१॥
एतेषाम्पादलेपेन योजनानां शतं व्रजेत् ।
श्वेतार्कस्य च मूलन्तु शुक्लवंशस्य रोचना ॥६८॥
अजाया नवनीतेन पुष्यनक्षत्रपाचितैः ॥
लेपेन पादतलयोर्व्रजेत्कामितमार्गकम् ॥६९॥

सरफोका, तालमखाना, काकजंघा, और भांगरा इनका अर्क चीते के साथ पुष्य नक्षत्र पर सूर्य आवै जब अथवा ज्येष्ठा नक्षत्र मे निकाल ॥ ६५ ॥ इनका अर्क पीकर इन्हीं की जडको कमर मे बाधे तो पृथ्वी पर बिना प्रयास पवन के समान फिरता है ॥६६॥ सफेद काकजघा, कामफल, काली गायका दूध और तेजपातकी छाल ॥ ६७ ॥ इनको पीसकर पांवों में लेप करे तो मनुष्य सौयोजन तक गमन कर सकता है, सफेद आककी जड, सफेद बास की जड और गोरोचन ॥ ६८ ॥ इनको पुष्य नक्षत्र में बकरी के घी में पकाकर पाव के तलुओं में लेप करै तो मनुष्य जितना दूर चाहे उतनी दूर जा सकता है ॥ ६५ ॥

इति दूरदेशगमनम् ।

अथावेश विधिः ।

आमर्यकन्तु पीत्वादौ पश्चादाघ्राणमाचरेत् ।
प्रेतास्यगम्पुरन्त्वत्र धूपितञ्च चिताग्निना ॥७०॥

साज्ञनिर्य्यास धूपेन जगदावेशितम्भवेत् ।
कृष्णागुरुन्तालकञ्च कनकस्य फलानि च ।७१॥
उग्रगन्धाकुक्कुटाण्डः सकलानाम्प्रधूपनात् ।
धूपेनावेशयेत्सर्वं यावद्देहन्न संशयः ॥७२॥
मृडप्रियप्रसूनस्य पञ्चांगानि च भावयेत् ।
यमवाहनरक्तेन यावत्प्रकृति संख्यकम् ॥७३॥
तदष्टमांसधूपस्तु वत्सनाभेन संयुतः ।
चेष्टां हरति सर्वेषाम्पुरुषश्चायसाकृतिः ॥७४॥

भोरी का अर्क निकाल कर पहिले उसको पीवै, फिर सूंघे तथा मृतक के मुख में रक्खे हुए गूगलको चिताकी अग्नि पर रखकर उससे शरीर को धूनी देवे ॥ ७० ॥ फिर राल की धूनी दे तो सब जगत् बावलासा दिखलाई दे, पीपल अगर, हरताल, धतूर के फल ॥ ७१ ॥ बच और मुर्गी का अण्डा इन सबकी धूप देने से सब देहधारियो को आवेश अर्थात् बावलापन होजाता है, इसमे सन्देह नहीं है ।७२॥ शिवजी के प्यारे धतूरे के पंचाग को भैंसाके रक्त की इक्कीस भावना दे ॥७३॥ और उसका आठवा भाग लेकर तेलिया मीठे के साथ धूनी दे तो सब मनुष्य की चेष्टा बिगड जाती है और मनुष्य लोहे के समान जड होता है ॥७४॥

इत्यावेश. ।

सम्भोगसन्धिः ।

सद्यो मृतस्य ग्रीवार्कक्लिन्नवस्त्र करीरके ।

दृढीकृतं तु कीलेन शय्यायाम्परिधारयेत् ॥ ७५ ॥
युक्तावेतौ प्रजायेतान्तदा नारी नरौभृशम् ।
वंशाद्वस्त्रस्य मोचेणमुक्तिः स्याच्च तदा तयोः ॥७६॥
समुद्रगामिनी नदी तदीयतीरमृत्तिकाम् ।
श्वकेशमस्यरेत सा सुरञ्जयेत्ततोनरः ॥ ७७ ॥
एतस्य वटिकां कृत्वाकोलमात्रान्ददेतयः ।
सर्वाऽमनानामबन्धस्तु मोक्षोऽस्यार्कस्य पानतः ।

हालके मरे हुए मुर्देके कण्ठका अर्क निकालकर उसमे वस्त्र भिगोकर उस वस्त्रको बासमें कीलसे गाढकर शय्यापर रखदे॥५७॥ तौ दोनों स्त्री-पुरुष आपस में जुडजाते हैं और जब बासमें से कपडा निकाल लिया जायगा तब दोनो अलग २ हो जायेगे ॥७६॥ जो नदी समुद्रमें गिरती हो उसके किनार की मिट्टी लावे और कुत्तेके बाल उसीके वीर्यमें रंगकर ॥ ७७ ॥ उस मिट्टीमें मिलाकर बेरकी बराबर गोली बनाले और जिसको दे उसका आसन बंधजावै और जब इसका अर्क पीवै तब मुक्त हो ॥७८॥

इति सम्भोगसन्धिः ।

अथ क्षुधावर्द्धनम् ।

अग्न्यर्कन्तु समाकृष्य पिबेत्पश्चाद्भुजिञ्चरेत् ।
बृन्तार्कमर्कपुष्पस्य पीत्वा पीठे निषिच्य च ॥ ७९ ॥
सोऽति भुङ्क्ते घृतैः सार्द्धं वह्वन्नभीमसेनवत् ।
गृहीत्वा मन्त्यसायन्तु बिभीततरुपल्लवान् ॥८०॥

आक्रम्य दक्षजंघायां विंशत्याहारभुग्भवेत् ।
अर्कमामन्त्र्य सन्ध्यायां शतपुष्पस्य मालिकाम् ॥८१
शीर्षे भद्गुद्वा कृपणतान्त्यक्त्वा भीमवदत्त्यसौ ।

जो मनुष्य चीतेका अर्क निकालकर उसे पीवे फिर कुछ देर पश्चात् भोजन करै अथवा आकके फूलोंके भीतर जो गुन्द होते हैं उनका अर्क निकालकर पीवे और कुछ आसनके नीचे छिडकै ॥ ७९॥ तौ वह पुरुष भीमसेन के समान भोजन करने वाला होताहै सायंकाल के समय वहेडेके वृक्षको निमन्त्रण दे आवै और फिर प्रातःकाल उसके पत्ते ले आवै ॥८०॥ और उनको दाहिनी जंघा के नीचे दवाकर भोजन करने बैठेतौ बीस मनुष्यों के बराबर भोजन कर सकता है संध्याके समय आकके वृक्षको निमन्त्रण दे आवै और प्रातःकाल उसके सौ फूल लावै और उनकी माला बनाकर ॥८१॥ सिरपर बाधे तौ वह मनुष्य कृपणताको छोडकर भीमसेन के समान भोजन करता है । इस प्रकार बहुत भोजन करने का प्रकार कहा गया इसका उद्धार यहहै. ओ नमस्ताराय सर्वभूताधिपतये ममग्रासं शोषय शोषय स्वाहा इस मन्त्रको पूर्वोक्त विधिसे नियम पूर्वक जपै तौ निश्चय कार्य सिद्धिहो ।

इति बह्वाहार प्रयोग ।

अथ क्षुधानिवारण विधि ।

गणेशप्रियमूलन्तु तुरंगाह्वश्च मूलकम् ॥ ८२ ॥
नीलोत्पलस्य मूलानि कसेरुश्चापि पाचयेत् ।

तत्पायसञ्च सत्तृतम्भुक्तं मासं क्षुधापहम् ॥ ८३ ॥
उदुम्बरशमीजम्बुवीजम्मूल शरीषजम् ।
बीजन्तुचूर्णितम्भुक्तम्मासार्द्धं क्षुधृषापहम् ॥ ८४ ॥
कोकिलाक्षस्य वीजन्तु महिषीदुग्धक्षौद्रयुक् ।
द्वादशाहं क्षुधां हन्यादेतदर्कोन संशयः ॥८५॥

गणेशप्रिय अर्थात् मूषाकर्णी, असगन्ध, मूली ॥८२॥ नील-कमलकी जड और कसेरू इन सबको पकाकर खीर बनाकर घृतके साथ भोजन करै तौ एक महीनाभर तक भूख न लगे ॥ ८३ ॥ गूलर, छोंकर, जामन, मूली और सिरसके बीज इनका चूर्ण बनाकर खाय तौ पन्द्रह दिन तक भूख और प्यास कुछ न लगै॥८४॥ तालमखाने के बीजों का अर्क निकालकर उसमें भैसका दूध और शहद मिलाकर पीवै तौ बारह दिनतक भूख नही लगती है, इसमें सन्देह नहीं है ॥ ८५ ॥

अथ चौर्यम् ।

टङ्कलोहाश्मरीभेदजातार्केण निषेचयेत् ।
सहस्रधा तु तत्पत्रेमन्त्रमेतं लिखेन्नरः ॥ ८६ ॥
पिशाचिनिनमस्तारे चोरिणीति पदन्तथा ।
नखाचरो मनुष्यम्भीतिकुष्ठाभ्रभेदकः ॥ ८७ ॥
एतत्प्रभावतः कोऽपि मेघशब्दं शृणोति न ।
योगनिद्रे विष्णुमाये सर्व्वान्निद्रय निद्रय ॥ ८८ ॥

नरस्त्विमंजपेन्मन्त्रं विंशद्वर्णमनुत्तमम् ।
विश्वोपकुल्यागुडयोर्वलेर्निद्रयते जगत् ॥ ८९॥
पीत्वादौ बृद्धदार्वर्कन्धत्तूरञ्जलभावितम् ।
मासमञ्ज्या त्तेननेत्रेजिताक्षो निशि पश्यति ॥९०॥
तारो नमो ब्रह्मवेषम्परिरक्षद्विष्ठम्मनुः ।
मन्त्रक्षरमिमंसिद्ध्यै पंचांगविधिना जपेत् ॥ ९१ ॥

सुहागा, लोहा और पाषाणभेद इनका अर्क निकालकर उससे पत्तेको सहस्रवार सींचकर फिर उसपर आगे लिखा हुआ मन्त्र लिखे ॥ ८६ ॥ मन्त्र यह है "ओं नमस्ते चोरिणि पिशाचिनि ताराशमाय शमय स्वाहा" यह वीस अक्षरका मन्त्र भय और कुष्ठ आदिका नाश करने वाला है ॥ ८७ ॥ इस मन्त्रके प्रभावसे यदि मेघ गर्ज रहाहो तौ भी सुनाई नहीं देता:-ओं नमो योगनिद्रे विष्णु. माये सर्वान् निद्रय निद्रय स्वाहा" ॥८८॥ मनुष्य इस वीस अक्षरके अनुपम मन्त्रका जप करै अथवा गुड और पीपलकी बलि दे तो सम्पूर्ण जगत्को निद्रित करताहै ॥ ८९ ॥ पहिले विधायरे का अर्क पीकर फिर धतूरेको जलमे भिगोकर उसे महिनेभर तक नेत्रों में आजे तौ जिताक्ष होकर दिनके समान रात्रिमे देखे ॥९०॥ और ओं नमस्ताराय वेषं रक्ष रक्ष ठः ठः स्वाहा " इस चौदह अक्षरके मन्त्रको पचाग विधि पूर्वक अर्थात् ब्रह्मचर्यादि नियमसे जपै तौ कार्य सिद्धि हो ॥९१॥

चोर भय निवारण विधि ।

गृहीत्वा सप्त पाषाणान्कट्याम्बध्वाव्रजेत्ततः ।
मुष्टावादाय दुःस्पर्शां लिप्त्वार्कम्पादयोस्ततः ॥९२॥
धत्तूरार्कम्पिबेच्छीघ्रं विक्षेपो जातये क्षणात् ।
कुर्व्वन्ति स्वेषु कलहञ्चौराणां स्तम्भने क्षमः ॥९३॥
चौरभीत्याङ्कठिल्लास्य ब्रह्मलब्धवरस्य च ।
तेषाञ्चौरभयन्नास्ति ये स्मरान्त च नित्यशः ॥९४॥

छोटे २ कङ्करोंके बराबर पत्थरके सात टुकडे लेकर उनको कमरसे बांधकर और मुट्ठीमें भटकटैया को लेकर तथा उसीका अर्क पावों में लगाकर चाहै जहा चलाजाय, जहा जायगा वहीं कार्य सिद्ध होगा ॥९२॥ यदि धतूरे का अर्क पीकर जाय तौ शीघ्र ही विक्षिप्त होजाय और आपस में कलह करने लगै, यह प्रयोग चोरों के रोकने में समर्थ है ॥९३॥ चोरोंके भयसे व्याकुल होकर देवता ओंने ब्रह्माजी से यह वर प्राप्त किया कि जो कोई करेलेके अर्कको अपने घरमे छिडकैगा अथवा रक्खेगा उसको चोरोंका भय नहींहोगा

इति चोरभये निवारण विधि ।

अथ कौतुकानि ।

अङ्कोलस्यतु बीजानि निक्षिप्त्वा तैलमध्यतः ।
धूपं दत्वातुतत्तैलं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ ९५ ॥
तडागे निक्षिपेत्पाश्च वीजं तत्तैलसंयुतम् ।
तत्क्षणाज्जायतेयोगिन्तडागात्कमलोद्भवः ॥ ९६ ॥

तत्तैल पामवीजे तु निक्षिपेत् विन्दुमात्रतः ।
आम्रवृक्षस्तदुत्पन्नः क्षणमात्रात्फलान्वितः ॥ ९७ ॥

अंकोल के बीजोंको तेल में डालदेवे और फिर धूप दे तो वह तेल सब सिद्धियों को देने वाला होता है ॥ ९५ ॥ जो कमल के बीजों को इस तेल में भिगोकर तालाव में डालदे तो तत्काल कमल के पेड उत्पन्न हो जाते हैं ॥ ९६ ॥ और इसी तेल की एक बूंद भी आम की गुठली पर डाल देवे तो तत्काल आमका वृक्ष उत्पन्न हो जाता है ॥९७॥

घूकविष्ठां गृहीत्वा त्वैरण्ड तैलेन पेषयेत् ।
यस्यांगे विनिक्षिपेद्बिन्दु मदृश्यो जायते नरः ॥९८॥
मातुलुङ्गस्यबीजानां तैलं ग्राह्यं प्रयत्नतः ।
लेपयेत् ताम्रपत्रेतन्मध्यान्हे च विलोकयेत् ॥९९॥
रथेन सहचाकाशे दृश्यते भास्करोध्रुवम् ।
विनामन्त्रेणसिद्धिः स्यात् सिद्धयोग उदाहृतः॥१००॥

इतिश्रीलंकेश्वररावणकृतार्कप्रकाशेचिकित्साकर्म नानाप्रकाररोगनिवारणार्थं शतकमष्टमम् ॥

उल्लू पक्षीका विष्ठा लाकर उसको अरण्ड के तेल में मिला कर जिसके अंग पर एक बूद डालदे वही अदृश्य होजाय, अर्थात् किसी को नहीं दीखे ।९८॥ बिजौरे के बीजो का यत्न पूर्वक तेल निकाल कर उसको किसी ताम्र पत्र पर लगादे और मध्यान्ह काल मे उस ताम्रपत्र को सूर्यके सन्मुख करके देखे ॥९९॥ तो आकाश

में सूर्य देवरथ समेतदिखलाई देंगे यह बिना मंत्र के सिद्ध होता है यह सिद्ध योग है ॥१००॥

इति भाषाटीकायतेऽर्कप्रकाशे

ऽष्टमशतक समाप्तम् ।

नवम शतक ।



शिरापोषक गण ।

तिलपर्णी समुद्रोत्थफलञ्च नवधा तथा ।
समुद्रे स्थितिरेवास्य शिरायाः पोषकोगणः ॥१॥

तिलपर्णी, और समुद्रफल यह नौ प्रकार का होता है और इसकी स्थिति समुद्र में है, ये दोनों शिरापोषक है (किसी २ पुस्तकें में इन औषधियोंको कानों का हितकारी कहा है) ॥१॥

वामनगण ।

ज्योतिष्मती च हेमाह्वा धत्तूरो नाग पुष्पिका ।
माक्षिकन्दारुभद्रञ्च गणोऽयं वामनः स्मृतः ॥२॥

मालकागनी, चोक, धतूरा, नागपुष्पी (नागदौन) सोनामाखी और देवदारु ये गण वमन अर्थात् वमन करान वाला है ॥ २ ॥

रंजन गण ।

चतुर्विधा हरिद्रा तु पतंगो रक्त चन्दनम् ।
नीलाकुसुम्भमञ्जिष्ठा लाक्षा मेहंदि किंशुकः ॥३॥

जलपुष्पञ्चाञ्जनञ्च विमला पारिजातकः ।
पाण्डोः फलम्बीजकश्च गणोऽयं रञ्जनः स्मृतः॥४॥

चार प्रकार की हल्दी अर्थात् हल्दी, दारु हल्दी, कपूरहल्दी, और वनहल्दी, पतंग, लालचन्दन, नील, कसूम, मजीठ, लाख, मेहदी, टेसूके फूल ॥३॥ जलपुष्प, तूतिया, सातला, कमल, परवल और विजयसार यह रञ्जन गण अर्थात् रंग देनेवाला गणहै ।

नेत्र्य गण।

रसाञ्जनन्द्विधा प्रोक्तन्त्रिफला लोध्रकद्वयम् ।
कुमारिका कुलत्था च गणोऽयन्नेत्र्यसञ्ज्ञकः॥५॥

दो प्रकारका रसौत, त्रिफला, दो प्रकारका लोध ग्वारपाठा और वनकुलथी ये नेत्र गण है अर्थात ये औषधिया नेत्रोंको हितकारी है ॥ ५ ॥

त्वच्य गण।

तैलंतु नवधा प्रोक्तं वाकुची चक्रमर्दकम् ।
स्थौणेयं पर्पटी स्पृक्का त्वच्योऽयं गण उच्यते ॥६॥

नौ प्रकारका तेल, (तिल, सरसो अण्डी, इत्यादि नौप्रकारका तेल,) बाकुची, पंवार. थूहर, पपडी और स्पृक्का (असवरग) ये त्वच्य गण है अर्थात् ये औषधिया त्वचा के लिये हितकारी है ॥५

उपविष गण।

भल्लातकं चातिविषा चतुर्द्धास्याङ्ग खाखसम् ।
करवीरं द्विधा प्रोक्तमहिफेनं द्विधा मतम् ॥ ७ ॥

धत्तूरस्तुचतुर्द्धा स्यात्द्विधा गुंजा तु निर्विषी ।
विषतिन्दुर्लांगली च गणश्चोपविषाभिधः ॥ ८ ॥

भिलावा, अतीस, चार प्रकारकी भंग, खसखस लालकनेर, सफेद कनेर, दो प्रकार की अफीम ॥ ७ ॥ चार प्रकार का धतूरा, लाल चिरमिठी, निर्विषी, कुचला और जलपीपल यह उपविष गण हैं ॥ ८ ॥

जलपुष्प गण ।

अष्टधा कमलानि स्युर्जलपी च चतुर्विधा ।
जलजीवी कुंभिका च जलपुष्पगणस्त्वयम् ॥ ९ ॥

आठ प्रकार के कमल, चार प्रकारकी जलसी, जलजीवी और जल कुम्भी ये जलपुष्प गण है ॥ ९ ॥

कन्द गण ।

आलूकमष्टधा प्रोक्तं मूलकं त्वष्टधा तथा ।
अष्टधा कदलीकन्दो गृञ्जनं द्विविधं मतम् ॥ १० ॥
हस्तकन्दश्च लशुन पलाण्डुर्द्विविधो मतः ।
अष्टधा पद्मिनीकन्दो वाराहीकन्दलक्षणः ॥११॥
केमुकं मुशलीकन्दो विदारी च कसेरुकः ।
शतावरी चाश्वगधा बृहत्पाण्डु सुदर्शनः ॥ १२ ॥
आर्द्रकं शक्रकन्दश्च कोलकन्दो नगोद्भवः ।
मौलिकन्दश्शूरणश्च ज्ञेयः कन्दगणस्त्वयम् ॥ १३ ॥

आठ प्रकारका आलू, आठ प्रकारकी मुली, आठ प्रकारका कदलीकन्द दो प्रकारकी गाजर ॥ १० ॥ हास्तिकन्द, ल्हसन, लालप्याज सफेद प्याज, आठ प्रकारकी पद्मिनी कन्द वाराही कन्द ॥ ११ ॥ केमुक कन्द, मुसली कन्द, विदारी कन्द, कसेरू कन्द, सितावर, असगन्ध, वृहत्कन्द, पाण्डु कन्द, सुदर्शन कन्द ॥ १२ ॥ अदरख, शकर कन्द कोल कन्द, पर्वत कन्द, मोलि कन्द और शूरण (जिमीकन्द) ये सब कन्द गण हैं ॥ १३ ॥

लवण गण ।

शाकंभरी च सामुद्रं चोद्भिदं विड्सुवर्चलम् ।
सैन्धवन्नीलकण्ठं च पंगु लवणमष्टधा ॥ १४ ॥

साम्भर नमक, समुद्र नमक, औद्भिद लवण, विड् नमक, संचर नमक, सेंधा नमक, काला नमक और कच नमक ये आठ प्रकार के नमक होते है यह लवण गण हैं ॥ १४ ॥

क्षार गण ।

सर्जिक्षारो यवक्षारष्टंकणं च सुवर्चिका ।
पलाशश्च शिखरी क्षारसप्तकमीरितम् ॥ १५ ॥

सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, शोरा, ढाकका खार और ओंगाका खार ये सात प्रकारके वज्रका खार क्षार हैं इनको विरेचन में प्रयोग करै ॥ १५ ॥

अम्ल गण ।

अम्लवेत स जम्बीर लुङ्गाम्लचणकाम्लकाः ।
नागरंगं तिन्तिडी च चिञ्चाफलं च निम्बुकम् ॥१६॥
चाङ्गेरी करमर्द चैव दाडिमं तथैव च ।
एषचाम्लगणः प्रोक्तो वेतसाम्य समायुतः ॥ १७ ॥

अमलवेत, जंभीरी, विजौरा, चणकाम्ल, नारंगी तिन्तडीक चिंचाफल (इमलीकाभेद), नीबू ॥ १६ ॥ चाङ्गेरी, अनार, करोदा, और वेत साम्ल यह अम्ल वर्ग है । १७ ॥

फल गण ।

आम्रंतु त्रिविध प्रोक्त द्विधाम्रातकमुच्यते ।
राजाम्रं चैव कोशाम्रं पनसस्त्रिविधो मतः ॥ १८ ॥
कदली त्वष्टधा प्रोक्ता लकुचं चिर्भिटं द्विधा ।
त्रिधा तु नारिकेर स्यात्कालिन्दं द्विविधं मतम् ॥१९॥
द्विविधं खजूरकं स्यात्पंचधा कर्कटी भवेत् ।
पूगीफलं चतुर्धा स्याद्द्विधा तालफलं भवेत् ॥२०॥
बिल्वं कपित्थनारंगंनिंदुकं स्याच्चतुर्विधम् ।
राजाम्रोऽप्यथ जम्बूश्च बदरं चक्रमर्दकः ॥ २१ ॥
द्विधा चैनानि चत्वारि विंशकं तु पियालकम् ।
क्षीरिका पद्मबीजं च माखान्नंशृङ्गाटकम्परम् ॥२२॥
परूषकं मधूकश्च दाडिमं स्याच्चतुर्विधम् ।
द्विधा गौरीफलं कोलं शृङ्गारीमिष्टबीजकम् ॥ २३ ॥

बहुवारश्च कतकं सुलेमानी वदामकः।
द्राक्षा खर्जूरिका द्वेधा वादामोऽक्षोटपीलुकम्॥२४॥
मिष्टनिम्बू फलं सेवं शिलीन्ध्रं कट्फलानि च।
आतंक्ता ताममृतफलं प्रोक्तः फलगणस्त्वयम्॥२५॥

तीन प्रकारका आम होता है दो प्रकारका आम्रातक (आमडा) राजाम्र, कोशाम्र, तीन प्रकारका पनस (कटहल) आठ प्रकारका केला, लकुच दो प्रकारकी कचारिया, तीन प्रकारका नारियल और दो प्रकारका तरबूज होता है ॥ १८ ॥ १९ ॥ खरबूजा भी दो प्रकारका है, ककडी पाच प्रकारकी होती है, सुपारी चार प्रकारकी होती है. तालफल दो प्रकारका होता है ॥ २० ॥ वेल फल कैथ, नारंगी और तेदू ये चार २ प्रकारके होते है राजाम्र जामन, बेर, और पवार ॥ २१ ॥ ये चारों दो २ प्रकारके होते हैं, चिरोंजी बीस प्रकारकी होती है, खिरनी, कमलगट्टा मखाने, सिंघाडे ॥ २२ ॥ फालसे, महुवा, और अनार ये सब चार चार प्रकारके होते हैं,गौरी फल दो प्रकारका होता है,बैर सिंघाडी,मीठाबीज ॥२३॥ ल्हिसोडा निर्मली, सुलेमानी बादाम, दाख, खिजूर बादाम, अखरोट और पीलू ये सब दो प्रकारके होते है॥२०॥ मीठानीबू सेव, शिलीन्ध्र [गोबर छाता] कायफल, आतंकोल और अमृतफल ये सब फल गण हैं। २५ ॥

शालि गण।

रक्तशालिः सकलमः पाण्डुकः शकुनाहृतः।

सुगन्धकः कर्दमको महाशालिश्च दूषकः ॥ २६ ॥
पुष्पाण्डकः पुण्डरीकस्तथा महिषमस्तकः ।
दीर्घशूकः कांचनको हायनो लोध्रपुष्पकः ॥ २७ ॥
षष्टिकोऽनङ्गमालश्च पार्वतीयश्च भिंभणः ।
हकुवाराजभोगश्च प्रोक्तः शालिगणस्त्वयम् ॥

रक्तशालि, सकलम, पाण्डुक, शकुनाहृत, सुगन्धक, कर्दमक, महाशालि, दूषक ॥ २६ ॥ पुष्पाण्डक, पुण्डरीक माहिषमस्तक, दीर्घशूक, कांचकन, हायन, लोध्र पुष्पक, ॥ २७ ॥ षष्टिक (साठी-चावल,) अनङ्ग माल, पार्वतीय, भिंभण, हाकुवा और राजभोग ये शालिगण कहा है ॥ २८ ॥

शिम्बी धान्य गण ।

त्रिधायवश्चगोधूमो मुद्गः षड्विधईरितः ।
त्रिविधः प्रोच्यतेमाषो राजमाषस्त्रिधामतः ॥ २९ ॥
मकुष्ठस्तुवरीत्रेधा निष्पावश्चमसूरकः ।
त्रिधाचणकउद्दिष्टः कलायस्त्रिविधः स्मृत ॥ ३० ॥
सर्षपस्त्रिविध. प्रोक्तः तिलस्तुत्रिविधस्स्मृतः ।
अतसीतुवरीराजीशिंबी धान्यगणस्त्वयम् ॥ ३१ ॥

तीन प्रकार के जौ, (एकजौ (२) अतियव जिसकी बड़ी नोक, रंग काला तथा लाल होता है,) तीन प्रकार के गेंहू, (गेहू, महागेंहू, मधूली जो हरित वर्ण और नोंक रहित होता है,) मूग, छः प्रकारकी (काली, हरी, पीली, सफेद, लाल, सादी), तीन

प्रकारका राजमाष, (माष, महामाष और चपल) ॥ २९ ॥ तीन प्रकारकी मोंठ, तीन प्रकारकी अरहर, तीन प्रकारका निष्पाव (राजशिम्बी, वल्लक, श्वेतशिम्बी), तीन प्रकार की मसूर (मङ्गल्यक, मङ्गल्या, मसूरिका), तीन प्रकारका चना, कलाय, सतीनक, हरेणु ऐसे तीन प्रकारकी मटर, त्रिपुण्डक ॥ ३० ॥ तीन प्रकारकी सरसों (सर्षप, राजसर्षप, गौर सर्षप), तीन प्रकारके तिल (काला सफेद और लाल), अलसी, तारा और राई यह शिम्बा अर्थात् फलीमेंसे निकलने वाले धान्यों का गण है ॥ ३१ ॥

क्षुद्रान्न गण ।

कंगुश्चतुर्विधः प्रोक्तः श्यामाकः कंगुवद्गुणः ।
कोद्रवोद्विविधः प्रोक्तो वंशबीजंशरोद्भवम् ॥ ३२ ॥
कुसुम्भबीजंनीवारः पवनश्चगवेधुका ।
यवनालेबाजरीच क्षुद्रधान्यगणस्त्वयम् ॥ ३३ ॥

चार प्रकारकी कांगनी (काली, लाल, सफेद और पीली) श्यामाक (समा), चैना, और कोदों दो २ प्रकारके, बास के बीज, सरपतेके बीज ॥ ३२ ॥ कसूमके बीज (कर्र), नीवार, पुनेग, गरहेडुआ अर्थात् स्यहुँआ, यवनाल, ज्वार और बाजरा ये क्षुद्र धान्य गण हैं ॥ ३३ ॥

पत्र शाक गण ।

द्विवास्तु कम्पोतकी द्विर्द्विर्माषस्तण्डुलीयकः
द्विधापालक्यपित्रेधा नाडिकं काल शाककम् ॥ ३४ ॥

कलम्बी च बृहल्लोणी चिञ्चुञ्चाङ्गरिचुक्रिका ।
सुनिषण्णश्चगोजिह्वा द्रोणपुष्पी पटोलकम् ॥ ३५ ॥
शतपुष्पा मेथिका च कुञ्जरातीक्ष्ण कण्टका ।
धान्यकञ्चक्रमर्दञ्च जीवन्ती काकमाचिका ॥ ३६ ॥
पर्पटः कासमर्दश्च द्विधाराजीगरी ततः ।
लिङ्गदण्डो द्विधा कोष्ठ पत्रशाकगणस्त्वयम् ॥ ३७ ॥

दो प्रकारका बथुआ, दो प्रकार की पोई, दो प्रकारका मार्ष (सफेद, तथा लाल), चौलाई, दो प्रकारका पालक, तीन प्रकार का, तीन प्रकारकी नाडी शाक, काल शाक ॥ ३४ ॥ कलम्बी, लोनिया, चिञ्चु (चेवुना) चागेरी, चूका, सुनिषण्णाक (चौपतियाशाक), गोजिव्हा (गोभी) द्रोणपुष्पी (गोमा) परवल ॥ ३५ ॥ शतपुष्पा (सौंफ) मेथी, हालो, करील धनिया, चकवड जीवन्ती, मकोय ॥ ३६ ॥ पित्तपापडा, कसौंदा दो प्रकारकी राई, दो प्रकारका लिङ्ग दण्ड, और कोष्ठ शाक यह पत्रशाक गण है ॥ ३७ ॥

पुष्प शाक गण ।

काञ्चानारो द्विधारास्ना खदिरश्शाल्मली द्विधा ।
चतुः सौभाञ्जनेऽगस्तिः पुष्पशाकगणस्त्वयम् ॥ ३८ ॥

कचनार, दो प्रकारका रास्ना, खैर, दो प्रकारका सैमर, चार प्रकारका सहजना, और अगस्तिया ये पुष्प शाक गण हैं ॥ ३८ ॥

फल शाक गण ।

द्विम्णकूष्डान्त्रिथाऽलाबूः करसीद्विश्चडिण्डिशः ।
वेल्लं वृन्ताकश्चतुः कर्कोटकीतथा ॥ ३९ ॥
त्रिधाकोशातकीबिम्बी द्विधाशिम्बीत्रिधा भवेत् ।
दाक्षिणापचधाडोडी कण्ठकारि फलन्द्विधा ॥ ४० ॥
पिण्डरकञ्च गोबिन्द न्द्विधाचैलन्तथैवच ।
श्लेष्मान्तकङ्काक तिन्दुफल शाकगणस्त्वयम् ॥४१॥

दो प्रकारका पेठा, तीन प्रकारकी लोकी (घीया), करसी, दो प्रकारके टिण्डा दो प्रकारके करेला, चार प्रकारके बेगन, दो प्रकारका ककोडा ॥ ३९ ॥ तीन प्रकारकी तुरई, तीन प्रकारका कुन्दरु, दो प्रकारकी सेम, पाच प्रकारकी दक्षिण देशमें होनेवाली डोडी, दो प्रकारकी कटेहरी, ॥ ४० ॥ पिण्डार, गोंदा, दो प्रकार का चैल फल, लिहसौडा और काकतिन्दु यह फल शाक गण है।

जाङ्गल गण ।

हरिणैण कुरङ्गर्ष्य पृषतन्यं कुशम्बराः ।
राजीवोऽपिचमुण्डीचे त्याद्याजाङ्गल संज्ञकाः ॥४२॥

हरिण, ऐण, कुरग, ऋष्य, पृषत, न्यंकु, शम्बर, राजीव और मुण्डी ये सब जंगलमें रहनेवाले जीव है. यह जागल गण है।

बिलेशय गण ।

गोधा शश भुजङ्गाखु शल्लकाद्या बिलेशयाः ।

गोह, खरगोश, सर्प, मूषक, और शल्लकी आदि बिलेशय अर्थात् बिलमे रहनेवाले जीव है ॥

गुहाशय जीव ।

सिंह व्याघ्र वृकाऋक्षा हरिद्वाद्वीपिनस्तथा ॥ ४३ ॥
बभ्रु जम्बूकमार्जारा इत्याद्याः स्युर्गुहाशयाः ।

सिंह, व्याघ्र (बघेरा) भेडिया, रीछ, चीता ॥ ४३ ॥ नौला गीदड, और विलाव आदि गुहाशय अर्थात् गुहामें रहनेवाले जीवहै.

पर्णमृग ।

वनौकाेवृक्षमार्जारो वृक्षमर्कटिकादयः ॥ ४५ ॥
एतेपर्णमृगाः प्रोक्ताः शुश्रुताद्यैर्महर्षिभिः ।

वानर, वृक्षमार्जीर, और वृक्षमर्कट आदि ॥ ४४ ॥ पर्णमृग जीव सुश्रुत आदि महर्षियोंने कहे हैं ।

विष्किर गण ।

वर्त्तकालाववर्त्तीर कपिञ्जल कतित्तिरा ॥ ४५ ॥
पादयुधः कुलिङ्गश्च चकोराद्या स्तुविष्किराः ।

बटेर, लवा बतक, तीतर, सफेद तीतर ॥ ४५ ॥ मुर्गा, गौरैया और चकोर आदि पक्षी विष्किर कहलाते है ।

प्रतुद गण ।

हारीतोधवलः पान्डुश्चित्र पक्षोवृहच्छुकः ॥ ४६ ॥
पारावतः खञ्जरीटः पिकाद्याः प्रतुदाः स्मृताः ।

हारीत, बगुला, पडक, सारस, तोता ॥ ४६ ॥ कबूतर. खजन, और कोयल आदि प्रतुद पक्षी है अर्थात् चोंचसे पदार्थको तोडकर खानेवाले हैं ॥

प्रसह गण ।

काको गृध्रउलुकश्च चिल्लश्च शशघातकः ॥४७॥
चाषोभासश्चकुरर इत्याद्याः प्रसहाः स्मृताः ।

काक, गिद्ध, उल्लू, चील, वाज, नीलकण्ठ, भास [एक प्रकारका गिद्ध] और कुरर इत्यादि जीव प्रसह अर्थात् बलपूर्वक छीनकर खानेवाले है ।

ग्राम्य जीव ।

छागमेष वृषाश्वाश्वा ग्राम्याः प्रोक्तामहर्षिभिः ॥४८॥

बकरी, मेंडा, बैल, घोडा, (ग्रामशूकर और कुत्ता) आदि ये ग्राम्य पशु है ॥ ४८ ॥

कूलेचर जीव ।

लुलाय गण्ड वाराह चमरी वारणादयः ॥
एतेकूलचराः प्रोक्ता यतः कूलेचरन्त्यपाम् ॥४९॥

भेसा, गेंडा, सूअर, सुरागाय और हाथी आदि कूलेचर जीव है, ये जीव जलके किनारे रहते हैं, इसलिये इनको कूलेचर कहते हैं ॥ ४९ ॥

प्लव जीवोंके नाम ।

हंस सारस कारण्ड वकक्रौञ्च शरारिकाः ।
नन्दीमुखी स कादम्वा बलाकाद्याः प्लवाः स्मृता ॥५०॥

हंस, सारस, कारण्ड (हारियल) बगुला, क्रौच, शरारिक (अन्य देश प्रसिद्ध तीतर) नन्दी मुखी कादम्ब और वलाका आदि पक्षी प्लवसंज्ञक है अर्थात् जलमें तैरने वाले है ॥

कोशजोंके नाम ।

शङ्खः शङ्खनखश्चापि शुक्ति शम्बूककर्कटाः ।
जीवाऐवंविधाश्चान्ये कोशस्थाः परिकीर्त्तिता ॥५१

शङ्ख, क्षुद्र शंख, सीपी, घोंघा, केंकडा और इसी प्रकार अन्य जीव कोशस्थ कहलाते है ॥ ५१ ॥

पादि जीवोके नाम ।

कुम्भीरम्कूर्मनक्राश्च गोध म करशङ्कवः ।
घण्टिकः शिशुमारश्चेत्यादयः पादिनः स्मृताः ॥५२

कुम्भारी (एक प्रकारका मगर), कछुआ नाका, गोह, मक शंख, घडियाल और सूंस ये पादि संज्ञक जीव है ॥ ५२ ॥

मत्स्योंके नाम ।

भक्कुरो रोहितश्चैव प्रोष्ठीपाठीन मोचिका ।
शृङ्गील्लसश्शष्कुली चकवक्येरङ्गिमगुरी ॥ ५३ ॥

भाकुर. रोहू. सहरी. पाढन. मोचिका. सींगी. हीलसा. सौरी कवई. अरंगी और मुंगरी ये मछलियोंकी जाति है ॥ ५३ ॥

विरेचन गण ।

आरग्वधश्च काम्पिल्लः कटुक्तङ्कोटवारुणी ।
शिवलिङ्गी नागपुष्पी द्विधादन्ती त्रिधात्रिवृत ॥५४
सनायाचिकन्द्वेधा रेचनीचेन्द्र वारुणी ।
जयपाल सुगन्धा च विरेचनगणस्त्वयम् ॥ ५५ ॥

अमलतास, कबीला, कुटकी, अंकोट, वारुणी, शिवलिगी नागपुष्पी, दो प्रकारकी दन्ती, तीन प्रकारका निसोथ ॥५४ । सना

सौनामाखी, रूपामाखी, रेवतचीनी, इन्द्रायण, जमालगोटा, और रासन ये सब औषध दस्तावर है ॥ ५५ ॥

पाचक गण।

पाषाणभेदा मरिचं यवानीजल शीर्षकम् ।
शुण्ठीचव्यगजकणा शृंग्यादिः पाचकोगणः ॥५६॥

पाषाणभेद कालीमिरच, अजवायन, जलशीर्षक, सोंठ, चव्य, गजपीपल और काकडासीगी ये सब द्रव्य पाचक है ॥ ५६ ॥

उशा गण।

त्रिविधापिप्पली तस्या मूलस्तुम्बुरुकस्त्रिधा ।
तेजोह्वायाः फलम्भार्गीपौष्करादिक मुष्णकृत् ॥५७॥

तीन प्रकारकी पीपल, पीपलामूल, धनिया तीन प्रकारका तेजवल; भाडंगी, और पौहकरमूल आदि द्रव्य ये उशा गण हैं ॥

दीपन गण।

द्विविधश्चित्रको धान्य मप जमोदा च जीरकम् ।
त्रिविधंहवुषाद्वेधा गणोऽयन्दीपनः स्मृतः ॥५८॥

दो प्रकारका चीता, धनिया, अजमोद, जीरा काला जीरा, कलोजी, दो प्रकारका हाउबेर, ये सब द्रव्य दीपन गणमे कहे ॥५८॥

पौष्टिक गण।

चतुर्विधस्तुगाक्षीरी चन्द्रशूरोष्टवर्गकः ।
द्रोपातरवचाचैव त्वक्पत्रन्नागकेशरम् ॥५९॥
तालीशपत्रन्त्वक्क्षीरी त्वचा च गुरुरोहिणी ।

कपिकच्छू तोयद्रुमभूफलम्पौष्टिकोगणः॥६०॥

चार प्रकारका वंशलोचन, हालों, अष्टवर्ग, [जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीर काकोली, मेदा, महामेदा, ऋद्धि और वृद्धि] खुरासानी बच, दालचीनी, नागकेशर ॥ ५९ ॥ तालीसपत्र, बशलोचन, तज, गुरुरोहिणी, कौंच, ईसबगोल और भूफली ये सब द्रव्य पौष्टिक हैं ॥ ६० ॥

वातघ्न गण।

महानिम्बश्चकार्पासी द्विधैरण्डोवचाद्विधा।
निर्गुण्डी द्विधाहिंगु गणोऽयं वातहारकः ॥ ६१ ॥

बकायन, कपास, दो प्रकारकी अरंड, वच खुरासानी वच सम्हालू दो प्रकारका और हीग ये सब द्रव्य वातनाशक हैं ॥६१॥

कृमिनाशक गण।

विडंगन्नाग भिन्नाच पारसीकयवानिका।
द्विधाकरञ्जष्टङ्कारी कौटजः कृमिहागणः ॥ ६२ ॥

वायविडंग, नागभेदी, खुरासानी अजवायन, दो प्रकारका कंजा, टंकारी, और कुडा ये सब द्रव्य कृमिनाशक है । ६२ ॥

तृण गण।

त्रिधावंशः कुशः काशस्त्रिधादूर्वातथानलः ॥
गुन्द्रोमुञ्जोगुन्द्रमूला प्रोक्तस्तृणगणस्त्वयम् ॥ ६३ ॥

तीन प्रकारका वास, कुशा, कास, तीन प्रकारकी दूब, नरसल गुन्द, पटेर, मूंज और मोथी, [एक प्रकारका खर] यह तृण गण है ॥ ६३ ॥

प्रसर गण ।

प्रसारिणीद्वयम्मुण्डी लज्जालुश्च पुनर्नवा ।
द्विशारिवा भृङ्गराजः पञ्चधाछिक्किका द्विधा ॥६४॥
द्वयमलब्राह्मीग्रुश्च शङ्खपुष्पी च शातला ।
पातालगरुड़ीषड्धा गणः प्रसर संज्ञकः ॥६५॥

प्रसारणी, गन्धप्रसारणी मुडी, लज्जालू दोनों साठ, दोनों सारिवा, भागरा पांच प्रकारका, दो प्रकारकी नकछिकनी ॥६४॥ दोनों ब्राह्मी, लोकी, शखाहूली शातला, और छः प्रकारकी पाताल गरुडी ये सब प्रसरगणके द्रव्य हैं ॥ ६५ ॥

वृक्ष गण ।

गम्भारी तिन्दुकः सालश्शणपर्णी च शाल्मली ।
शिशपाक कुभोनन्दी रोही च खदिर त्रयम् ॥६६॥
बन्धूकः पुत्रजीवश्च अरिष्टश्चेगुद जिङ्गिनी ।
तुभको भूर्जपत्रश्च धवोधन्वङ्गमोक्षकः ॥ ६७ ॥
भूमीसहः सप्तपर्णश्शखोटो वरुणश्शमी ।
कटभीतिनिशश्चैव विल्वो वृक्षगणस्त्वयम् ॥६८॥

खम्भारी, तेंदुआ, साल, सन, सेंमर, शीशम, अर्जुनवृक्ष, [बेलिया पीपल] लालकजाः तीन प्रकारका खदिर (लाल सफेद पीला) ॥ ६६ ॥ दुपहरिया, पतौंजिया, अरीठा, गोंदा, [काला सेमल] तुन भोजपत्र, धव, धामिन, मोक्षक [पलाशके समान एक पहाडी वृक्षका नाम है] ॥ ६७ ॥ भूमिसह, सतवन,

सहोरा, वरना, छोंकरा, कटभी, तिनिश, और बेल यह वृक्षगण है.

गुल्म गण।

भलाचतुष्टयम्पर्णी पञ्चकञ्चाग्निमन्थकः।
पाठाय वासोवार्त्ताकी कोकिलाक्षोऽसनोद्विधा।
अपामार्ग द्वयं मूर्वा त्रायन्ती शरपुङ्खिका।
काकनामा काकजङ्घा मेषशृङ्गी च वन्दका ॥७०॥
वन्ध्याकर्कोटकी त्रेधा वर्वरीतुलसी द्विधा।
बज्रदन्ती द्विधाऽजाजी भीमा गुल्मगणस्त्वयम् ॥७१॥

चार प्रकारकी बला (बला, अतिबला, नागबला और महाबला), पाच प्रकारकी पर्णी (शालिपर्णी, मुद्गपर्णी, पृष्टपर्णी, माषपर्णी, मण्डूकपर्णी), अग्निमन्थ, पाठा, जवासा, कटेहरी, ताल मखाना, पीतसार, विजयसार ॥ ६९ ॥ दो प्रकारका ओंगा, मरोडफली, त्रायमाण, सरफोका, काकनासा, काकजंघा, मेंढासिंगी, बांदा ॥७०॥ तीन प्रकारकी वंध्या कर्कोटकी, ववई, दो प्रकारकी तुलसी, दो प्रकारकी बज्रदन्ती, कालाजीरा और भीगा ये गुल्म गण हैं॥

लता गण।

गडूचिका नागवल्ली सोमवल्ल्य पराजिता।
स्वर्णवल्ल्यस्थि संहारी श्वदंष्ट्राकाश वल्लरी ॥७२॥
वट पत्री हिंगुपत्री वंशपत्री बृहन्नटा।
अर्कपुष्पी च सर्पाक्षी द्रोणा मूषक कर्णिका ॥७३॥
चिरपोटा मयूराह्व शिखा बन्धन वल्लिका।

कनकाव्हा च वासन्ती मनोदे तिलता गणः ॥ ७४॥

गिलोय, नागवल्ली, सोमवल्ली, अपराजिता स्वर्णवल्ली, अस्थिसहार, गोखरू, आकाशवेल ॥ ७२ ॥ वटपत्री, हिंगुपत्री, बशपत्री बृहन्नटा, अर्कपुष्पी. सर्पाक्षी, द्रोणपुष्पी, मूषकवर्णी,॥७३॥ चिरपोटा मोरशिखा, वन्धनवेल कनकवेल, माधवीवेल और मनोदा यह लतागण है ॥ ७४ ॥

पुष्प गण ।

जात्यम्बष्ठाकैरविका शिवबल्ली कदम्बकः ।
चाम्पेयो माधवी चैव मल्लिका केतकी तथा ॥७५॥
नैपाली कुब्जकश्चैव मुचुकुन्दश्च कुन्दकम् ।
किङ्किरातः कर्णिकारो ह्यशोकोवाण पुष्पकम् ॥७६॥
मारुत्तको वर्वरी च तिलकः कटसारिका ।
बन्धूकस्तु चतुर्द्धास्यान्सिन्दूरी द्विविधा जपा ॥७७॥
अगस्त्यिर्मुनि पुत्रश्च खरपुष्पः कुठेरकः ।
पाटला द्विविधा सूर्य्य मुखी पुष्पगणस्त्वयम् ॥७८॥

चमेली. जुही, कुमुद, मौलसिरी, कदम्ब, चम्पा, मोतिया, बेला, केतकी ॥ ७५ ॥ नेवारी, गुलाव, मुचुकुन्द. कुन्द, किङ्किरात, [गौड देश प्रसिद्ध पुष्पवृक्ष विशेष] कर्णिकार, अशोक,वाण पुष्प ॥ ७६ ॥ मरुआ, ववई, तिलक, कटसरैया. चारो दुपहरिया, दोनो सिन्दुरिया, गुडहल ॥ ७७ ॥ अगस्तिया, दवना, खरपुष्प, कुठेरक, दौनो पाटला और सूर्यमुखी यह पुष्पगण है ॥ ७८ ॥

दुग्ध वृक्षगण ।

द्विधार्कः पञ्चधास्नुही शातला दुग्धिका द्विधा ।
वटस्त्रिपिप्पलः प्लक्षोदुम्बरश्च पयोगणः ॥७९॥

दो प्रकारका आक (सफेद और लाल) पाच प्रकारका थूहर शीतला, दोनों प्रकारकी दुद्धी (पीली और सफेद) बड तीन प्रकारका पीपल, पाकड और गूलर ये दूधवाले वृक्ष है ॥७९॥

धूपगण ।

द्विधागुरुर्देवदारुर्गन्धपाषाणक स्त्रिधा ।
गुग्गुलुः पीतवृक्षश्च शालनिर्यास एव च ॥ ८० ॥
पद्माख्यञ्चतगरं मोचकः शल्लकीरसः ।
रालंनैपालकञ्चेति गणोऽयन्धूप संज्ञकः ॥८१॥

अगर कालाअगर, देवदारु, तीन प्रकारका गन्धपाषाण, पाच प्रकारका गूगल, पीतवृक्ष, शालनिर्यास ॥ ८० ॥ पद्माख, तगर मोचरस, शल्लकीरस, राल, और मैनसिल ये धूपगण हैं ॥८१॥

सुगन्ध गण ।

द्विकर्पूरस्त्रिकस्तूरि लताकस्तूरिकाऽण्डजः ।
सिह्लको जातिको शश्वजातीपत्री लवङ्गकम् ॥८२॥
द्विधैलारोचना द्वेधा पञ्चधा कुंकुमन्तथा ।
गौडपत्रीविधासश्च सुगन्धाव्ह गणस्त्वयम् ॥८३॥

भीमसेनी कपूर, चीनिया कपूर तीन प्रकारकी कस्तूरी, लाल-कस्तूरी, अराडज, शिलारस, जायफल, जाविन्त्री लोंग ॥ ८२ ॥ दो

प्रकारकी इलायची, दो प्रकारका गोरोचन, पाच प्रकारकी केशर, गौडपत्री, और विधास(सुगन्धित द्रव्य विशेष)ये सब सुगधित द्रव्य है.

द्वितीय सुगन्ध गण।

बालकं वीरणं मांसी द्विनखञ्चन्दनन्त्रिधा ।
शैलेयन्द्विविधं मुस्तं मुरागन्ध पलाशिका ॥ ८४ ॥
द्विकर्चूरः प्रियंगुश्चरेणुका गन्धमालती ।
ग्रन्थिपर्णंत्रिधा स्पृक्का कङ्कोलाख्यञ्चतालीसम् ॥

सुगन्धवाला, खस, जटामासी, दो प्रकारकी नखी सफेद चदन, लालचन्दन, पीलाचंदन, शिलाजीत, दो प्रकारकी मोथा, मुरा. गन्धपलाशिका ॥ ८४ ॥ दो प्रकारका कचूर, प्रियगु गन्धाप्रियगु, रेणुका (मिरचके समान एक प्रकारका सुगन्धित द्रव्य) गन्ध मालती. ग्रन्थिपर्णी (चोरक) तीन प्रकारका, स्पृक्का शीतलचीनी और तालीसपत्र ये सब सुगन्धित द्रव्य है यह दूसरा सुगन्ध गण है ॥ ८५ ॥

दुग्धादि गण।

गावो दशधा महिषी त्रिविधाऽजास्तथामताः ।
मृग्यएकविधा मेषी त्रिधोष्ट्रीशदधाहयी ॥ ८६ ॥
पञ्चधा करिणीनारी दशधा शूकरी द्विधा ।
व्याघ्रीशुनीतुद्विविधा रासभी पञ्चधापृथक् ॥ ८७॥
त्रिधा वृकघष्टथामत्स्यी गवयीवञ्जनीकरिः ।
दुग्धं घृतञ्च तक्रञ्च दधिताभ्यः प्रजायते ॥ ८८ ॥

दस प्रकारकी गौ, तीन प्रकारकी भेस, तीन प्रकारकी बकरी. एक प्रकारकी हरिणी, एक प्रकारकी मेंढी. तीन प्रकारकी ऊटनी

दस प्रकारकी घोडी ॥ ८६ ॥ पाच प्रकारकी हथिनी, दस प्रकार की स्त्री, दो प्रकारकी शूकरी, दो प्रकारकी व्याघ्री, दो प्रकारकी कुतिया, पाच प्रकारकी गधी, ॥ ८७ ॥ तीन प्रकारकी भेंडी, आठ प्रकारकी मछली, नीलगाय, गेंडी, और रोडी ये दूध, देनेवाले पशु हैं, इनसे दूध, दही और घी उत्पन्न होता है ॥ ८८ ॥

धातु वर्ग ।

त्रिविधंतु सुवर्णंस्यात्पञ्चधा रजतम्भवेत् ।
पञ्चप्रकारकन्ताम्रं वङ्गंतुद्विविधस्मृतम् ॥ ८९ ॥
यसदन्त्रिविधम्प्रोक्तं भवेन्नागस्तुषड्विधाः ।
अष्टधा लोह मुद्दिष्ट मेतर्वैसप्त धातवः ॥ ९० ॥

तीन प्रकारका सुवर्ण, पाच प्रकारकी चादी, पाच प्रकारका तावा, दो प्रकारका रागा ॥ ८९ ॥ तीन प्रकारका जस्त, छः प्रकारका शीशा, और आठ प्रकारका लोहा ये सात धातु है ॥ ९० ॥

उप धातु गण ।

स्वर्णजं स्वर्णमाक्षिकन्तारजन्तार माक्षिकम् ।
तुत्थन्ताम्र भवंज्ञेयङ्कसकंवंग सम्भवम् ॥ ९१ ॥
रीतिश्चायसदोद्भूता सिन्दूरो नाग सम्भवः ।
शिलाजत्वद्रि सम्भूत मेतं सप्तोपधातवः ॥ ९२ ॥

सुवर्णसे सोनामाखी, चादीसे रूपामाखी, तावेसे नीलाथोथा, रागासे कासा ॥ ९१ ॥ और पर्वतसे शिलाजीत उत्पन्न होता है, ये सात उपधातु हैं ॥ ९२ ॥

रस गण।

सूतश्चतुर्धा गन्धश्च तालन्तु द्विविधम्मतम्।
द्विधाञ्जञ्च काशीसङ्गैरिकश्चरसा इमे ॥ ६३ ॥

चार प्रकारका पारा (सफेद, लाल, पीला और काला) चार प्रकारका गन्धक, दो प्रकारका हरताल (तबकिया और गौव-रिया) दो प्रकारका सुरमा (काले सुरमेका नाम श्रोताञ्जन और सफेदका नाम सौबीर है) कसीस और गेरू ये रस गण हैं ॥

उपरस गण।

पारदाद्दरदोजातष्टङ्कणो गन्धका त्तथा।
स्फटिकाऽभ्रकतोजाता हरितालान्मनःशिला ॥
अञ्जनाच्छुक्तिशंखाद्याः काशीसाच्छंख मूर्वकः।
गौरिकान्मृत्तिका जाता तस्मादुपरसा इमे ॥ ९५ ॥

पारेसे शिंगरफ, गंधकसे सुहागा, अभ्रकसे फिटकरी, हरतालसे मैनसिल ॥ ९४ ॥ सुरमासे सीपी, और शंख आदि, कसीससे शंख भेद मूर्वक और गेरूसे मृत्तिका उत्पन्न हुई है इसलिये इन सिंगरफ आदिको उपरस कहते हैं ॥ ९५ ॥

रत्न वर्ग।

मुक्ताफलं हीरकश्चवैडूर्य्यम्पद्म रागकम्।
पुष्परागश्च गोमेदं नीलङ्गारुत्मतं तथा ॥ ९६ ॥
प्रवालयुक्तान्येतानि महारत्नानि वैनव ॥ ९७ ॥

मोती, हीरा, वैदूर्यमणि, पद्मराग, पुष्पराग, [पुखराज]

गोमेद (पीत रत्न) नीलमणि, गारुत्मत, (पन्ना) और मूगा ये नौ महारत्न हैं ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

उपरत्न वर्ग ।

उपरत्नानिकाचश्च कर्पूराश्मा तथैव च ॥
मुक्ताशुक्तिस्तथा शङ्खइत्यदीनि बहून्यपि ॥ ९८ ॥

काच, कर्पूरी, पत्थर, मोतीकी सीपी, शख आदि बहुतसे उपरत्न हैं ॥ ९८ ॥

पाठान्तर ।

वैक्रान्तो मौक्तिकी शुक्तिः रक्षोमरकतंलशुः ।
लाजागरुडजन्मा च स्फटिकारत्न जातयः ॥९९॥

वैक्रान्त, मोतीकी सीप, रत्नो, मरकतमणि, लहसुनिया, लाजा, गारुडमणि, और स्फटिक ये उपरत्न हैं ॥ ९९ ॥

एवंबहुगणाः प्रोक्ता मयामन्दोदरिप्रिये ।
पुराशिवेन सम्प्रोक्ताजगत्कल्याण हेतवे ॥ १०० ॥
इति लंकानाथकृतार्कप्रकाशे
नवमंशतकंसमाप्तम् ॥१००॥

हे प्रिये ! मन्दोदरि ! इस प्रकार मैंने ये बहुतसे गण कहे है इनको पहिले जगत् के कल्याणके लिये शिवजीने कहा था ॥१००॥

इति श्रीरावण विरचितेऽर्क प्रकाशे भाषाटीका
विभूषितं नवमंशतक समाप्तम् ।

दशम शतक।

उत्तम सुवर्णके लक्षण।

दाहे रक्तं सितञ्छेदे निकषे कुंकुमप्रभम्।
तारशुल्वोज्झितं स्निग्धं कोमलं गुरुहेम मत् ॥१॥

जो सुवर्ण तपानेमे लाल, काटनमें सफेद कसौटीपर केशरके समान, चादी और तावेसे रहित, स्निग्ध और कोमल सुवर्ण अच्छा होता है ॥ १ ॥

धातु शोधन मारण प्रकार।

पत्तली कृत पत्राणि वन्हौ तानि प्रतापयेत्।
वेष्टनैस्तैः समात्रेण्य तैलेचैव विनिः क्षिपेत् ॥२॥
पृथक् पृथक् च दशधा तक्रवर्गे तथैव च।
धान्यक्वाथे मूत्रवर्गे मद्यवर्गे कटुद्भवे ॥ ३ ॥
अम्लवर्गे पुष्पवर्गे रक्तवर्गे फलोद्भवे।
क्षीरवर्गे ह्यर्कवर्गेनिर्वा प्यास्ते समन्ततः ॥४॥
कृत्रिमा धातुसमिश्रा ये च नो कार्य साधकाः।
जायन्ते दग्धदोषास्तु धातवो गाङ्गवारिवत् ॥५॥
गैरिकं सर्जिकाक्षारो विड्लवणङ्काच सम्भवम्।
नवसादरकः कन्या गुञ्जा स्वर्णादि वेष्टनम् ॥६॥
दद्यात्पत्राणि धान्याम्बुन्यथ तानि समुद्धरेत्।
गोमूत्रकेऽथवा तानि दत्वा वारत्रयं तथा ॥७॥
पत्रेषु सर्व्वधातूनां दत्वा तच्चुन्यकज्जलम्।
दत्वाऽनलान्तरे तानि वालुकायन्त्रके पचेत् ॥८॥

पृथक् पृथक् सूर्यदण्डैर्वन्हिभिर्दीपनादिभिः ।
विशोध्यत पुनस्तांश्च यथेच्छन्पुटतः पचेत् ॥ ९ ॥

जिस धातुका शोधन करना हो उसके बहुतसे पतले पत्र वन-आकर आगे कहे हुए वेष्टनोंसे लपेटकर गरम करके अलग २ तेल मठा, धान्यक्वाथ (काजी) गौमूत्र, कटु पदार्थोंके रस, अम्लवर्ग (खटाई) फूलोंके रस, रक्तवर्ग, फलोंका रस, दूध और अर्कवर्गमें क्रमसे दस २ वार बुझावे ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ जो धातु कृत्रिम (बनी हुई) और अन्य धातुओमे मिली हुई होती है उनसे कार्य सिद्ध नहीं होसकता किन्तु उक्त प्रकारसे शोधन करनेपर जिसके सब दोष दग्ध होगये है ऐसी धातु गंगाजलके समान निर्मल हो॰ जाती है ॥ ५ ॥ गेरू, सज्जीखार, विड्लवण, कचनौन, नौसादर, ग्वारपाठा और चिरमिठी ये सुवर्ण आदि सातो धातुओंके वेष्टन है ॥ ६ ॥ उन धातुओके पत्रोंको काजी अथवा गौमूत्रमें तीनवार बुझा कर निकालले ॥ ७ ॥ और उन पत्रोंको उनके बरावर कजली लेकर उसमे लपेटले और अग्निपर तपाकर तदन्तर बालुका यंत्रमें पकावे ॥ ८ तत्पश्चात् इन धातुओंको प्रथम शतकमें कही हुई दीपन आदि अग्नियो द्वारा क्रम से बारह २ घडी तक पचावे, यह शुद्ध करनेकी दूसरी क्रिया है इस प्रकार करनेसे सब धातु शुद्ध होजाती हैं । इन धातुओंको अन्य ग्रन्थोंके मतानुसार पुट देकर भस्म करले.

सुवर्ण भस्मके गुण ।

योगेन मत्स्यपित्तायाः स्वर्णं तत्कालदाहहृत ।
भङ्गायोगाच्च तद्वृष्यं दुग्धयोगोद्बलप्रदम् ॥ १० ॥

नेत्र्यपुनर्नवा योगाद् घृतयोगाद्रसायनम् ।
स्मृत्यासिक्तद्वचायोगात्कांतिकृत्कुंकुमेन च ॥ ११॥
पयसा राजयक्ष्माणंनिर्विष्या च विषं हरेत् ।
शुण्ठीलवङ्गमरिचैस्त्रिदोषोन्मादहृत्परम् ॥ १२ ॥

कुटकीके साथ सुवर्ण भस्मका सेवन करनेसे दाह तत्काल दूर होता है. भागके साथ सेवन करनेसे शरीर पुष्ट होता है और दूधके साथ सेवन करनेसे बल बढता है ॥ १० ॥ साठके साथ देनेसे नेत्रोको हितकारी है, घृत के साथ सेवन करनेसे रसायन है. वचके साथ सेवन करनेसे स्मृति बढती है और केशरके साथ सेवन करनेसे कांति बढती है ॥ ११ ॥ दूधके साथ सेवन करनेसे राजयक्ष्मा दूर होता है निर्विषीके साथ सेवन करनेसे विष दूर होता है और सोंठ, लोंग, और काली मिरचके साथ सेवन करनेसे त्रिदोषज उन्माद दूर होता है ॥ १२ ॥

कच्ची सुवर्ण भस्मके अवगुण ।

असम्यङ्मारित स्वर्ण बलं वीर्य्यञ्च नाशयेत् ।
करोति रोगान्मृत्यञ्च तद्धन्यद्यात्नतस्ततः ॥ १३ ॥

अच्छी प्रकारसे भस्म न किया हुआ सुवर्ण बल और वीर्यको नाश करता है और अनेक रोग उत्पन्न करता है तथा अन्तमें मृत्यु तक करता है इसीलिये सुवर्ण को यत्न पूर्वक भस्म करै ॥ १३ ॥

उत्तम चांदीके लक्षण ।

गुरु स्निग्धं मृदु श्वेत दाहच्छेद घनक्षमम् ।
वर्णाढ्यं चन्द्रवत्स्वच्छं तारन्नवगुणं शुभम् ॥ १४ ॥

भारी, चिकनी, कोमल, सफेद, तपानेमें और काटनेमे उत्तम घनक्षम [हथोडेकी चोट सहनेके लायक] उत्तम वर्णवाली और चंद्रमाके समान स्वच्छ ऐसे नवगुणोंसे युक्त चादी उत्तम होती है।

चांदीकी भस्मके गुण।

सितया हन्ति दाहाद्यं वातपित्तम्फलत्रिकैः।
त्रिसुगंधैः प्रमेहादि रजतं हंत्यसंशयम् ॥ १५ ॥
विड्वीर्ययोर्बन्धनञ्च वृष्यं संक्षयनित्परम्।
कृशत्वं रोगसङ्घातं कुरुते तद शोधितम् ॥ १६ ॥

चांदीकी भस्म मिश्रीके साथ सेवन करनेसे दाह आदिको दूर करती है, त्रिफलेके साथ सेवन करनेसे बात पित्तको दूर करती है और त्रिसुगन्धके साथ सेवन करनेसे प्रमेह आदिको निश्चय दूर करती है ॥ १५ ॥ मल और वीर्यको रोकती है पुष्टि कर्त्ता है और क्षयरोगको दूर करती है। विना शुद्धकी हुई चादी कृशता आदि अनेक रोग समूहोंको उत्पन्न करती है ॥ १६ ॥

उत्तम तांवेके लक्षण।

जपाकुसुमसङ्काशं स्निग्धं मृदु घनक्षमम्।
लोहनागोज्झितं ताम्रं मारणाय प्रशस्यते ॥ १७ ॥

गुडहलके फूलके समान लाल, चिकना, कोमल, घनकी चोट सहनेवाला और लोहे तथा शीशेके मेलसे रहित तावा मारणके योग्य होता है ॥ १७ ॥

ताम्र गुण और ताम्र भस्म।

दुग्धसन्नायखण्डैर्यत्ताम्रं रक्तिद्वयोन्मितम्।

पिबेत्तस्य विरेकेण प्राशाम्तेनिर्यगुर्णदाः ॥ १८ ॥
कुष्ठकासश्वासपित्तं हरेच्छ्लेष्मोदरामयान ।
ज्वराम्लपित्तपाण्डर्वशः शूलशोथकृमीनपि ॥ १९ ॥

जो मनुष्य दूध, सनाय और मिश्रीके साथ दो रत्तीके अनुमान तावेकी भस्मका सेवन करता है उसके वहुत रोग विरेचन द्वारा दूर होजाते है ॥१८॥ कोढ, खासी, श्वास, पित्त, कफ, उदररोग ज्वर, अम्लपित्त, पाण्डुरोग, ववासीर, शूल, शोथ, और कृमिरोग ये सब तावेकी भस्मसे दूर होते हैं ॥ १९ ॥

कच्ची भस्मके अवगुण।

एको दोषो विषेनाम्रे त्वमभ्यङ्मारिते पुनः ।
दाहः स्वेदोऽरुचिमूर्छाक्लेदो रेको वमिर्भ्रमः ॥ २० ॥

बिषमे तो एकही दोष होता है किन्तु अच्छी प्रकार न मारे गये तावेमें अनेक अवगुण होते है। अर्थात् कच्चीभस्म दाह स्वेद अरुचि, मूर्च्छा, क्लेद, दस्त, बमन और भ्रम आदि अनेक रोग उत्पन्न करती है ॥ २० ॥

उत्तम वंगके लक्षण।

शीघ्रद्रावि सशब्दं वा स्फुटनञ्चन्द्रसन्निभम् ॥
तथैव मलहीनं यन्दालितं वङ्गमुत्तमम् ॥ २१ ॥

जो रांग जल्दी पिघल जाय शब्दके साथ टूटै, गलानेपर चन्द्रमाके समान चमकनेलगे और मलरहित हो ऐसा रांगा उत्तम होता है ॥ २१ ॥

वंग भस्मके गुण ।

सर्व मेहान्सितादुग्धैः सतालं यच्च मारितम् ।
हन्त्यष्टादश कुष्ठानि रजनीक्वाथसंयुतम् ॥ २२ ॥

हरतालके साथ भस्म किया हुआ बङ्ग दूध और मिश्रीके साथ सेवन करनेसे सब प्रकारके प्रमेहोंको दूर करता है और हल्दी के क्वाथके साथ सेवन करनेसे अठारह प्रकारके कोढोंको दूर करताहै

अशुद्ध वंगके अवगुण ।

अशुद्धवङ्ग कुरुते शूल गुल्मंत्वचां त्रिजम् ।
वातशोथम्प्रमेहञ्च पाण्डुरोगम्भगन्दरम् ॥ २३ ॥

अशुद्ध वङ्ग शूल, गुल्म, त्वचा और पावोंमें वातकी सूजन, प्रमेह, पाण्डुरोग और भगन्दर इनको उत्पन्न करता है ॥२३॥

उत्तम जस्तके लक्षण ।

यस्दन्दर्पणाभासं घनच्छायं सितप्रभम् ।
निकषे यद्रजतवद्दाहे च्छेदे च तालवत् ॥ २४ ॥

दर्पणके समान निर्मल, गम्भीर, छाया युक्त, सफेद कसौटीपर चादीके समान और गलाने तथा काटनेमें हरतालके समान जस्त उत्तम होता है ॥ २४ ॥

जस्तकी भस्मके गुण ।

प्राचीन गोघृतैर्नेत्र्यं ताम्बूलेन प्रमेहजित् ।
अग्निमन्थेनाग्निकारि त्रिसुगंधैस्त्रिदोषजित् ॥ २५ ॥

जस्तकी भस्म पुराने गायके घीके साथ सेवन करनेसे नेत्रोंको

हितकारी है, पानमें खानेसे प्रमेहको दूर करती है, अरनीके साथ जठराग्नीको बढाती है और त्रिसुगन्धके साथ सेवन करनेसे त्रिदोष को दूर करती है ॥ २५ ॥

अशुद्ध जस्तके अवगुण ।

अशुद्धंयसदं कुर्याद्रक्तपित्तञ्च शीतलम् ।
मन्दतांयठराग्नेश्च धातुनाशं ज्वरादिकम् ॥२६ ॥

अशुद्ध जस्त रक्त पित्तको करता है, शीतल है, मन्दाग्नि करता है, धातुको नाश करता है और ज्वर आदिको उत्पन्न करताहै

उत्तम शीशेके लक्षण ।

विकीर्णं दृश्यते श्वेतं गलितं गगनोपमम् ।
दर्शने नागवत्तच्च सन्नागं शमिवत्कृपे ॥ २७ ॥

जो काटनेपर सफेद, गलानेपर आकाशके समान नीला,देखनेमें सर्पके समान वर्णवाला और कसौटी पर शमी काष्टके समान हो वह शीशा उत्तम होता है ॥ २७ ॥

शीशे की भस्म गुण ।

नागस्तु नागशततुल्यबलन्ददाति ।
व्याधिं विनाशयति जीवनमातनोति ।
वन्हिम्प्रदीपयति कामबलङ्करोति ।
मृत्युञ्चनाशयति सन्ततसेवितः सः ॥२८॥

शीशेकी भस्म सदा सेवन करनेसे सौ हाथीके समान बल देती है, रोगोका नाश करती है आयुको बढाती है, जठराग्निको प्रदीप्त करता है, कामदेवको बढाती है और मृत्युका नाश करती है ॥२८॥

अशुद्ध शीशेके अवगुण ।

मन्दाग्निमामशूलञ्च कुष्ठमेहादिरुग्व्रजम् ।
अशुद्धनागः कुरुते प्राणानपि निहंति च ॥ २९ ॥

अशुद्ध शीशा मन्दाग्नि, आमशूल, कुष्ठ, और प्रमेह आदि रोगोंको उत्पन्न करता है तथा अन्तमें प्राणोंको भी हर लेता है ॥

इति नाग गुण ।

लोह शोधन विधि ।

सर्वलोहानि तप्तानि कदली मूल वारिणा ।
सप्तधा भिनिषिक्तानि शुद्धिमायांत्यथोत्तमम् ॥ ३० ॥

सब लोहोको गरम २ करके केलाकी जडके रसमें सात वार बुझावै तो शुद्ध हो यह वडी सुगम रीति है ॥ ३० ॥

लोह भस्मको विधि ।

शुद्धलोहभवं चूर्णम्पातालगरुडीरसैः ।
मर्दयित्वापुटेद्वन्हौदद्यादेवम्पुटत्रयम् ॥ ३१ ॥
पुटत्रयकुमार्य्याश्चकुठारच्छिन्निकारसैः ।
पुटषट्कंततोदद्यादेवंतीक्ष्णमृतिर्भवेत् ॥ ३२ ॥
क्षिपेद्द्वादशमांशेनदरदंतीक्ष्णचूर्णतः ।
मर्दयेत्कन्यकाद्रावैर्यामयुग्मंततःपुटेत् ।
एवंसप्तपुटैर्मृत्युं लोहचूर्णमवाप्नुयात् ॥ ३३ ॥

शुद्ध लोहचूर्णको पातालगरुडीके रसमें मर्दनकर गजपुटमें फूंके, इसीप्रकार तीन पुटदे ॥ ३१ ॥ फिर इसी प्रकार ग्वारपाठेके रसमें

घोटकर तीन पुटदे और तदन्तर कुठारच्छिन्निका (हडसंकरी) के रसमें घोटकर छः पुट देवै तौ उत्तम भस्म होती है ॥ लोहा भस्म करनेकी दूसरी विधि—जितना लोह हो उसका वारहवा भाग शिंगरफ मिलाकर ग्वारपाठेके रसमें दो पहर तक खरल करे फिर गजपुटमें फूंके इस प्रकार सात पुट देनेसे लोहाभस्म होजाता है ॥ ३३ ॥

लोह भस्म सेवन विधि ।

शुण्ठीवाते सितापित्ते कफे कृष्णात्रिजातकम् ।
सन्धिरोगे बलापाण्डौ प्रोक्तं लोहानुपानकम् ॥ ३४ ॥

वातमें सोंठके साथ, पित्तमें मिश्रीके साथ, कफरोगमें पीपलके साथ, सन्धिरोगमे त्रिजातक (इलायची, दालचीनी और तेजपात) के साथ, और पाडुरोगमे खरैटीके साथ लोहचूर्णको सेवन करना चाहिये ॥ ३४ ॥

अशुद्ध लोहके अवगुण ।

त्वक्क एठ रोग हृद्रोग शूलहृल्लासमश्मरीम् ।
नानारोगान्प्रकुरुते चूर्णं लोहमशोधितम् ॥ ३५ ॥

अशुद्ध लोह त्वचाके रोग, कण्ठरोग , हृद्रोग, शूल, हृल्लास (जीमिचलाना) और अश्मरी रोगोंको उत्पन्न करता है ॥ ३५ ॥

उपधातु शोधन प्रकरण ।

पादांशं सैंधव दत्त्वा उपधातून्विमर्दयेत् ।
दशधा चाम्लवर्गेण कटाहे लोहसम्भवे ॥ ३६ ॥
घर्षयेल्लोहदण्डेन प्रत्येकञ्च मुहूर्त्तकम् ।

यथा सिन्दूरवर्णत्वं धातूनां सम्प्रजायते ॥ ३७ ॥
अथवा दोषशांत्यर्थं त्रिकटुवर्कबलार्कके ।
बिभावयेद्द्वादशधा ततस्तान्पुटतः पचेत् ॥ ३८ ॥
कपोतोत्वोर्विष्ठया वा लिप्त्वा तांस्तु विनिक्षिपेत् ।
अजामूत्रेऽथ तप्तांस्तान्क्वाथे कौलत्थजे तथा ॥३९॥
मधुनाऽभ्यज्य तैलेन मर्दयित्वा पृथक्पृथक् ।
दशांशं टङ्कणन्दत्वा पचेल्लघुपुटे ततः ॥ ४० ॥

जितनी धातु हो उसमें चौथाई सेंधानमक मिलाकर प्रत्येक लोहेकी कढाईमे डाल उसमे दस बार खटाईका रस डाले और प्रत्येक बार लोहेके दण्डसे एक २ घडी तक घोटे, और फिर चूल्हेपर रख कर उसी प्रकार घोटता रहै यहातक कि धातुका वर्ण सिन्दूरके समान होजाय. तब उत्तम भस्म जानकर चूल्हेपरसे उतार लेवै ॥३६॥३७॥ अथवा दोषोंकी शातिके लिये प्रत्येक धातुको त्रिकुटा और वरियाराके अर्ककी बारह २ भावना दे, फिर पुटपाकी विधिसे भस्म करले॥३८॥ अथवा धातुको कबूतर और विलावकी बिष्टामे लपेटकर गरम२करके बकरीके मूत्र और कुलथीके क्वाथमे बुझावै, फिर शहद और तेलमे खरल करके दसवा भाग सुहागा मिलाकर लघुपुटमें भस्म करले ॥

दत्वा वान्हिं दृढतरमुपधातून्सुधीः पचेत् ।
अभावे मुख्यधातूनाम्प्रयोज्या उपधातवः ॥ ४१ ॥
न कुर्वन्ति गुणांस्तेऽपि प्रायः कुत्सितशोधिताः ।
कुर्वन्ति दोषान्मुक्तास्ते सिन्दूरं यदि भक्षयेत् ।

अशुद्धं वाथ शुद्धं वा विना मंत्र गुरूक्तिभिः ॥ ४२ ॥
विना तेन भवेच्छीघ्रं स्वरभङ्गोमृतिस्तथा ।
राक्षसीमस्तके लग्नं दृष्ट्वा शप्तो हनूमता ॥ ४३ ॥
आदिवाराह कल्पे तु कृता तस्य च निष्कृतिः ।
तेनैव वानरेन्द्रेण शृणु मन्त्रं यथोदितम् ॥ ४४ ॥
तारसिन्दूरपायेति सिस्थाने सम्प्रयोजयेत् ।
सिन्दूरं हलको देवचालयेति पदं वदेत् ॥ ४५
री तु प्रोक्ता खलभली जी तथा कलवलीति च ।
मन्त्रः शावरमन्त्राणां शिखामणिरयं स्मृतः ॥ ४६ ॥

बुद्धिमान् वैद्यको उचित है कि अत्यन्त तीव्र अग्नि देकर इन उपधातुओंका पाक करै, मुख्य धातुओंके अभावमें उपधातुओंको प्रयोग करे ॥ ४१ ॥ जो धातु उत्तम प्रकारसे शुद्ध नहीं की जाती है वे प्रायः गुणदायक नहीं होती किन्तु दोषही उत्पन्न करती हैं। जो कोई सिन्दूरको चाहे वह शुद्ध हो और चाहै अशुद्ध गुरुके बताये हुए मंत्रके जप किये बिना खाता है ॥ तौ उसको शीघ्रही स्वरभंग रोग हो जाता है तथा मृत्यु तक होजाती है एक समय किसी राक्षसीके मस्तकपर सिंदूर लगा देखकर हनूमानने शाप दिया था ॥ ४३ ॥ किन्तु आदि वाराह कल्पमें उसी वानरराज हनूमानने इसकी निष्कृति की है जो मंत्र उन्होंने कहा है उसको सुनो ॥४४॥ तार सिंदूर प्रायइसको सिंदूर पदके स्थानमें जोडे, सिंदूर हलको देव चलाये पदके स्थानमें जोडे ॥४५॥ और जो [र] शब्द कहा गया है उसमें

खलमली जीव कलवली हे कालभैरव ! ऐसे कहकर देवसाक्षी हो (ओं तार सिन्दूर पाय खलमली जीव कलवली काल भैरव सिन्दूरं हलको देव चालयेति) यह मंत्र सब शावरमंत्रोंका शिखामणि है।

अथ सिन्दूर विधि।

गुरुतो देश्वरोपास्याद्गृहीत्वा मन्त्रमुत्तमम्।
नञ्जपित्वा सहस्रन्तु तद्दशांशन्तु होमयेत् ॥ ४७ ॥
सिन्दूरं तैलवटकैः पूजयेत्करवीरकैः।
दूर्वाभिर्मार्जनङ्कार्यम्पायसैर्ब्रह्मभोजनम् ॥ ४८ ॥
ततःसिद्धो भवेन्मंत्रः शम्बरासुरभाषितः।
अनेनामन्त्र्य सिन्दूरं षण्मासंयन्तु भक्षयेत् ॥ ४९ ॥
विमुक्तः क्रोधलोभाभ्यां तृष्णापाशात्तथैवच।
युक्तस्स नियमै श्शान्त्यादिभिश्चापिजितेन्द्रियः॥ ५० ॥
ब्रह्मचर्यपरस्यास्य बिन्दुरूर्ध्वाम्प्रजायते।
महारात्रौ तु यो नग्नो जपेन्मन्त्रमनुत्तमम् ॥ ५१ ॥
क्रियतेयेन सुधिया जपता मन्त्रमुत्तमम्।
वानराणां च सन्तानाम्प्रसरं तिलकाह्वयम् ॥ ५२ ॥
मोहयेत्सकलं विश्वं रणेजयति निश्चितम्।
ललाटे तिलकंयावत्तावदीशः स एव हि ॥ ५३ ॥

गुरुसे अथवा शिवजीके किसी उपासकसे इस उत्तम मंत्रको ग्रहणकर एक सहस्र वार इसका जप करै फिर उसके दशांशसे होम करै ॥ ४७ ॥ और तेलके बडा तथा कनेरके फूलोंसे सिन्दूरका पूजन करै, दूबसे मार्जन करै और खीरसे ब्राह्मणोंको भोजन करावै।

तब यह शम्बरासुरका कहा हुआ मंत्र सिद्ध होता है इस मंत्रसे अभिमंत्रित करके छः मासतक खाय ॥ ४९ ॥ तो वह मनुष्य काम, क्रोध और तृषाके फन्देसे मुक्त होकर शम दम आदि नियमोंसे युक्त हो जितेन्द्रिय होजाता है ॥ ५० ॥ जो ब्रह्मचर्यको धारण करनेवाला पुरुष इस सिंन्दूरका सेवन करै तौ उसका वीर्य ऊपरको चढ जाताहै अर्थात् पतित नहीं होता है अथवा जो पुरुष दिवालीकी रात नग्न होकर इस मंत्रको जपता है ॥ और वह बुद्धिमान् उस मंत्रको जपते हुए सात बन्दरोंके मस्तकपर सिंन्दूरका तिलक कर देता है ॥ ५२ ॥ और अपने मस्तकपर तिलक कराता है वह सम्पूर्ण जगत्को मोहित कर लेता है, निश्चय संग्राममें विजय प्राप्त करता है और जबतक मस्तकपर तिलक रहता हैं तबतक वह संसारमें प्रभु होकर रहता है.

पारद विधि ।

उन्मत्तविजयार्कै वा काञ्जिके सूतधारने ।
हालाहलेन तुल्येन दरदोत्थं विमर्दयेत् ॥ ५४ ॥
नष्टपिष्टं रसंकृत्वा भावयेत्पद्मिनीदलैः ।
गोधूमराशौ संस्थाप्य मासमेकन्ततः पुनः ॥ ५५ ॥
निष्कास्य क्षालयित्वा तु अहिफेनेन मर्दयेत् ।
कुर्याच्च पूर्ववत्पश्चान्न वसारेण मर्दयेत् ॥ ५६ ॥
कमलस्य रसेनापि कृष्णोन्मत्तरसेन च ।
हिंगुना गंधपाषाणासत्वेनाथ विमृद्य च ॥ ५७ ॥
षण्मासांस्तुततः स्थाप्य सूरणस्योदरे रसः ।
एवंवर्षेण शुद्धः स्याद्रसराट्चेति निश्चितम् ॥ ५८ ॥

दृश्यते चूर्णसंकाशो जीवनाख्यो रसोत्तमः ।
एकगुञ्जो द्विगुञ्जो वा दृष्ट्वा दोषबलाबलम् ॥ ५९ ॥
दृष्टौषधगुणश्चापि देयश्चासौ रसोत्तमः ।
सेवनात्स्वस्थतानस्थात्तम्ब्रह्मापि न जीवयेत् ॥ ६० ॥

शिंगरफमें निकाले हुए पारेको धतूरेके अर्क, भांगके अर्क काजी अथवा सूत धावन ! (पारेके धोवन) में समान भाग हलाहल विष मिलाकर खरल करे ॥ ५४ ॥ फिर जब पारा अच्छी तरह घुट जाय तब कमलिनीके पत्तोंके अर्ककी भावना दे तदनन्तर उसको एक महीने तक गेंहूके ढेरमें गाड दे ॥ एक महीने पीछे उस को निकालकर निर्मल जलसे धोकर अफीमके साथ खरल करै और पूर्ववत एक महीने तक उसको गेंहूके ढेरमे रक्खा रहने दे, फिर स्वच्छ जलसे धोकर नौसादरके साथ खरल करै ॥ ५६ ॥ फिर कमलके रस, काले धतूरेके रस हींग और गन्धकके सत्वमें खरल करके ॥ ५७ ॥ पारेको छः महीनेतक जिमीकन्दके बीचमें रक्खा रहने दे, इस प्रकारसे यह रसराज पारद एक वर्षमे निश्चय शुद्ध होजाता है ॥ ५८ ॥ शुद्ध होनेपर यह चूनेकी तरह सफेद दिखाई देता है । जीवनके आधार रसोंमें श्रेष्ठ इस पारेको दोषका बलाबल देख कर एक रत्ती या दो रत्ती दे ॥ ५९ ॥ तथा इस औषधिको गुण विचारकर न्यूनाधिक मात्रादे, जो इसके सेवन करनेसे मनुष्य स्वस्थ न हो तौ उसको ब्रह्मा भी नहीं जिला सकता अर्थात् वह निश्चय मरजाता है ॥ ६० ॥

शिगरफ विधि ।

चणकाभानि खण्डानि दरदस्य तु कारयेत् ।
ताम्रजे वायसे पात्रेस्थापयित्वा धमेद्दृढम् ॥ ६१ ॥
जातायामुष्णतायाञ्च तदातस्मिन्वि निक्षिपेत् ।
तत्तुल्यं तु द्रवद्रव्यमेषा स्याद्वह्निभावना ॥ ६२ ॥
मेषीक्षीरेण दशवा दशधा क्षीरिणार्ककैः ।
दीप्तिवर्गेण दशधा विरेक्यर्केण पञ्चधा ॥ ६३ ॥
पञ्चधा दुग्धवर्गेण दशाधाम्लस्य भावना ।
पञ्चशद्भावितोम्लेच्छो नानारोगविनाशनः ॥ ६४ ॥
नेत्र्यः क्षुन्मदकृच्चैवदरदः कथ्यते बुधैः ।

शिगरफके चनेके बराबर छोटे २ टुकडे करके तावे या लोहेके पात्रमें रखकर अग्निपर खूब गरम करै ॥ ६१ ॥ जब खूब गरम होजाय सब उसमें उसीके समान द्रव द्रव्य डाले, यह वन्हिभावना कहलाती है ॥ ६२ ॥ अब द्रव द्रव्य कहते हैं, पहिले भेडके दूधसे दसबार वन्हि भावना दे दशवार दुधिया वृक्षोंके अर्ककी भावना दे, तदनन्तर दसवार दीपन द्रव्योंके अर्ककी भावना दे, पाचवार विरेचन द्रव्योंके अर्ककी भावना दे ॥ पाचबार प्रथम कहे हुए दुग्धवृक्षोके अर्ककी भावना दे और सबसे पीछे खटाईके रसकी दस भावना दे, इस प्रकार पचास भावना देनेसे शुद्ध हुआ शिगरफ अनेक रोगोका नाश करता है ॥ ६४ ॥ यह शिगरफ नेत्रोंको हितकारी, क्षुधाके बढानेवाला और मद करनेवाला है ऐसा बुद्धिमानोंने कहा है ।

गन्धक शोधन प्रकार ।

गंधकं भूमिलवणं समभेकत्र चूर्णयेत् ॥ ६५ ॥
अनातपेमसूरस्यतोयः पात्रे विनिक्षिपेत् ।
निष्कास्य तज्जलम्प्रातः सममम्लेन मर्द्दयेत् ॥ ६६ ॥
पुनर्दत्वा जलं क्षिप्त्वा शतवारं समाचरेत ।
जायते गंधको दिव्यः श्वेतोगंधविवर्जितः ॥ ६७ ॥
शतधा भावयेत्तं तु कदलीकाण्डजैर्जलैः ।
दीप्तो न जायते वन्हिस्तत्संयोगात्कदाचन ॥ ६८ ॥
सुगंधार्केण भाव्योऽसौ नखवारम्प्रयत्नतः ।
को वा तस्य गुणन्वक्तुम्भुवि शक्तो हि मानवः ॥ ६९ ॥
हन्ति कुष्ठादिकारोगान्पामादीनां तु का कथा ।

गन्धक और खारी निमक दोनोंको समान भाग लेकर मिलाकर पीसले ॥ ६५ ॥ और मसूरके पानी में डालकर छाया में रखदे और प्रातःकाल उस जल को निकालकर खटाई के रस में खरल करे ॥ ६६ ॥ फिर मसूर के जल में डालकर छाया में रखदे और प्रातःकाल जल निकालकर खटाई के साथ घोंटे, इसी प्रकार सौ वार करे, ऐसे करनेसे गन्धक–दिव्य, श्वेत वर्ण और गन्धरहित होजाता है ॥ ६७ ॥ और फिर इस गन्धक को केलेके रसकी सौ भावना दे तौ वह ऐसा होजाताहै कि उसके संयोग से अग्निभी नही जलती ॥ ६८ ॥ और जो इस गन्धकको सुगन्धा (कुलीजन) के अर्ककी बीस भावना दे तौ फिर पृथ्वीपर कौन मनुष्य उसके गुणों

का वर्णन कर सकता है ॥ ७९ ॥ यह कोढ आदि रोगों को दूर कर देता है फिर खुजली आदि का तो कहनाही क्या ? ॥

अभ्रक मारण ।

यदभ्रकं गजपुटे यत्नतश्च पुटीकृतम् ॥ ७० ॥
सहस्राभ्रन्तदाख्यातं वयसः स्थापनम्परम् ।
त्रिदोषं हरतंकुष्ठमेहप्लीहव्रण कृमीन् ॥ ७१ ॥

जो अभ्रक विधिपूर्वक गजपुटकी आग में सहस्र वार फूंका जाता है वह सहस्राभ्रक कहाता है और आयुको बढाता है तथा त्रिदोष, कुष्ठ, प्रमेह, प्लीहा और व्रण के कीडों का नाश करता है ॥

हरताल शोधन मारण ।

हरितालं द्विधा प्रोक्तम्पत्राख्यम्पिंडसंज्ञकम् ।
तदभावे तु पत्राख्यंतस्य पत्राणिकारयेत् ॥ ७२
यामं यामं तु तन्मर्द्य द्रवेषु नवसु क्रमात् ।
तिलतैले बलाक्वाथे चूर्णतोये कुलत्थजे ॥ ७३ ॥
काञ्जिके कदलीतोये दुग्धे कूष्माण्डज द्रवे ।
अजादुग्धे च तत्तालं संशुद्धं दोषवर्जितम् ॥ ७४ ॥
अशीतिकर्षकञ्चिंचाया ग्राह्यम्पत्रं सुशोधितम् ।
त्रिंशत्कर्षं हण्डिकायां दृढायां तन्निवेशयेत् ॥७५ ॥
आस्तीर्य्य तालपत्राणि कर्षद्वयमितानि च ।
त्रिशत्कर्षम्पुनः पत्र स्थापयेत्तालकोपरि ॥ ७६ ॥
सम्पूज्य भैरवादींश्च हण्डीञ्चुल्ल्या निवेशयेत् ।

यामं यामं क्रमादग्निं कुर्यात्पञ्चयामकम् ॥ ७७
पश्येत्तदैकचित्तस्तु कुत्र धूमोऽस्य गच्छति ।
गच्छन्तं धूममालोक्य भस्मना चावरोधयेत् ॥ ७८ ॥
एवं तु पञ्चभिर्यामैस्तत्तालं तु मृतम्भवेत् ।
तत्रोपरिस्थं युक्त्या च गृह्णीयाद्रविसन्निभम् ॥ ७९ ॥
तस्मिन्भाण्डेतुचूर्णानि पत्राण्यन्यानि निक्षिपेत् ।
पुटं दद्यात्पूर्ववच्च एवञ्चार्क दिनावधि ॥ ८० ॥
तत्तालं जायते दिव्यं सर्वरोगनिकृन्तनम् ।
रक्तिकायाः सप्त मात्रा तालकस्य सुसंमतिः ॥८१॥

हरताल दो प्रकारका होता है एक तो पत्राख्य [तबकिया] और दूसरा पिण्डसंज्ञक अर्थात् गोदन्ती ! जो गोदन्ती हरताल न मिले तो तबकिया हरतालके पत्र अलग २ करके ॥ ७२ ॥ उनको तिलके तेल, बलाके क्वाथ चूनेके पानी, कुलथीके क्वाथ, काजी, केलाके पानी, दूध पेठेके रस और बकरी के दूध इन नौ द्रव्योमें क्रमसे एक २ पहर तक खरल करै, इस प्रकार करनेसे हरताल शुद्ध दोषरहित होजाता है ॥ ७३ ॥७४॥ फिर अस्सी कर्ष इमली की पत्ती लावै और उनमेंसे तीस[1] कर्ष एक दृढ हांडीमें बिछाकर ऊपर दो कर्ष शुद्ध किया हुआ हरताल रखदे, फिर तीस कर्ष इमली की पत्ती उस हरतालपर बिछादे ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ और भैरव आदिका पूजन कर हांडीको चूल्हेपर चढावै और क्रमसे एक २ पहर

१-जो तीस २ कर्ष इमलीके पत्ते हरताल के ऊपर नीचे रक्खे जांय तो बीस कर्ष बचते हैं, इसलिये चालीस २ कर्ष पत्ती ऊपर नीचे रक्खें ।

तक पाच प्रकारकी अग्नि जलावै ॥ ७७ और एकाग्रचित्त होकर हाडीकी ओर देखता रहै और जिधरसे धुआ निकले उधर ही हांडीका मुख राखसे बन्द करद ॥ ७८ ॥ इस प्रकार पाच पहरमें हरताल भस्म हो जाता है तदनन्तर पत्तोंके ऊपर रक्खी हुई उस सूर्याकार हरतालकी टिकियाको सावधानीसे उठाले ॥ ७९ ॥ फिर उस हाडी मेंसे उन पत्तोंको निकालकर और नये पत्रे बिछाकर उस हरतालको रखकर पूर्ववत् पुटदे, इस प्रकार बारह दिनतक करै ॥ ८० ॥ तब वह हरताल दिव्य और सब रोगोंका नाश करनेवाला हो जाता है, इस हरताल भस्मकी एक रत्तीकी मात्रा करै ॥ ८१ ॥

हरताल सेवन विधि।

प्रिये ऽधुनैव वक्ष्येहं तालकस्यानुपानकम् ।
हरिताले तु संसिद्धे हरिणा किम्प्रयोजनम् ॥ ८२ ॥
सर्वरक्तविकारेषु देयमाम्रहरिद्रया ।
अल्पक्ष्वेडाजाजिकाभ्यामपस्मारविनाशनम् ॥
समुद्रफलयोगेन जलोदरविनाशनम् ।
देवदार्वीरसैर्युक्तम्भगन्दरहरं स्मृतम् ॥ ८४ ॥

रावण बोला हे प्रिये ! अब मै हरतालका अनुपान कहता हू, हरतालके सिद्ध होजानेपर हरि भगवानसे क्या प्रयोजन है ॥८२॥ इसे सब प्रकारके रक्तविकारोंमें आंबा हल्दीके साथ सेवन करै या थोडा विष और जीरा इन दोनोंके साथ सेवन करै तौ अपस्मारका नाश हो ॥ ८३ ॥ समुद्रफलके साथ सेवन करनेसे जलोदर दूर होता है और देवदारुके अर्कके साथ सेवन करनेसे भगन्दररोग दूर होता है । ८४ ॥

मनःशिला शोधन ।

पचेत्त्र्यहमजामूत्रे दोलायन्त्रे मनःशिलाम् ।
भावयेत्सप्तधा पित्तैरजायाः सा विशुद्ध्यति ॥ ८५ ॥
घृतयुक्ता व्रणं हन्तिमलञ्च त्रिफलायुता ।
वंशानुपानाद्धरतेकफश्चापिमनःशिला ॥ ८६ ॥

मैनसिलको तीन दिनतक बकरीके मूत्रसे दौलायंत्रमे पकावै (एक हाडीमें बकरीका मूत्र भरै और मैनसिलको एक कपडाकी पोटलीमें बाधे फिर उस पोटलीको हाडीके ढक्कनसे इस प्रकार बाधे कि पोटली मूत्रमें भीगती रहे परन्तु हाडीके नीचे आग जलावै इस क्रियाका नाम दौलायत्र है) फिर उसे बकरीके पित्तेकी सात भावना दे तब मैनसिल शुद्ध होता है ॥ ८५ ॥ घृतके साथ सेवन करनेसे मैनसिल व्रणको दूर करता है, त्रिफलाके साथ सेवन करनेसे मलको दूर करती है और बासके अर्कके साथ सेवन करनेसे कफका नाश करती है ॥ ८६ ॥

खर्पर शोधन प्रकार ।

दोलायन्त्रेण सप्ताहं मूत्रवर्गे रसम्पचेत् ।
तच्छुद्धन्नेत्ररोगाणान्नाशकं त्रिफलायुतम् ॥ ८७ ॥

खपरियाको मूत्रवर्गके साथ दौलायंत्रमें सात दिन तक पचावै तौ वह शुद्ध होजाता है । इस प्रकार शुद्ध किये हुए खपरियाको त्रिफलाके साथ सेवन करै तौ नेत्ररोगोंका नाश करता है ॥ ८७ ॥

उपरसशोधन ।

त्रिक्षारैर्लवणैर्भाव्याअम्लवर्गैस्ततः पचेत् ।

दिनन्तूपरसाः शुद्धा जायन्ते दोषवर्जिताः ॥ ८८ ॥
रसाभावे प्रदातव्यास्तक्ताउपरसा इमे ।
सेविता बहुकालन्ते सर्वतः कुर्वते गुणम् ॥ ८९ ॥

पहिले तीनो खार पाचो नमक इनकी भावना देकर फिर अम्लवर्गके रससें एक दिन दोलायंत्रमें पचावै तौ सब उपरस शुद्ध और दोषरहित होजाते हैं ॥ ८८ ॥ रसके अभावमें उपरसोंका प्रयोग करना चाहिये, बहुतकाल तक सेवन करनेसे ये भी गुणदायक होते है ॥ ८९ ॥

वज्र शोधन ।

हिंगुसैन्धवसंयुक्ते क्षिपेत्क्वाथे कुलत्थजे ।
तप्ततप्तम्पुनर्वज्रम्भवेच्छुद्धं त्रिसप्तधा ॥ ९० ॥
श्रेष्ठं वज्रन्ततो हीन गुणमन्यच्चकीर्तितम् ।
सेवितं सर्वरोगघ्नं वलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ ९१ ॥

हीराको तपा तपा कर हींग और सेंधानमक मिले हुए कुलथी के क्वाथमें इक्कीसवार बुझावै तौ शुद्ध होजाता है इसी प्रकार और रत्नोंकी शुद्धि जानो॥ ९० ॥हीरा सब रत्नोमें उत्तम होताहै, शेष सब रत्न हीरासे गुणोंमे न्यून होते हैं हीरा सब रोगोंका नाश करनेवाला तथा बल और पुष्टिको बढानवाला है ॥ ९१ ॥

विष शोधन ।

गोमूत्रे त्रिदिनं स्थाप्यं विषन्तेन विशुद्धयति ।
रक्तसर्षपतैलाक्ते तथा धार्य्यञ्चवाससि ॥ ९२ ॥

येगुणा गरले प्रोक्तास्तेस्युर्हीनावि शोधनात् ।
तस्माद्विषम्प्रयोगेषु शोधयित्वा प्रयोजयेत् ॥ ९३ ॥

विषको तीन दिनतक गौमूत्रमे भिगौवे फिर लाल सरसोंके तैलसे भिगे हुए कपडेमें तीन दिनतक रक्खे तो विष शुद्ध होजाता है ॥ ९२ ॥ जो गुण विषके कहे हैं, वे शोधनसे हीन होजाते हैं, इसलिये विषको शुद्ध करके प्रयोग करै ॥ ९३ ॥

उपविष शोधन ।

पञ्चगव्येषु शुद्धानि देयान्युपविषाणि च ।
विषाभावे प्रयोज्यानि विषकार्यकराणि च ॥ ९४ ॥

सब उपविषोंको पञ्चगव्य (गायका दूध, दही, घी, मूत्र, और गोवर) मे शुद्ध करके विषोंके स्थानमें प्रयोग करैं तौ वे विषके समान ही गुणदायक होते हैं ॥ ९४ ॥

जमालगोटा के शुद्ध करने की विधि ।

न विषं विषमित्याहुर्जेपालो विषमुच्यते ।
शोधितोऽयं विरेकेषु चमत्कृतिकरः परः ॥ ९५ ॥
पञ्चगव्येषु संशोध्य दूरीकुर्याच्च वल्कलम् ।
ततोऽम्लवर्गे दशधा क्षारवर्गे त्रिधा पुनः ॥ ९६ ॥
कन्याद्रवेचाम्ल भस्म जले चैवं विशोधयेत् ।
एवं शुद्धस्तु जेपालो वान्तिदाहविवर्जितः ॥ ९७ ॥

विषको विष नहीं कहना चाहिये क्योंकि अशुद्ध जमालगोटा ही विष होता है और शोधन किया हुआ यही जमालगोटा विरेचन कार्यमें अति चमत्कार दिखलाता है, ॥ ९५ ॥ जमागोटाको पंचगव्य

में शुद्ध करके उसका छिलका दूर करदे, फिर उसे अम्लवर्गके रसमें दसवार. क्षारवर्गमें तीनवार ॥ ९६ ॥ तथा ग्वारपाठेके और इमली की राखके जलमें एक २ वार शुद्ध करै इस प्रकार शुद्ध किया हुआ जमालगोटा वमन और दाह रहित होजाता है ॥ ९७ ॥

रावण का वचन ।

मन्दोदरि तवाख्यातं यन्मया शिवतः श्रुतम् ।
एतज्ज्ञात्वा वल्लभया त्वया यत्नो विधीयताम् ॥९८॥
एवमुक्त्वा तु भैषज्यरहस्यं स दशाननः ।
सायं सन्ध्याविधिं कर्त्तुमुत्थितो मन्दिरं ययौ ॥९९॥
सुयोग्यन्निजगेहस्य सुखकार्यं कुरु प्रिये ।
अहं सन्ध्याविधानार्थन्त्वथ यामि नदीतटम् ॥१००॥

रावण वोला हे मन्दोदरि ! जो कुछ मैंने शिवजीसे सुना था सो सब तुम्हारे आगे बर्णन किया, हे प्रिये ! तुम इसको समझकर यत्न करो ॥ ९८ ॥ इस प्रकार औषधियोंके रहस्यको कहकर रावण सध्या करनेके लिये महलमें गया ॥९९॥ और मन्दोदरिसे वोला हे प्रिये ! अपने योग्य घरके काम करौ, मै सन्ध्या करने नदीके किनारे जाता हूं ॥ १० ॥

इति श्री रावणविरचतेऽर्कप्रकाशे मथुरानिवासि कृष्णलालकृत भाषाविभूषितं दशमं शतक समाप्तम् ॥ १० ॥ समाप्तश्चायं ग्रन्थः ॥